

-: संपदाक :-



सर्गवासी

पंडित जिया लाल सराफ

3rd May, 1901-17 April 1975





श्री पञ्चस्तवी

तथा

दुर्गासप्तशती का चौथा अध्याय

(श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में
अर्थ सहित)

स्वयत्तः—

जिया लाल सराफ
नया कश्मीर होटल, लाल चोक,
श्रीनगर, कश्मीर।

मिलने का पता:—

भवानी आश्रम
पुखरीबल (हारी पर्वत)
श्रीनगर, कश्मीर ।

○

میلنے کا پتہ :-
بھوانی آشرم
پکھری بال (ہاری پربت)
سہی نگر کشمیر

(شاپیار آرٹ پریس سہی نگر)



शक्ति रहस्य

संसार में किसी भी कार्य में हाथ डालने से पहले शक्ति की आवश्यकता है। जब तक 'शक्ति' जो जीव के अपने ही अन्दर मौजूद है। उस शक्ति को काम में न लावे। किसी काम में सफलता न होती है और न होगी।

जीव को अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। सब पदार्थों में अपनी अपनी शक्ती अपने अन्दर है जीव में शक्ती का भण्डार है। जिस तरह लकड़ी के अन्दर आग छुपी हुई है और लकड़ी को मालूम नहीं कि रुक में आग की शक्ती अन्दर है। जब इसकी शक्ती 'आग' प्रकट होकर बाहर आती है तो पदार्थों को भस्म कर देती है तो लकड़ी अपने असली 'आग' के स्वरूप को प्रकट करती है। इसी तरह जीव के अन्दर शक्ती का भण्डार है और वह शक्ती जीव के अन्दर है। उस को मालूम नहीं कि मैं क्या हूँ। उस शक्ती से

जैसा चाहें अपनी अवस्था को बना सकते हैं।
 हमारे प्राचीन ऋषि, मुन्नी महात्माओं में शक्ति-
 यां और सिद्धियां थीं। वह शक्तियां हममें भी हैं।
 (पुरुषार्थ) पुरुषार्थ करने की जरूरत है। पुरुषार्थ
 का मतलब है, (पुरुष-ऽर्थ) पुरुष का धन। जब
 जीव पुरुषार्थ करें, और दृढ़ रहें तो उस महाशक्ति
 को उजागर कर सकता है। वह महाशक्ति जो जीव
 के अन्दर है। उसको परा शक्ति, ज्ञान शक्ति,
 क्रिया शक्ति, बुद्धि शक्ति, चित्त शक्ति वगैराह
 कहा गया है। इस महान शक्ति को जगदम्बा
 (जगत् माता), जगत् जननी इत्यादि नामों
 से कहा गया है। और इन्हीं नामों से शक्ति
 को पूजन अर्चन किया जाता है। सारा जगत्
 शक्ति से ही बना है और बनाया जाता है।
 तमस आविष्कार जो जगत् में हुए हैं और नए
 नए आविष्कार होते हैं। शक्ति ही उनका मूल
 कारण है। शक्ति के सिवा कुछ नहीं बन सकता।
 भवानी सहस्रनाम में पहले शंकर
 और नन्दीगण का समवाद लिखा है। नन्दीगण

शंकर से पूछता है। महाराज मुझे प्रश्न है।
कृपाकरके मुझे प्रश्न का उत्तर दीजिए।

आप जगत के स्वामी होकर आप आंखें
बन्द करके सदा किस का स्मरण करते हैं और
किस के ध्यान में सदा रहते हैं। क्या आप
से बढकर कोई और ऊपर भी है। जिसका
आप ध्यान करते हैं। तो शंकर उत्तर देता है।
हे नन्दीगण सुनो! यह रहस्य है। तीन गुण
वाली श्री शक्ती नाम की शक्ती मेरे अन्दर
है उसी के बल से मैं इस संसार को पैदा
करता हूँ। पालता हूँ और उसी में लन होता
हूँ। उसी के बल से मैं जगत, पहाड गंदियां
समन्द्र जो भी संसार में देखते हो, बनाता
हूँ। वह सब जगत उसी शक्ती का प्रकाश है।
उसी शक्ति का ध्यान करने से अर्चन करने
से सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं इसी लिए
इसी का सदा स्मरण करता हूँ। हे एक
मनुष्य में यह देवी रूप शक्ती होती है और
इस को जगत् करने की आवश्यकता है।

आपको मालूम होगा कि हम ^{जब} बच्चे थे तो हमारी माता बच्चपन में हमको इसी शक्ती माता के स्वरूप का बीज डालती थी और कश्मीरी भाषा में हमको बार बार कहती रहती :— (कश्मीरी में) — “जेन माज जूनय, अन्नन अन्नान क्यथ तथ जीव, यिस कस गनेयि, राय यस गनेयि, राय क्या द्युतुय खसवुन गुर वसकुन्य नाव, तथ्य क्यथ वंदुस बं तुन कुनुय, तलि बुहुम क्कैट्य मोट्य मामनि हना, तमि द्युतनम ग्यव टूर, सुय लोटम जजीरे, जजीर लंजिम नचने, काव लेगिं बुद्धिने, गोन्ठ लंजिम असुने, सुकुस म्योः कौलु तारुकुय” — अर्थात् माता “जुन” प्रकाश जीतना है। प्रकाश क्या है? अंगे अंग में अर्थात् हर एक चीज में चित्त और जीव जानना है। वह किसको प्राप्त हो। जिसको राव अर्थात् ख्याल की दृढ़ता ने क्या दिया, चढ़ने के लिए चोड़ा और उतरने के लिए किशोरी अर्थात् (प्राणायाम)। उसी किशोरी

से उतर गई। "तू" यानी नहंम (नाभिस्थान) के तरफ वहां मैं ने देखा, कोटी सोटी कुण्डलिनी, उसी ने मुझे "धी" बरतन में, दिया, वह मैंने अन्दर डाला और मुझको सारा जगत अपना ही स्वस्व दिखाई दिया। लोगों ने हंसा, कह कौन मेरा, जो मेरे कुल का तारक होगा माता अपने पुत्र को बचपन से ही उसको यह ख्याल रखी बीज डाल देती थी। कि हे पुत्र तुम्हारा कर्तव्य है। अपने कुल का तारक बनना, यह उपदेश माता सबसे पहले अपने बच्चे को देती थी। ताकि यह बच्चा बड़ा होकर अपने कुल का तारक बनेगा। पञ्चास्तवी के पहले तब मैं दो श्लोकों में इसी का निर्णय किया गया है।

यहां कश्मीर में शक्ति उपासना ही प्रचलित थी जिस समय श्री शंकराचार्य महाराज बुद्धमत को खखुन करते कश्मीर पहुंचे— तो उस वक्त वहां श्री अभिनवगुप्त जी शक्तिमत के आचार्य थे। जब श्री शंकरा-

चार्य जी उनके पास शास्त्रार्थ करने आये।
 श्री शंकराचार्य जी शिव के उपासक थे। शक्ती
 को नहीं मानते थे। श्री अभिनवगुप्त जी ने उन
 को कहा। यह अगस्त शक्ती का विकास है। सब
 में शक्ती है। उस शक्ती का विकास ही
 यह सारा संसार है। पञ्चस्तवी के पहले तब
 के पहले तीन (३) श्लोकों में श्री कुण्डलिनी
 शक्ती का वर्णन किया गया है। साँड़े तीन
 बार लिपटी हुई वह छोटी मोटी कुण्डलिनी
 जिसको जाग्रत हो। तो वह जन्म मरण से
 छूटता है। उसको दूसरा जन्म प्राप्त नहीं हो
 सकता। वह मुक्त हो जाता है।

श्लोक :- संसार कुहरादऽस्मात् निगन्तव्यं स्वयं
 पौषं यतनमाश्रत्य हरिषो वारि मञ्जरात् ।

अर्थ :- येति संसारं दुःखं जिस मंजु होर,
 पनुने बल किन्त्य हि नौरिध
 पुरुषार्थ पनुनि यत्न सत्य, ह्येकान।
 बिथु पाठ्य सुह पंजरु मंजु
 नेराने

श्लोक :- सारेण पुरुषार्थेन स्वेनैव गरुडध्वज,
कश्चित इव पुमानेव पुरुषोत्तमतां गता॥

अर्थ :- पनुने पुरुषार्थ कि जोरु किन्थ,
जीव ति कुय पानु नारायण बनान।
पुरुषण मंज आसान खाल काहं पुरुष,
युस पुरुषोत्तम बानस प्यठ कुवातन॥

अपनी शक्ति के बगैर उपासक को परमात्मा की
प्राप्ति नहीं होती।

श्लोक :-

आपद्वनमऽननतोहा, परिपल्लविता कृतिः।
पुरुषार्थं क्रकच चिह्नं, नैव भूयः परोहिति॥

अर्थ :- आपदा रूपी युस अन्तु रौस जंगल,
फलमति शकलि युस बीजनु विवान।
पुरुषार्थ कि लेन्नि सुत्य चट्थ चट्थ,
वि आपदा जंगल पतु कुनु खसान॥

“अयमात्मा शक्तिहीने लाम्ब्यः”

अर्थ :- शक्तिहीन को परमात्मा प्राप्त नहीं
होता, और जन्म करने से छूट नहीं सकता।

इसलिए शक्ति की उपासना करनी चाहिए।
चित्त शक्ति पूर्ण प्रेम स्वरूप है और सर्व व्यापक
है। चित्त शक्तियों के प्रसन्न होने के लिए स्वाहिंसा,
लोभ, क्रोध और अहंकार रूपी मल को
मल रूपी तलवार से काटकर शक्ति माता
के चरण कमलों पर अर्पण करें। तमाम प्राणि-
यों से प्रेम उत्पन्न करें। अपने स्वरूप का
औरों में देखें और तमाम प्राणियों के स्वरूप
को अपने में देखें। भेद भाव का हमेशा के लिए
छोड़ दें। अपने जैसा औरों को आत्मवत् समझें।

बालक, यौवन, वृद्ध स्त्री, राजा, साधु,
पापी, मूर्ख, विद्वान् बगैरह सब के ऊपर प्रेम
पूर्वक एक नजर से देखें। शुद्ध विचार को
ही निरंतर अन्तःकर्ण में उदय होने दें, अशुद्ध
विचार को पाद मत आने दें। शुद्ध विचार
और शुद्ध-आचरण का पालन करने से शक्ति
माता प्रसन्न होती है। शक्ति माता की ही
प्रसन्न करना है। इसलिए शक्ति माता का
ध्यान करें। उपासना करें। शक्ति ही जीवन है।

शक्ति ही सत्य है। शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही सब कुछ है। शक्ति ही की सर्वत्र आवश्यकता है। शक्तिशाली बनें, मलवान बनें, वीर बनें, निर्भय बनें और स्वतन्त्र बनें।

इस मांस और रक्त रूपी जिह्म में जिसको शरीर कहते हैं। आपके लिए एक रथ है। जिस पर चढ़कर आप कहीं भी पहुंच सकते हो। इस शरीर रूपी रथ को काम में लावें। इस शरीर रूपी रथ के जरिये वैकण्ठ पहुंच सकते हो। कायरता को डकर सजौन बनें। आपके अन्दर शक्ति का भण्डार है, आपके जीवन का उद्देश्य, विशेष जीवन को प्राप्त करने का है।

जियालाल सराफ

(समाप्तम्)

प्रार्थना

मांज भवान्य कृम में बंड चान्य आश
 में ति बीजतम चू जारी ।
 बूस पथर प्योमुत तुलुम थोद ,
 कासतम में लाचारी ।
 पाद्य सेवन करुवावौन्य बं चोन,
 लगय पादन चै पारी ।
 ध्यान दारु चोन हृदयस मंज ज़न,
 बिहिध चू तिलकदारी ।
 वोन्य बं ग्यवु चान्य गोण तुलक्षण,
 काशिरिस मंज सारी ।
 पादुन्य चान्यन बं लागय,
 लोलु पोश चार्य चारी ।
 चानि दर्शनु बापथ में गोम,
 यच्चकाल प्रार्य प्रारी ।
 हावतम मोख कासतम में जन्मु,
 जन्मन हुंज खारी ।
 कोर में पञ्चस्तवी तरजमु,
 काशिरिस मंज जारी ।

یوہ بھوپکار واتی بکھتین،
 مہنتی بنی چانوی یاری ॥

پڑارھنا

ماج بوانی ہم مے بڈاش مے تہ بوزتم تہ زاری
 چھیس پتھر پتھر تلم تلم تھوڈ کاستم مے لاچاری
 پاد سیون کر تا وہ فی بے چون لگے پادن تہ پاری
 دیان وار چون ہر دس مشرزن بہتہ تہ تلک داری
 وہ فی بے گپو چائی گون تہ لکھن کاشس مشرزاری
 پادنے چاہن بے لگے لولہ پوش تہ آری تہ آری

چاہن درشنہ باپتہ مے گوم پتر کال پڑاری تہ آری
 ہاوتم مہک کاستم مے زئمہ زئمہ پتھر خاری
 کور مے پختوی ترجمہ کاشس مشرزاری
 تہ وہ پکار واتہ لکھتین مے تہ
 بے چانوی یاری

ध्यान

सृष्टौ समस्थापनाय तु उपहरण विधौ
 सर्वेषामऽर्गतानाम् निज महिमा वशाद् मोहणे नौ ग्रहीषि,
 नित्यं क्रीडा प्रसक्ता स्वयंति सकल
 स्वात्म शक्त्या प्रपंचसः ।
 सा नः स्त्रानाय भुवाद्ऽभिमत फलदः ।
 भद्रकाली च काली ॥

یوسف پتہ مہا کنی کران ستر شتی تفتی سہار
 یس ودان موہ تمہ نشی پوت کران
 کریمہ روئے سارینے بندش یوسف
 مثرانوس پیچہ جے سائر تھوان
 سوے بدہ کالی کلسیان سورویہ ستوں
 رچیتن اہمہ کا چیمتی کل آسرتن اہمہ دوان
 یوسو پتانی مہیما کینہ کران
 ستر شتی پتہ سہار
 یوسو دیوان موہ تمہ نشی پوت کڈان

क्रमं रोस्तुय सारिनुय वंदिशान योसु
 मुचरावनस प्यठ द्वय साम्रथवान,
 सोय मद्रकाली कल्याण, स्वरूपु सोस
 रक्षितन असि कांक्षमुत्य फल आस्यतन असि
 दिवान ॥



ओं नमः त्रिपुर सौन्दर्य ॥

—: लघुस्तवः :—

ॐ ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती
 मध्ये ललाटं प्रभां,
 शौक्तीं कान्तिमनुष्णा गौरिव
 शिरस्यातन्वती सर्वतः।
 एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः
 सदा हः स्थिता ।
 छिन्द्यान्नः सहस्रपदैस्त्रिभिर्घं
 ज्योतिर्मयी बाङ्गमयी ॥३॥

یُشَدُّ لَزْمُ شَرْعِ کَانَ بِشِ دِفْتِ مُنْزَلِ لَاسِ دِالِی

تڙندڙس پش سفيده ورن دفتي - شيرس سڀڻي لويه چمڪائي
 هرڏي ٿيس سر به سڻدي يا ٿي، چمڪي وڌي دفتي روز آڻي
 سوه ٿي پور سڻدي ساڻس هرڏي سڻدي سڻدي روز آڻي
 سوه جوتي سڻدي سڻدي سڻدي سڻدي سڻدي سڻدي سڻدي
 تڙن پڙن پڻ پڻ پڻ پڻ پڻ پڻ پڻ پڻ پڻ پڻ پڻ پڻ

यन्द्राज सन्ज हिश कमान बख दारबुन्य ही भवानी
 मंज लताटस गहु चै चमकान दिपित चै शबानी।
 सासुबद्य सिरिधि बैधि चन्द्रमु जन चै फोत्यमुत्य चोपारी,
 निमबनस योहय चोन जोति रूप कासि प्रथ
 कांसि खारी ।

योहय ध्यान चोन माता त्रोपराधि हृदयस
 मंज मे रज्जतन ।

युथ बे बनहा परिपूर्ण सथ चित्त आनन्द गण।
 चैटितनम पापन स्यान्वयन कर्धतनम तिकु
 मे जानी ।

सरस्वती हुन्द प्रसाद बन्यतनम, युथ मे
 खुलिहे वाणी ।

या माता त्रपुसी लता तनुल सत्तन्तूस्थिति र्धर्धिनी,
 वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां तन्महे ते वयम्।
 शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बहोद्यमा,
 ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पर्शन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः॥२॥

یوسف زار و جیه تو ریلہ لہجہ منہ سے تار ویش بختہ تھے تھہلاو
 ساڈ تر و آزار زار و ج و لہجہ منہ سے گتہ لہجہ شکستی تھے ناو
 بہر اچھہر من منتر کلا یوسف شکیات چھہ آسانی
 سوئے کلا ز گت پاؤ کر منہ سے بیٹہ آسونی و دیوگی
 امہ کے دیان منہ سے زانہ کر سنا کر سہ سپریش
 گریمہ باؤس شرمی باؤس او کر سہ بیہ منہ سے

युसु जांविजि तोरेलि लंजि हुंजितारि हिहा यथ हु फंल्लान,
 सादत्रवार जांविज बंलिथ यस कुण्डलिनी शक्ती
 बीज अवरस मंज कला योसु ठीकिथ ^{हु नाव} आसानी,
 सोय कला जगथ पादु करुस आसुवुन्य दय
 अमिकुच दान दुस गनुष्य जालि, कर सना ^{बुधगी}
 गर्भ बावस शुर्थ बावस अदुकर बनि बेयि ^{करि सु सपश} अनुष्य॥

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा
 ऐ ऐ इति व्याहृतं ,
 येनाऽऽकृत वशादऽपीह वरदे
 बिन्दुं विनाप्यक्षरम् ।
 तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे,
 वाचः सूक्ति सुधारसद्वसुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजा ॥३॥

ہی دلوئی یو دو کاٹھہ خوفناک چیمز وچیتے جل جل
 کمری اے اے پسند رو سٹے سیدی طلب جل
 پیہ مجرا لیس تہ منتہر بیتہ لیس حون انگریہ
 نیرو آلی لیسید سو کھو لیشہ ترصدہ امرہ تہ کے شہ شریہ

ही दीवी योद काह खोफनाक चीज
 करि ऐ ऐ बिन्दु रोस्तव सपदि
 तस ती हल ।
 यिधि मुजरा तक्षति मन्त्र बनि तस चोन अनुग्रह,
 नेरि वाणी तसुन्दि मो खु निशि इति असत्यतुकुय
 सु श्रेह ॥

यन्नित्ये ! तव कामराजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलं,
तत्सारस्वतमित्येवेति विरलः कश्चिद्व्युधश्चेद्वि।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्य तपसो यतकीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयितां

नीत्योच्चरन्ति स्फुटम् ॥४॥

ہی نہتہ روی دویم منتر حین کامہ راجہ ناوا آبہ ون
سے منتر تیشکل نہتہ کا نہتہ پر حقوی سیٹھ چھ ترانہ ون
سے گو سار سو تہ بینہ اکہر نہتہ تی ہی ریشی چھی پران
دو تم پر ون سیٹھ ترین امیک ویا کھیان چھی کران
وانہ ناوتھ او چھ جاییہ سیٹھ ہی منتر استیجان کران

ही नित्यरूपी दौयुम मन्त्र चोन कामः राज नाव
आखुन।
सुय मन्त्र निष्कल बनिध कांह पृथ्वी प्यठकु जानेदुन,
सुय गव सारसोत बीजु अक्षर सततप ही ऋष
द्वि परान।

वोत्तम परवन प्यठ ब्राह्मण अन्युक व्याख्यान
द्वि करान,
वातुनाविध ओंचि जायि प्यठ यी मन्त्र अश्चारण
करान ॥

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्ट प्रभावं बुधै,
 स्तातीर्थीकमह नमामि मनसा त्वद्बीजमित्नु प्रभम्
 अस्तौर्वोपि सरस्वतीमनुगतो जाड्याम्बु-

विच्छिन्नये ।

गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं

विनासिद्धिदः॥

تثیتمہ بینہ اکھرک ہما وانی کھلش سٹھ گاہی وچان ۶۴
 تھتہ اکھرس تہندہ دفتہ سو ستس جھیس بھ منہ کتی تر نام کران
 سور روپ تھتہ سہ لوگ دار نایہ وشتی ستیدی دوان
 مورکھ روپی پاپیس گالنبہ باپتہ واڈو نامی اگن بنان

त्रेयमि बीज्ज अक्षरक महिमा वाणी खलुनस प्यठ
 दाना बुद्धान,
 तथ अक्षरस चन्द्रुर दिफति सोसतिस कुसवंमनु

किथ प्रणामकरम्

सौरूप वनिध सुयोग दारनायि रोसतुय सेदी

टि.वान,

मूर्ख रूपी पापियस गालनु बापथ वाडव नामी

अगुन बनान ॥

एकैकं तव दवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वास्थितं
व्युत्क्रमात्।

यं यं काममऽपेक्ष्य येनविधिना केनापि वा
चिन्तितम्,
जप्त वा सफलीकरोति सहसा तंतं समस्तं नृणाम्॥
(६)

ہی دہوی لیس پیر چون پیر اچھر یود گئے
دو شہ رؤس یا دو شہ سوس یا ولہ سیدو یا بیون یونے
ییمیمہ کامنا ییر با پتھ لیس منش آسہ زیان
تمش منشس بوئس منر ساری عطلب چکی نیران

ही दीवी युस परि चीन बीजू अक्षुर
यौद कुनुय,
दूषि रौस या दूषि सौस या वुल्टु स्थौद या
व्यौन व्यौनुय।

येमि येमि कामनायि बापथ युस मनुष्य आसि जपान,
तमिस मनुष्यस बदसरस मंज सारी मतलब ह्री
नेरान ॥

वामे पुस्तक धारिणीमऽभयदां साक्षस्त्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरांकपूर कुन्दोज्ज्वलाम्।
उज्जृम्भास्वज पत्रकान्त नयनस्निग्धप्रभालो-
किनी,

ये त्वामऽस्व न शीलयन्ति मनसा तेषां
कवित्वं कुतः॥७॥

कहो रिस अहस मन्त्र ठरै पोस्तक दोर मुत ही भवानी,
दूछिनिस अहस रूपाय बिये सैठो अहो दौआनी
बियाह अहो चोन पियोश रन भूछिन दौआनी
बिहो मन्त्र भूछिन नितो रन रन भूछिन उछेआनी
लिस बिहो आन कर चोन अमिअन लिस प्रसन भवानी
अस काहे सैठो रगस मन्त्र लिस चिहो दौआनी

खोबरिस अथस मजं चै पोस्तक दोर मुत ही भवानी,
दक्षिनिस अथस जपुमाल बैयि सुत्थ अमय दिवानी।
ब्याख अथु चीन पम्पोशि जन बखत्यन वर दिवानी,
पोत्यमुत्थ पम्पोशि नेत्रव जन च बखत्यन बुझानी।
युसयि दान करि चीन अन्मा नन तस प्रसन्न बनानी,
आसि कांह सु यथ जगतस मजं तस छिदाना बनानी।

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीकपटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
 सिञ्चन्तीमऽमृत द्वैरिव शिरो ध्यावन्ति मूर्ध्नि स्थिताम्।
 अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्याति वक्त्राम्बुजा,
 तेषां भारति! भारती सुर सरितकल्लोतलो लोमिवत् ॥
 (८)

یُس سفید پوشِ دلِ پاکِ خوش ترے دُئی دُھانی
 وِرشن کرانِ امریتہ کے ترھٹے تمہ جے یو آئی
 یُس یہ دِیان کر نہ ہانڈس منہر چہ تیں نیرانی
 بے روک پامٹ نہ ہو کہ لشیہ سر سوتی پہنر وانی

युस सफेद पम्पोश डलु पाठ्य
 खोश तै दिफती बुझानी,
 वर्शुन करान अमरुथतुकुय बद्ध
 तमिचे चिवानी ।
 युस यि ध्यान करि ब्रह्माण्डस
 मंज द्वितस नेरानी,
 बे रोक पाठ्य तसुन्दि मोखु निशि
 सरस्वती हुंज वाणी ॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्जपिहितां त्वत्तेजसां द्यामिमा,
 मुर्वी चापि विलीनयावकरस्य प्रस्तारमऽग्न्यामिव।
 पश्यन्ति ह्यगमऽप्यऽनन्यमनसस्तेषामऽनङ्गुडवर,
 कलान्तरस्त्रस्त कुरङ्गः शावकदृशो वक्ष्या भवन्ति स्फुटम्॥
 (६६)

چاہ تہیز کہ نہیں اکھا دھچھ سیتدیر بُری تھے آکاش
 پُر تھوی لاچھ زنگہ فٹم پُر دھچھ آستیس مٹس باس
 نہ دلہ و نر تھینہ ماترس ایس یہ دیان دارا نی
 مارے شکھتی تہ یہ رؤیب بنجہ تمن چھ قولو لوانی
 تہ شکھتی بمن کامہ دلہ تہ سیتدیر بُری تھے آکاش
 تہ پاکھی بیجہ کھوتر مت مہر کہ سچہ کاتہہ چھ زطانی (۹)

चानि तीज्ज किन्त्य युस अखा बुद्धि सेंदरि बयंधुय आकाश,
 पृथ्वी लाद्धि रंगु फंदमुच्च बुद्धि आस्यस मनस बास।
 न उल्लुब्धस्य ह्यग्नः मात्रस युस यि द्यान दारांनी,
 सारुय शखती त्रुयि रूप वनिध तिमन द्विकोबू यितानी।
 तिसु शखती विमन कामदीव तीर सुत्य वन्द करांनी,
 तिधु पावय यिधु खूचमुत मृगु बचि कांह बुय रटांनी॥

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाऽद्भुतधरामाऽद्भुतकाञ्चीसजम्
 येत्वां चेतसि तद्गते ह्यगमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितम्।
 तेषां वेश्मसु विभ्रमादऽहरहः स्फारीभवन्त्यश्चिरं,
 माद्यत्कुञ्जरकर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रिया ॥
 (२०)

चमके वने सोने मोखते कने वाजे मन्त्रे भन्त लागानी
 सोने सुन्तर तागे भन्त ले वी चमके र्कस गन्तानी
 लिस ये द्यान चीन मन्त्र मन्त्र तन्त्र पिटलिस लागानी
 तस रोज शाने शौकत गरस चेर तामथ लहमी
 सो लहमी बोसु मद हेस्य कनुचि हस्केच पावव चञ्चल
 सारेय सम्पायि तस पुरुषस करार करिथ दि रोजानी
 (१०)

चमकुवनि सोनु मोखतु कनुवाजि मद्भुबंद चलागानी,
 सोनु सजं तागुर प्रजलवुन्य करव च कसरस गंडानी।
 युस यि द्यान चीन मजं मनस तथ्य प्यठयुसलगानी,
 तस रोजि शानु शौकत गरस चेर तामथ लहमी।
 सो लहमी बोसु मद हेस्य कनुचि हस्केच पावव चञ्चल
 सारेय सम्पायि तस पुरुषस करार करिथ दि रोजानी।
 आसीनी

आर्भक्ष्याशशि खण्ड मंडित जटाजूटां नृमुण्डस्तजं,
बन्धूक कुसुमारुणाम्बर धरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽपीनतुङ्गस्तनीं,
मध्ये निम्नबलित्रयाङ्किततनुं त्वद्रूप संवित्तये ॥२३॥

शुभे पुनः चाने चट्टे मकटं तालु मन्थे कले माले सौस
नैन्दुक्ते लोभे रङ्गे सौरख लोभे शाकले तले मोरद आसने सौस
कमरस तागुर गन्धिध चोत्तरबोज
चोन सौरूप जानु बापथ यि
॥१॥

शब्दवनि चानि जटु मुकटु नाल्य मनशि
कल, मालु, सौस,
बन्धूकु पोशि रंगु सौरख पोशाकु
तल, मोरदु, आसनु, सौस।
कमरस तागुर गन्धिध चोत्तरबोज
त्रे नैधुर दारांनी,
चोन सौरूप जानु बापथ यि
द्यान बखती छि सौरांनी॥

जातोऽप्यल्प परिच्छेदे क्षितिभुजां

सामान्य मात्रे कुले

निःशेषावनि चक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः॥

यद्विद्याधर वृन्द वन्दित पदा श्री वत्स राजोऽन्ता,

देवि! त्वच्चरणम्बुज प्रणतिजः सोऽयं

प्रसादोदयः ॥ ३२ ॥

काहे राजा मोमूली कोलस मंज आसि जामुत,
कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज
तस चक्रवर्तस पादन दीवता द्वि पूजानी
कु महिमा तस चानि पादि पूजादि हुन्ज
मेहरबानी ॥ (१५)

काह राजा मोमूली कोलस मंज आसि जामुत,

कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज

आल्लन प्रान्तः

तस चक्रवर्तस पादन दीवता द्वि पूजानी

कु महिमा तस चानि पादि पूजादि हुन्ज

मेहरबानी ॥

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजान्नविधौ बिल्वी दलोल्लुङ्घनः
 त्रुट्यत्कण्टक कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः॥
 ते दण्डाडकुशा चक्रचाप कुलेश श्रीवत्स मत्स्याङ्गितै-
 जायन्ते प्रथिवी भुजः कथमिवारुभोज प्रभैः पाणिभिः॥
 «१३»

ہی ژنڈی چانی ژرن پوزایہ سٹھ لیس آتانی
 بیل لیش ژرن لیس کڈر سٹھ لیس چھ ژنڈانی
 ٹونگ تہ تیر کمانہ بھٹھ لیس کڈر خشتہ سٹھ لیس
 تھو آٹھ سٹھ لیس پوزش یئہ ژنڈہ راجہ ہاراجہ پانی
 (۱۲)

ही चण्डी चान्य चरणं पूजायि प्यठ युस अनानी,
 व्यल पोश ब्रदथ ब्रदथ कण्डि सूर्य अथ
 यस वि दुथनानी ।
 टोंग नु तीर कनानि हुन्द्य यस कण्डि स्वशि
 सूर्य वसानी ,
 तिथ्य अथ सोस पोरुष बेयि जन्म राजि
 महाराजि बनानी ॥
 (13)

विप्राः क्षौणिभुजो विशास्तादितरे क्षीराब्ज्य मध्वासवैः
 त्वां देदिः त्रिपरेः परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ ।
 यां यां पार्थयते मनःस्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवम्,
 तां तां सिद्धिं नऽवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृता ॥

(२४)

برہمن راجہ ویش یا شتا دیاتہ
 دودھ گویا، مچھ، شراب، لاڑا یہ کنی ترے
 شر واپہ کنی یہ کیشتھا منگن چھکھ ضرور
 بے رोक پانھو وگنہ روستہ سیدھی سہ پراوانی
 (॥१॥)

ब्रह्मण रजि वैश या शुक्र चानी पूजा करानी,
 दूद, ग्यव, माक, शुराब पूजायि किन्य
 चै अर्पन करानी ।

अदायि किन्य यि केन्हा मंगन दुख
 जौर तिमन दिवानी,
 बे रोक पाठ्य बेगनु रोस्तुय सेदी
 सु प्रावानी ॥

शब्दानां जननी त्वमत्र सुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे,
 त्वतः केशववासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति सफल्
 लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी,
 सा त्वं काचिद्दुःखिन्त्य रूपमहिमा शक्तिः परा-
 गीयसे ॥१५॥

ही माता त्रिवेणी नमः शब्द रूप च आसानी,
 जगत्सु नमः नाव चानुय सरस्वती कीवनी।
 त्रैलोक्ये निशि केशव, यन्द्वाज, दीवता प्रकट बनानी,
 कल्प अन्तस ब्रह्मादिक त्रैलोक्ये लय गहानी।
 कोसतान्य न सोरनी मोहमा सोसतिसधज
 शक्ती कीवनी ॥१५॥

ही माता त्रिवेनी नमः शब्द रूप च आसानी,
 जगत्सु नमः नाव चानुय सरस्वती कीवनी।
 त्रैलोक्ये निशि केशव, यन्द्वाज, दीवता प्रकट बनानी,
 कल्प अन्तस ब्रह्मादिक त्रैलोक्ये लय गहानी।
 कोसतान्य न सोरनी मोहमा सोसतिसधज
 शक्ती कीवनी ॥१५॥

देवानां त्रितयं त्रयी हुंत भुजां शक्ति त्रयं त्रिस्वरा-
 स्यै लो क्यं त्रिपदी त्रिपुष्कर मथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः॥
 यत्किंकञ्जजगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं,
 तत्सर्वं त्रिपुरीति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वता॥

॥१६॥

द्विपुत्रं मन्त्रं त्रयोदशैः, अङ्गं मन्त्रं त्रयोदशैः
 शक्यं मन्त्रं त्रयोदशैः, सुवर्णं मन्त्रं त्रयोदशैः
 वर्णं मन्त्रं त्रयोदशैः, गङ्गा, जमना, सरस्वती त्रयोदशैः
 भू, भुवः, स्वः, गायत्री त्रयोदशैः, सत च्यथ आनन्द च्यथ
 यि केंद्रा नियम त्रिगोण स्वरूप, सोरुय पत्त,
 पत्त, पकान च्यथ ॥१६॥

लक्ष्मीं राज कुले जयां रणभुवि हेमङ्करीम ध्वनि,
 क्रव्यादद्विप संपभाजि शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
 भूत, प्रेत, पिशाच, जम्बुकर्मदे हसृत्वा महाभैरवी,
 व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय
 पत्त्वे ॥२७॥

رازگرں شتر زنجوی، بے ترے مندرن لوی
 ولے و تہ کلیان روپی خوفناک جالورن شتر شکار و شے
 کونین سپہ چکھ تر درگا، پستیاخن بشیر بیروی
 بیم ولے جاین دیان چون سورن، تنن ترے آباد
 کراتی۔

॥१६॥

राजु, गज्जन मन्त्र च, लक्ष्मी, जयचै मंजर रणभूमि
 बुल्ल वनि कल्याण रूपी खोफनाक जानुवरन
 मंज शिकारि चय।
 कोवुन प्यठ इख च दुर्गा, पिशाचन निशि
 भैरवी।

लक्ष्मी भुवु जायन दान चीन स्वरन, तिमन न
 आवदा दूक कर्त

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी,
मातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्कर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमदी माता कुमारी त्वयि ॥
«१८»

माया ठूँ, कुण्डलिनी ठूँ, क्रिया मधुमती ठूँ,
काली ठूँ, कला ठूँ, मालिनी मातङ्गी ठूँ,
विजया ठूँ, जया ठूँ, भगवती ठूँ, देवि शिवा ठूँ,
शक्तिः शङ्कर ठूँ, वल्लभा ठूँ, त्रिनयना ठूँ, वाग्वादिनी ठूँ,
भैरवी ठूँ, ह्रींकारी ठूँ, त्रिपुरा ठूँ, परा ठूँ, परमदी ठूँ,
माता ठूँ, कुमारी ठूँ, त्वयि ठूँ ॥
«१८»

माया चय, कुण्डलिनी चय, क्रिया मधुमती चय,
काली चय, कला चय, मालिनी मातङ्गी चय ।
विजया चय, जया चय, भगवती चय, देवि शिवा चय,
शक्तिः चय, शङ्कर चय, वल्लभा चय, त्रिनयना चय,
वाग्वादिनी चय, भैरवी चय, ह्रींकारी चय,
त्रिपुरा चय, परा चय, परमदी चय, माता चय,
कुमारी चय, त्वयि चय ॥

आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रि क्रमाद्यह्नैः ,
 काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च
 तैस्तेस्वरैः ।

नामानि त्रिपुरे ! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
 तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥
 (१६)

‘अ’ प्यठु सारिनुय अहरन दोयि त्रैयिक्रमु मित्पुनीविध
 ‘क’ प्यठु ‘क्ष’ तान्य शब्द रत्नाविध नाव
 चान्य बनाविध ।
 ही त्रिपराय बृह (२०) सास नाव चान्य रहस्य
 रूप बनानी ३
 ही भैरव पत्नी तिमन रहस्य नावन क
 प्रणाम करानी ॥
 (१७)

बोद्धव्या निपुणं बुधैःस्तुतिरिवंकृत्वा मनस्तद्धृतं,
 भास्वया त्रिपुरेत्यनन्य मनसी यत्राद्यवृत्ते स्फुटम्।
 एक द्वित्रिपदक्रमेण कथितं स्त्वत्पाद संख्याक्षरै-
 मन्त्रोद्धार विधिर्विशेष सहितः सत्संप्रदा -
 यान्वितः॥२०॥

نہایت چھ گاتھیں یہی توڑے کُن مَن لگاؤ وقت ۱
 چاہیں پاؤں پہنڈ شمار کئیو اچھپرو کئیو ملاؤ وقت
 گوڑنیکہ دو گتھ تیر گتھ پندر گتھ سترو دار سناؤ وقت ۲
 پرتہ پھیرا واپر سو س یہی توڑے کُن مَن ٹھیکر آؤ وقت

॥२०॥

ज्ञानमुय द्रुय गादृत्यन यी तव चै कुन मन लगाविथ,
 चान्वन पादन हुन्दि शुमार क्यो अक्षर किन्व
 मिलुनाविथ।

गोडुनिकि दोयिमि त्रैवमि पदु क्रमु मन्त्रोद्धार
 बनाविथ ;

रुति सत्संप्रदायि सोस यी तव ओन मे चै कुन मन
 ठीकराविथ॥
 (२०)

सावद्यं निरवद्यंऽस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया
 नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिरुत्त-
 संचिन्तयापि लघुत्वमात्मानि दृढं सञ्जयायमानं
 त्वद्भक्त्या सुखरी कृतेन रचितं यस्मिन्यापि ध्रुव-
 (२३)

نينا يايه سوس يانينديا يايه روس فكريا ايج تراوت
 ليس ييه مستوتر كاثره منش پير اسيس بکعتي چاني
 پينيس پالش لوجير ز آنته حے ته ورتا پير اوم
 چانه بکعتي بهند زور بکوا سوي بننه ييه تو تابنا اوم
 (۲۱)

नैन्धावि होस वा नैन्धावि होस फिरा अनिच
 वुस वि स्तोत्र काहे मनुष्य परि आस्य भवती
 पनुनिस पानस लोचर जानिथ मे ति दृढता
 चानि भक्ती हुदि जोर वकवांस्य बनिध वि तोला
 वनावस
 (२१)

चर्चास्तवः

—ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै—

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त मातृयं,

मौली हृदेन निहित महिषासुरस्य ।

पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-

मञ्जीर शिञ्जत मनोहरमऽम्बिकाया ॥१॥

पाद चान्य सुन्दर आनन्द दायक यन्द्वाजन त्राव यथ
मोरुतु माल ,
यैमि सत्यजीर दिव्य महिषासुरस्य स्रगु मात्रस मंज
वोत सु पाताल ।
सुय रोनि पाद चोन रुञ्जतन मे हृदयस ,
युथ बं अम्बिकाय बीजु श्रोनि श्रोनि ताल ॥
सुय मनोहर पाद बंन्यतन मे हीतो जैजैकारक मे
होव्यतन कमाल ॥

पाद चान्य सुन्दर आनन्द दायक यन्द्वाजन त्राव यथ

मोरुतु माल ,

यैमि सत्यजीर दिव्य महिषासुरस्य स्रगु मात्रस मंज

वोत सु पाताल ।

सुय रोनि पाद चोन रुञ्जतन मे हृदयस ,

युथ बं अम्बिकाय बीजु श्रोनि श्रोनि ताल ॥

सुय मनोहर पाद बंन्यतन मे हीतो जैजैकारक मे
होव्यतन कमाल ॥

सौन्दर्य विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-

संपत्तिं कल्पं तरुवस्त्रिपुरे ! जयन्ति ।

एते कवित्व कुसुद प्रकारवबोध .

पूर्णैन्दु वरः शिजगज्जननि प्रणामाः ॥२॥

بیم پیر نام سوئد ریگه و ملا سکی جائینتھ شادی شمار کرنه لیوان
تزن اوشن بھدر راج سمیداپه سہنہ کلپہ و رکھ ہوی بیم پیر نام چھان
بیم پیر نام کوتاپہ روئی کمد پوش بھولہ او نہ پانتھ زندہ مہ بھی بنان
ہی زگتہ زنتی دانستے ترے مٹانی پھیر ہوی پیر نام چھس نہ زنیہ
کن کن کران ۱۵

यिस प्रणाम सोन्ध्यै कि विलासुब्ब जाय बंविथ

यद्यपि शुभारंभः यिव

ब्रह्म ब्रह्मन हुन्दि राज संपदायि हुन्दि कल्पवृक्ष

हिन्दु विम प्रथम की

विम प्रणाम कवितायि हृषीकुमदु पोश फौलराव

बापथ चन्द्रमुखी बनान

हीजगथ जननी वातनयने म्यांन्य चित्त हिंन्य प्रणाम

० दुस वं चैव कुन करान ॥

देवि! स्तुतिव्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते,
 वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति ।
 तस्मान्निसर्ग जडिमा कतमोऽहमत्र,
 स्तोत्रम तव त्रिपुरतापन यत्नि! कर्तुम॥३॥

چاڙ تو تا کرس سچو چچو نه سامرته
 برهسپت ته دلوت اجڑ بنانی !
 ہی ترن تاپن گالو فی حقیں مو رکھ به آست
 کته سامرته به کر تو صاحبانی -
 (۳)

चान्य तोता करनस प्यठ कुनु सामर्थ,
 ब्रहस्पत तु दीवता जड बनानी !
 ही त्रन तापन गालुबुध्य कुस मूर्ख
 न आसिध,
 कति सामर्थ न करु तोता चानी ॥०॥
 —(3)

मातः ! तथापि भवतीं भवती व्रताप,
विच्छिन्नयेस्तुति महार्णवकरांधारः ।
स्तोतुं भवानि ! समवच्चरणाबिन्द,
भक्ति ग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥४॥

ہی ماما زائنتہ یہ سمسار کھٹی دوکھ
تڑپنے باپتہ کرم تو تبا یہ چانی
پہلے تو تبا سمسار ساگر س
بہ نہ او میانی بیہ ہائز میانی
چاہے پاؤ کمل کے نو لچہ آو شہ
کو آسے ہیٹو چھٹے تو تا کر آنی
«۴»

ही माता जानिथ यि सप्सार कठिन्य दोख,
व्रतनुबापथ करुम तोतावि चानी ।
यिहय तोता सप्सार सागरस,
बनि नाव म्यान्व बैयि हान्ज म्यानी ॥
चानि पादि कमलु के लोलुचि आविशि,
वकवास्थ ह्युव हुसय तोता करानी ॥

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति,
 जागर्ति तद्व्यवकृते भवती भवति ।
 मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि ,
 लीलावितं जयति चित्रमिदं भवत्याः॥
 (५)

بڑھا روپ زنگتس کران یاد ترے
 ویشو روپ سگتس کران ترے
 روڈ روپ ستمہار آخرس کران ترے
 مہہ دیوان تہ بیہ شہہ تہ گالان ترے
 لیلایہ پچہ چاہہ چھس دھچان زنگہ زنگہ
 جے جے کار آسے تے چاہن لیلایہ (۵)

ब्रह्मा रूप जगतस करान पादु च्यु,
 वैष्णू रूप पालन करान च्यु ।
 रौदर रूप समुहार आखरस करान च्यु,
 मुह दिवान तु बैधि तथ ति गालान च्यु ॥
 लीलायि यिमु चानि वुस बुबान रंग रंग,
 जय जय कार आस्य नय चान्यन लीलायिन्य ॥

वस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुज पत्र गौरि,
 गौरि! प्रसाद मधुरां दृशमादधासि ।
 तस्मिन्निरन्तरमऽनङ्ग शराव कीर्णा ,
 सीमन्तिनी नयन संततयः पतन्ति ॥६॥

ہی گوری پیمپوشہ رنگہ صفا یس
 امرتہ نظر چھکھہ تر متراوانی
 تس پچھہ نیتہ نیمہ ساریے یوگی نیہ
 کامدیو س زن چھہ و ش گترہانی
 (۶)

ही गौरी पम्पौशि रंगु सफा यस,
 अमरुता, नजर बख चू जावानी ।
 तस प्यठ नैति नेमु सारेय युगिनीचि,
 कामदीवस जन छि बश गङ्गानी ॥

पृथ्वी भुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य,
 विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद पीठः।
 यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स एष,
 त्वत्पाद पंकजरजः करणजः प्रसादः॥
 (७)

أدين راجس كهر او سپه گران میطی
 و دیادر ته دلوتس جی آدین
 چکورتی بخود اوس تمی پروومت
 چانه پا د گرد میهند انو گریه ستی
 (۸)

उदयन राजस ख्रावि प्यठ करण मीठ्य,
 विद्याधर तु दीव तस ह्री आदीन।
 चक्रवर्ति ओहदु ओस तम्ब प्रोवमुत,
 चानि पादु गरदि हुन्दि अनुग्रह सत्य॥

(११)

त्वत्पाद पङ्कजजः प्रशिपात पूतै ,
 पुण्यैरऽनलपमऽतिभिः कृतिभिः कविन्दैः ।
 क्षीर क्षपाकरदुकूल हिमाऽवदाता ,
 कैरपिवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्तिः ॥
 « ८ »

ही दली चानि चमोश्च पादन
 क्षीर क्षपाकरदुकूल हिमाऽवदाता
 कैरपिवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्तिः
 « ८ »

ही दीवी चान्यन पस्पेशि पादन ,
 हुंजि गरदि प्यठ कोर चिमव प्रणाम ।
 तिम बनेवि बोत्तम तीज्ज बोज्ज सौस ,
 दाना बोत्तम कवी प्रौव तिमव नाम ॥
 दोद चन्द्ररसु तीशिम वस्त्र बेयि शीनु पाठय ,
 सफा बनिध त्रन बवनन सन्ज्ज बनेवि नेकनाम ॥

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा,
मुद्विपित प्रियतमानदरक्त गीति ।
नित्यं भवानि । भवतीमुपवीणयन्ति,
विद्याधराः कनकशैल गुहागहेषु ॥

॥ ६ ॥

کلبہ و رنگہ پوشو سیتی چانی یوزا
لؤلہ سیتی چیمہ گیوان چانی گہیت
نہیہ سیمہ کے گفار زلی گران منتر
وایان و دیادر سوز تہ ساز کیمہ تی
((۶))

कल्पवृक्ष पेशव सूर्य चान्य पूजा,
लोल सूर्य कि न्यवान चान्य गीत ।
न्यथ समीरके गुफा रूपी गरल नक्त,
वायान विद्यादर सेज त सज
कृत्य ।

(७)

लक्ष्मी वशी करण कर्मणि कामिनीना,
माऽकर्षण व्यति करेषु च सिद्धमन्त्रः॥
नीरन्ध्र मोह तिनिरञ्जिदुर प्रदीपो,
देवि । त्वदऽङ्घ्रि जनिती जयति

प्रसादः ॥

(२०)

چانه ژر نه کماله سپوايه مهند پرستاد
و شکران الخ موی تو بییه سیدین
شکستی سه پراوان مهیه رؤی گینه
انه گنیه گالان ژانگه سستی تزن

(۱۰)

चानि चरण कमल सीवायि हुन्द प्रसाद,
वश करान लक्ष्मी तु बैयि सैदियन।
शक्ती सु प्राबान मुहु रूपी गेनि,
अनिगट गालान चांगि सूत्य जन ॥

ॐ

(१०)

देवि! त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूखाः
 प्रत्यग्र मीलितक रुचोमुद मुद्ग्रहन्ति।
 सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणां,
 सीमन्त सीम्नि कुस्मस्तन कायितं यैः॥
 (११)

عاج بوانی چاين ترش پشدر نه زين
 موخسته و رفتی داران زن کيرن
 یو گنبه بیله پرن پیران ترش نه پشدر
 نه چکه پر زلان سس ته سس نه

(॥)

माज बवान्य चान्यन चरनन हुन्व्य
 नमु रत्न,
 मोरुत् दिप्ती दारान जन किरण।
 यूगिनियि यैलि परन प्यवान चै
 चरनन प्यठ,
 नमु चमकि प्रजलान मस तु सुमुतिमन॥
 (११)

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति दीप्ति
 दीप्तं ,
 मध्ये ललाटमऽमरायुधरश्चित्रम् ।
 हृच्चक्रचुम्बि हुतभुक् कणिकानु-
 रूपम् ,
 ज्योतिर्यदेत दिदमम्ब ! तव स्वरूपम् ॥
 « १२ »

ماثرے مستک ژند زین پیرزلون
 رام رام بیدر پی دوتی چمکوئی
 ہر دلیں مشتراگنی جیوتی سورؤپ زن
 آج چون سورؤپ چھے پرکاش آسون
 « ۱۲ »

माता चै मस्तक चन्दुर ज्ञन प्रजलवुन ,
 राम राम बंदरुन्य दुन्य चमकुवुन्य ।
 हृदयस मंज अग्नी ज्योती सौरूप ज्ञन ,
 मांज चीन सौरूप हुय प्रकाश आसुवुन ॥

सिन्दूर पांसु पटलच्छुरितामिव द्यां ,
 त्वत्तेजसा जतुरम स्नपितामिवोर्वीम् ।
 यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय,
 ब्रीडां मृडानि सुदृशस्तमनु द्रुवन्ति ॥
 «१३»

सैन्दरि गरदि सौस्तुय जौरमुत आकाश,
 लाहि रंगु पृथ्वी श्रान करिथ जन ।
 युस बुद्धि क्षण मात्रस लाज त्राविथ,
 तस सैदी माज बवान्य पतु दोरान ॥
 «१३»

मानः॥ मुहूर्तमपि यः स्मरति स्वरूपं,
लाक्षारस प्रसरतन्तु निभं भवत्वाः ।
ध्यायन्त्यनन्य मनसस्तमनङ्ग तप्ताः,
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः॥
॥ १४ ॥

ہی مائیں مہر تیس دیاں کری
چون سوروپ لاجپہ رنگہ تارِ سمان
سو ندر جوان اثر پڑے نہ ڈلو نہ منہ سنبہ
کامناہ تاؤ مہر تیس چھہ سمان
॥ ۱۴ ॥

ही माता युस महुरतस ध्यान करी,
चोन सौरुष लार्कि रंगु तारि समान ।
सोन्दर जवान अङ्ग रङ्गु न डलवुनि मनुससु
कामनायि तावि मत्तु तस द्वि सुमरान ॥

आधार मारुत निरोध वशेन वेषां,
 सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि ।
 दीप्तं हृदि स्फुरति देवि ! वपुस्त्वदीयं,
 ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या ॥
 « १५ »

मूलादारक प्राण बन्द करिथ यिमन,
 सैन्दरि सूर्य रंगमुत पम्पोश जन ।
 हृदयस मज्ज अथ पम्पोशस प्यठ,
 चीन स्वरूप बासन् राध कथो द्यन ॥
 तिमनय पोरशन हुन्द द्वि ध्यान दारान,
 सैद्य सादु दीवताह तु बैयि सधजन ॥
 « १५ »

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति,
 रूपं त्वांऽम्ब ! नवयावक पङ्क्तिपङ्क्तिम् ।
 तेषां सदैव कुसुमायुध बाणभिन्न -
 वह्नः स्थिता मृगदृष्टो वशगा भवन्ति ॥
 (१६)

भरी ये मन्त्रिके प्रकाशे वोजनि रंग सोस
 लाजि रङ्गे सौस यिम चीन दान दारान +
 कामदीव सुन्दि तीरु वचमचि वक्कि सोस,
 अक्कु रक्कु तिमन मातहत छि रोजान ॥
 (१५)

सिर्वायि मण्डलुकि प्रकाशि वोजनि रंग सोस
 लाजि रंग, सोस यिम चीन दान दारान ।
 कामदीव सुन्दि तीरु वचमचि वक्कि सोस,
 अक्कु रक्कु तिमन मातहत छि रोजान ॥
 ०
 (१६)

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर,
मङ्गलोकते मनसि वागर्धदैवतं यः ।
निस्सीम् सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य,
तस्य प्रसाद मन्धुराः प्रसरन्ति वाचः ॥
((१७))

ایک لہریش منس منر زلدر مہیشو چکھون
سر سوتی رؤیہ چون دیان دارن
حد رؤس وانی مؤدرا امرتہ بری ہتھ
نیر تمین شیر مل پسر واہ ہشوزن

((14))

विम घोशु मनस मजं चन्द्रम् ह्युव चमकुवु,
सरस्वी रूपु चोन द्यान दारन ।
हदु रौस वानी मौदुर अमर्यध बर्यधुय,
नेरि तिमन न्यरमल प्रवाह ह्युव जन ॥

((17))

शर्वाणि ! सर्वजन वन्दित पाद पदमे,
 पद्मच्छद च्छवि विडम्बित नेत्र लक्ष्मिः ।
 निष्पाप मूर्ति जन मानस राज हंसि,
 हंसि त्वमाऽपदमऽनेक विधां जनस्य ॥२८॥

ہی پاپ گالہونی تریے یاد کملن
 ساری زیلو بھی پیر نام کرائی
 پیہوشہ برگر کے دقتی ہندی پاٹھی
 جانی نیتر کمل چھ شوبانی
 شہر منشس چھک تہ پتہ ساگر سنسر
 راز نہیں ہمیش تن تہ روز آنی
 تریے چھک ساد کس ناما پتر کار کی
 وہ کہ تہ داری آپد اور کرائی
 (۱۸)

ही पाप गालवुन्य त्रैय पादिकमलन,
 सारी जीव छी प्रणाम करानी ।
 पम्पोशि बरगुके दिप्ती हुन्द्य पाठ्य,
 चान्य नेत्र कमल छि शूबानी ॥

शोद्ध मनशस कख चयथ सागुरस नजं ,
 राज हन्स हिश जन नु रोजानी ।
 नय कख सादकस नाना प्रकारकय ,
 दोष न दोष आपदा दूर करानी ॥
 (१८)

इच्छानुरूपमनुरूपे गुण-प्रकर्षं,
 संकर्षणि । त्वमनुमृत्य यदा विमर्षि ।
 जायेत स त्रिभुवनैकगुरुस्तदानीं,
 देवः शिवोपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥१९॥

ہی سنکشتی پنے لے یث صای
 یلہ چھکھ ترگوں سوروپ پانہ داران
 تیلہ ی دیوی ترن یونن ہند
 کیول گورؤ شیونامہ چھ وید پان
 اہ سے شو میو ترن یونن ہند
 نو مؤد پائھی سو تر دارب خان

(१९) ही संकरषणी पनुने चहाये ,
 येति कख त्रुगोण स्वरूप पानुदारान।

तेलि ही दीवी त्रन भवनन हुन्द ,
 केवल गोरु शेवनाथ कु वोपदान ।
 अदु सुय शोम्बू त्रन ववनन हुन्द ,
 नोमूद पाठ्य सूत्रदार बनान ॥१९॥



योयं चकास्ति गमनार्णव रत्नमिन्दु—
 योयं सुराऽसुर गुरुः पुरुषः पुराणः ।
 यद्वाममऽर्थमिदमऽन्धक सूदनस्य ,
 देवि ! त्वमेव सदिति प्रतिपादयन्ति ॥२०॥

آکاشہ سؤدرس مٹن رتن یوسہ
 شوبہا ترن درمس چھہ آسانی
 دیون تہ اسرن یس گورؤ چھہ آسہ ونے
 ہکوانس شکھتی یس دوا فی
 یوسہ مہا دیو سنہز چھہ اردانگی سہ
 چھکھ ترے یر چھہ مآج سہد بنانی

आकाश सौंदर्य मंज रत्ननयोसु,
 शूबा चन्द्रमस क्य अनानी ।
 दीवन तु असरन युस गरु कु आसुवनय,
 भगवानस शक्ती योसु दिवानी,
 योसु महादीव सुज्ज द्वि अदी कु नी सोय,
 कख चुय यि कु माज स्थद बनानी ॥

—०—

((20))

ध्याताऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरशिम-
 मालाऽमलद्युतिरऽकल्मष . मानसै-
 तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्प कल्प;
 मऽल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम् ॥

((21))

لیس سوہرہ چیون دیاں نہر مل کر ٹوسوس
 تہ نہر مس سمان اُندہ شود منہ کہی
 ہی سندرہی تس تہ جھٹ پٹ کر ان پاد
 سر سوتی ہند ویکاس آنو گر یہہ کہی

((21))

युस सौरि चोन द्यान न्यरमल किरणव सौस,
चन्दरमस समान अन्दर शोदु मनु किन्या
ही सोन्दरी तस च जह पट करान पादु,
सरस्वती हुन्द व्यकास अनुग्रह किन्या ॥
« 21 »

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति,
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति,
देवि ! स्तुवन्ति विजयेति जयत्युमेति ॥
« 22 »

सारी से و آنتھ تر کامنا دایک
لحمی، کلا، بیہ مالا روپ
دشمنس پہلے ترے سوس ترے لبتا
جی و نان ترے زیا ترے و ما روپ

सौर्यसुय वातिथ च कामना दायक,
लक्ष्मी, कला, वैद्य माला रूप ।
दुश्मनस प्यठ जयि सौस चय ललिता,
ह्री वनान जैय जया जैय वीमा रूप ॥
« 22 »

उद्धाम काम परमार्थ सरोज षण्ड—
 चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट्प्रकाराम्।
 मोह द्विपैतद् कदनौद्यत बोधसिंह—
 लीला गुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥
 « २३ »

یوسف کامراجہ بیجاہر پیمیش ڈل کے
 پھولنے بائیت سیری پر روپ پروانی
 مولادار پیچہ شش کر من مشر
 وہ پانی روپ یوسف تہ آسانی
 یوسف مہر شہی تیس گالنے بائیت
 گیانہ روپ یوسف گوچر چہ پروانی
 تھی سے بھگوئی مانتا تروہ برابیر کن
 گلی گنہ تہ تیس چھپیں پر نام کر آئی

« ۲۴ » یوسف کامراجی بیجاہر پیمیش ڈل کے،
 فلولن باپتھ سیدھیہی رنہ روجانی

मलाधार प्यठ षठ चंकरस मन्ज,
 वीपासी रूप युस तति आसानी ।
 योसु मुहु हस्यतिस गालुनु बापथ,
 ज्ञान रूप सुहु गोफि द्वि रोजानी ॥
 तस्यसुय भगवती माता ज्ञोपरायि कुन,
 गुत्य गेन्डिथ तस कुस प्रणाम करानी ॥

— — —

॥२३॥

गणेश बहुस्तुतारति सहाय कामान्विता,
 स्मरारिवर विष्टरा कुसुम बाण बाणैर्युता ।
 अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः,
 कदम्बवन मध्यगा त्रिपुर सुन्दरी पातुनः ॥

॥२४॥

گنیش تہ بیرون چھے تو تارے کرمہتر
 رنی سان کا دیو تے سپوا کروں
 شوناختہ پانہ چھے آسن چوئے
 کا دیو پوشہ تانن سہ دارون
 آننگہ کو تسمو بیہ تر ییو سید یو تہ و جہتر
 کرمیہ جلگلس مشرتہ روزانی

میں نے آپ کو جان بوجھ ہی تر لیا سو نہری
 کا ان کے لئے تسمیہ تیرا چھ عیبانی

«۲۳»

गणेश तु बैरुवन छय तोता चैकरमुन्न,
 रंती सान कामदीव चैसीवा करवुन ।
 शिवनाथ पानु छुय आसन चोनुय,
 कामदीव पोथि बानन सु दारवुन ॥
 अनङ्ग कोसमव बैथि त्रैयव सैदियव च
 वजिसुच

कदम्ब, जंगलस मज्ज च रेजा नी ॥
 सुयरूप चोन माज ही त्रैपूर सोन्दरी,
 कल्याण में कैयतनम तु राक्षस्यानी ॥

«24»

त्वामैन्दवीमिव कला मनु भाल देश,
 गुप्तासिताम्बर तलामऽवलोकयन्तः ।
 सद्यो भवानि ! सद्यः कवयो भवन्ति,
 त्वामभावनहितधियां कुल कामधेनुः ॥

«25»

یم مسکنس مشر ترے ٹڈرہ کلاش
 وچہ چرگا وی متی اکا شس سوس
 ہی رپوی جلدے چھی تم بنان دانا
 بیہ بڈ کو پتا یہ سوس
 چکے تھن دیوان ترے سارے مطلبین
 چانہ باونایہ کنی تم نہر مل بوڑ سوس
 «۲۵»

विम मस्तकस मजं चै चन्द्रमु कला हिश,
 बुद्ध चमकाव्य मृत्य आकाशि सौस ।
 हो दोवी जलदय ही तिम बनान दावा,
 बेयि बडि कवितायि सौस्य ।
 छख तिमन दिवान नुय सारिनुय
 मतलबन,
 चानि बावुनायि किन्य तिम
 न्यर्मल दोलसौस

उत्तमहेमरुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि ,
 चेतश्चिरन्तनमऽद्यौघ वनं लुनीहि ।
 कारगृहे निगड बन्धन पीडितस्य,
 त्वत्संस्मृतौ भटिति मे निगडास्त्रटयन्ति ॥
 (३६)

तुम मृत सों ज़न त्रिपुरे चमकान त्रिपुराय
 शोध कर मन में पाप खिल म्हाय्य लोन ।
 सम्सार रूपी जेलस मजं कुस बं ,
 कामनायि बैड्यन हुन्द कुम में बोर ।
 चानि सुमरनि किन्व जलुद जलुद कथन में
 येलि आसि आरतिस में अनुग्रह चीन ॥३६॥

तो वसुत सोन ज़न त्रिपुरे चमकान त्रिपुराय,
 शोध कर मन में पाप खिल म्हाय्य लोन ।
 सम्सार रूपी जेलस मजं कुस बं ,
 कामनायि बैड्यन हुन्द कुम में बोर ।
 चानि सुमरनि किन्व जलुद जलुद कथन में
 येलि आसि आरतिस में अनुग्रह चीन ॥३६॥

रुद्राणि ! विदुम मयीं प्रतिमाविव त्वां ,
 ये चिन्तयन्त्यऽरुणकान्तिमऽनन्य रूपाम ।
 तानेत्य पक्षमलदृशः प्रसभंभजन्ते ,
 कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः ॥

« २७ »

ہی رو در آنی نیس چانیس سورو نیس و جیہ
 رو در پشتکلمہ سری بہ سندی پاکھی جیکان
 آپور رو رو نیس بیٹھی ہے دیان کر ۶ ۶ ۶
 سوند نظر و سوس اڑھ زڑھ جوان
 زوہ سستی تمہ گردنہ پیٹھ آتھ تر آدی تر آدی
 انڈا ندی رو زہتھ تس سپو کران

« ۲۷ »

ही रोदरांनी घुस चानिस सोरूपस बुद्धि ,
 रोदरु शकलि सिर्घियि सुन्ध पाठ्य चमकान ,
 अपूरवु रूपस यिश्य सुय ध्यान करि ,
 सोन्दरु नजरव सोस अक्खु रक्खु जवान ।
 जोरु सत्य तमि गर्दिनि प्यठअथ त्रान्यत्रान्य ,
 अन्ध अन्ध रुज्जिथ तस सीवा करान ॥

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पुष्परक्त,
 मुद्रावयेन्मदन दैवतक्षरं यः ।
 तं रूपहीनमऽपि मन्मथ निविशेष
 माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः ॥
 (२८)

یُس چون دِیان کر دآن پوشه رنگه سوس
 اونا سته کامراجه بینرا کهر سوس
 یودوے روپه کنی آسه سے بد شکل
 اتره رتره وچین زن کامدپوش

॥२८॥

युस चोन द्यान करि दान पोशिरंगु सोस,
 अविनाशि कामराजि बीजु अक्षरस ।
 योदवय रूप किन्त्य ओसि सुय
 बदशकुल,
 अह्नु रह्नु बुक्कन जन कामदीव तस ॥
 (२८)

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धोदृशो-
 स्त्वद्गुणः
 ग्रामाऽकर्णानरागिताश्रवणयो स्त्वत्कृतमृति
 श्चेतसि।
 त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं
 वाचि मे,
 कुत्राऽपि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि
 सा प्राम्यतु॥
 (२६)

ہی دلپوی چاہہ در شنگ ابلاش
 ہر دم نیتز نے منہ سے روزی تن
 چاہی گون بوزنگ تمناہ سے آسوتن
 ہر دم روزی تن میں امن کسے
 نامہ سمن ترہیں منہ سے گر کہہ
 چاہی یاد بوزامہ
 چوین کہرتن کردنی روزی تن سے وای
 وہ پاسنا چاہی گم متہ سے گزرتن (۲۹)

ही दीवी चानि दर्शनुक अबिलाश,
 हरदम नैत्रनुय मंज मे खल्लयतन ।
 चान्य गोण बोजनुक तमना मे आखतन,
 हरदम खल्लयतन म्यान्यन कनन ॥
 चोन नामु सुमरन ज्यतस मंज गरि गरि,
 चान्य पादि पूजा म्यान्यन अधन ॥
 चोन कीर्तन करुवुन्य खल्लयतन मे वानी,
 वोपासना चान्य कम मतु मे गंखयतन ॥॥
 —०— (29)

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्रत्र रश्मि ,
 स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै ।
 वागीश्वरी ! त्रिभुनेश्वरि ! विश्वमात-
 रऽन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥३०॥

سرسوتي त्रिपुर सुन्दर زکاتہ ماتا
 بھوتی شوری جھکھ آسوتی ترے
 برہما شندر رڈر سربہ ترند رہہ گمار
 ویشنو گیش جھے پوزان ترے
 اندر تیرہ واکتہ ترند بولس ساری ہے
 سکھ گنہ تہہ میون پرنام والے ترے
 (۳۰)

सरस्वती त्रुपूर सोन्दरी जगद्य माता,
 बवनेश्वरी क्ख आसुवुन्य च्चुय ।
 ब्रह्मा रौंदुर यन्दुर सिधियि च्चन्दरमुकुमार,
 वेणो गणेश क्खुय पूजान च्चैय ॥
 अन्दरु नेवरु वातिथ त्रौबवनस सायंसुय,
 गुत्य गण्डिध म्थोन प्रणाम वातिनय च्चैय ॥
 ॥०३॥

॥३०॥

यः स्तोत्रमेतदनुवासरमीश्वरा याः,
 श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
 तस्यैषितं फलति राजभिरीड्यतेऽसी,
 जायते स प्रियतमो हरिणेक्षयानान् ॥ ३१ ॥

تس يه چون ستوتري تريرت دونه لولسان
 ياكنو لوزاد بنه اتس كلان
 حكرورت راجه تس كرسن لوزا
 ساري مطلب تس چه تيران
 منجه كامنا سيد تس چه سيدان
 مے چه لوكهين مندر ياد لوطه بنان
 (۳۱)

युस वि चीन स्तोत्र परि प्रथ दोह लोलु सान,
 या कनव बोझि अदु बनि तस कल्यान ।
 चक्रव्रत राजि तस करन पूजा ,
 सांरी मतलब तस छि नेरान ॥
 मनुच कामना स्यद तस छि सपदान,
 सुय कु यूगिनियन हुन्द जयादु दोठबनान ॥
 (२१)



ॐ नमो महानाथायै
 (अथ घटस्तवः) [तीसरा स्तव]

देवि ! त्र्यम्बक पत्नि पार्वती सति
 त्रैलोक्य मातः शिवे !
 शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे
 रुद्राणि कात्यायनि !
 भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कलेः कालक्षये शूलिनि !
 स्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पा-
 हिनः ॥ २॥

ہی دیوی چھکھ تر تر مسکے پتی
 ترے ونان سستی ترے بارو تی ۛ
 ترے لیو کی ہنر ماما کھ گوتی
 ترے ور دیوان ترے چھکھ مہر دانی
 ترے تر پور سوہ ندری ترے رو دیانی
 ترے بھیا نک روپ ترے شروری
 ترے چنڈی ترے تر شول دارانی
 ترے مکھ کالس ناش کرانی ۛ
 آے شرن تر پادن دینے کو چھ تو تھے
 ویا کٹنا یہ مشنرا بہ رچھ ترے

ہی دیوی کھخ تر تر مسکے پتی ،
 ترے ونان سستی ترے بارو تی ।
 ترے لیو کی ہنر ماما کھ گوتی ،
 ترے ور دیوان ترے چھکھ مہر دانی ।
 ترے تر پور سوہ ندری ترے رو دیانی ،
 ترے بھیا نک روپ ترے شروری ।
 ترے چنڈی ترے تر شول دارانی ،
 ترے مکھ کالس ناش کرانی ۛ
 آے شرن تر پادن دینے کو چھ تو تھے
 ویا کٹنا یہ مشنرا بہ رچھ ترے

आय शरण नै पादन व्यनुकिन्य नै केवथुय,
व्याकोलतायि मन्जु अहिरु ॥ १॥

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषण्यासक मूढा इव,
प्राप्त प्रौढमदा इवाऽतिविरह ग्रस्ता इवाऽतीव।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्योक्तोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभूवः॥२॥

منتر راہ پہ تراہے سوس زہر کنی مور جیتھ نشہ سوس
وہ سن تر ڈی مٹی چاہے آرتہ نہ سوس
ہی ہمالہ پتیری یم کرن چون دیان
تم آسہ و فی جھ سٹھا بگیتہ وان
آرتھ رتھہ اپکار بھنتھ او پاد رتھس
راگہ سوس لٹھدے دیان جھ داران۔ «آس شرن»

मचुराह तु प्राहु सौंस जहरु किन्य मूर्च्छित नशि सौंस,
 विरुहन चट्यमुत्य चानि आरुचर, सौंस ।
 ही हिमान् पुत्री यिम करन चीन दयान,
 तिम आसुवन्य द्वि स्यठा भाग्यवान् ।
 अक्षुरक्षु एकाग्र बनिथ उपाधि सौंस ,
 रागु सौंस तसुन्दुय द्यान द्वि दारान् ॥ (अगस्त्य
 शरण)

देवित्वां सकृदेव यः प्रणमति ह्योणीभूत स्तं नम-
न्त्याऽजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठ विलुठत्कोटीर-
कोटिच्छटाः॥

यस्तवामऽयति शोच्यते सुरगुणैः यः स्तौति
न स्तूयते,

यस्त्वां ध्यायति तं स्मरति विधुरो दया-
यन्ति सिद्धाङ्गनाः॥३॥

لیس پوریش اکہ لٹہ کر تے کن پرنام
تسٹنر کھراو سپٹہ راز ملکٹہ دلوان
لیس پوریش لولہ کنی کر جانی پوزا
تسٹس پوریشس پوزان دیو کھل
لیس پوریش کران اسہ جانی توتیا
دیوتیا تسٹنرے استوتی کران
لیس پوریش منہ کنی کر چوئے دیان
سور گچہ اترہ رترہ تس چ پوزان (۳)

युस पोरिश अकि लटि करि तै कुन प्रणाम,
तसुजि खावि प्यठ राज, मुकद दुलवान ।

युस पोरुष لولہ سنان کرि چانہ پورا،
 تہس پورہس پورہن دیو خیل۔
 یوس پورہس کران آہی چانی توتا،
 دیوتا تہس نچہ اہستوتی کران۔
 یوس پورہس منہ کینہ کرि چونہ دھیان،
 ہورہی اہہ رہہ تہس کھ یومران ॥ ۳ ॥
 —o— (آیہ شری)

ध्यायन्ति ये ह्यणमऽपि त्रिपुरे ! हृदि त्वां,
 लावण्य यौवन धनैरऽपि विप्रयुक्ताः ।
 ते विस्फुरन्ति ललितायत लोचनानां
 चित्तैकमिति लिखित प्रतिमाः पुमांसः ॥ ४ ॥

ہی تر پور سوئدری لیس کر دیان چون
 منہ منہ اکی ہے کھینہ ماترس
 یو دوے شہ آسی سوئدر تاپہ روس
 بیہ جو آئی روس بیہ نہر دن
 اہہ سیدی لیس ہے لبہ پیٹھ
 شکہ کھن تشہ دے دیان سورن
 (دے شری) (۴)

ही त्रेपोरु सोन्दरी युस करि दान चोन,
 मज्ज मनस अकिसुय क्षणमात्रस ।
 वोदवय सु आसी सोन्दरतायि रौस,
 बैयि जवानी रौस बैयि न्यरधन ।
 अष्टु सेंदी तस मनुचे लबि प्यठ,
 शकल खनन सुय दान सोरन ॥ ४ ॥
 —०— (आस शरण०)

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्वाङ्ग-
 मङ्ग-गौर्निजैः ,
 किं वाऽमुं निगलाम्यऽनेन सहसा किं
 वैकतामाऽश्रये !
 तस्येत्थं विवशो विकल्पघटना कूतेन योषिञ्जनः
 किं तद्यन्न करोति देवि ! हृदये यस्य त्वमाऽऽवर्तसे ॥
 « ५ »

بے شکس کور شمس کر لہ بر ویش نظری ستر
 از عتہ امی ستمین و ستختانت
 کیا سنا نہی حلقہ گزہ نا افس ستر
 کنہ کنی یا شمس ستر رتہ ہن
 ازہ رتہ سو ندر گر گزہ کن

بے روک یا تمھو آدین سیدن
 سنارس منز کیاہ چھ دوہ لب تس
 ہر دیس منز تس تر پانہ پھیان

«۵» यिधिस पोरुषस करहा प्रवेश नजरी सत्य,
 अचुहा अम्यसुन्धन वुस्तुखानन ।
 क्या सना न्यन्गुलिथ गकुना अमिस सत्य,
 कुनिकिन्य पानस सत्य रदहन ॥
 अक्क रक्क सोन्दर गरि गरि तस कुन,
 बे रोक पाठ्य आदीन सपदन ॥
 संसारस मजं बबा कु दोलब तस,
 हृदयस मजं यस च पानु फेसन ॥ (५)
 —०— (आयि शरण)

विश्व व्यापिनि ! युद्धवीश्वर इति स्थाणावऽनन्या-
 शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि ! त्वद्येव तस्थु-
 इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमा सुद्रारुजा बाधितुः
 त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं
 महत् ॥ ६ ॥

بی زگتہ ویاپنی یتھ شیوناقس
 ایشترنا و زگتس منز و نان

تَتَقَه پَاطھی مَاج بُو آئی تَرے زَکُتِ مَنز
 شَکِستی مُتَد ناوِ چَٹے تَرے شَوَابان
 یُودوے ایشِر بَکھتین سَمسارِ سَمَنز
 مَاج کُنہ کُنہ دَکھ چَٹے دیوان
 آشَر چَٹے مَاج چُون کَرُو دَس سَٹھ تہ چَکھنہ
 پَنہ پَنہ بَکھتین دَکھ تَرے ماوان
 «آشَر» «آشَر»

ही जगद व्यापिनी युथ शेवु नाथस,
 ईशरु नाव जगतस मन्ज बनान ।
 तिथय पाठय माज बवान्य त्रुय जगतस मंज,
 शक्ती हुन्द नाव कुय त्रै शूबान ॥
 चौदवय ईशरु बखत्यन सम्सारस मंज,
 माज कुनि कुनि दोख कु दीवान ॥
 आश्चर कु माज चीन क्रुदस प्यठ ति कुखनु,
 पनुन्य बखत्यन दोख त्रु हावान ॥ 6 ॥

—०— (आयशरण०) —

इ-दोर्मध्यमतां मृगाङ्गः सदृशच्छायां मनोहारिणीं
 पाण्डुफुल्लसरोरुहासन गतां स्निग्ध प्रदीपच्छविम् ।
 वर्षन्तीमऽमृतं भवानि ! भवतीं दद्यायन्ति ये देहि-

स्तेनिर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झति तान्दुस्तः

ترندرمس هیش صفا ترندرمه گه سوس
 پھولی هیش پمپوشس سیٹھ ترے
 خوش یونہ پر کاشہ گہ سوس تر آسونی
 یو سہ کران ورشن امریتہ کے
 یم یہ دیان کران تم بہار روس روزان
 آپدا چھ تینہ دور سیدان (۷۷)
 (آئے شرین)

चन्द्रमस हि श सफा चन्द्रमः गह सोस,
 फौल्यमुतिस पम्पोशस प्यठ चय ॥
 खोश यिवनि प्रकाशि गह सोस च आसुवुय
 योसु करान वरशुन अमर्यतुकुय ॥
 यिम यि द्यान करान तिम व्यमारि रोस
 आपदा कि तिमनुय दूर सपदान ॥ (७७) (आव जय)
 पूर्योन्दोः शकलै रिवान्ति वैहलैः पीयूषपूरैरिव,
 ह्रीराब्धे र्लहरी भैरैरिव सुधा पङ्कस्य पिण्डैः ॥
 प्रालेयैरिव निर्मितं वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया,
 चित्तान्तर्निहितार्तितापविपदस्ते न्यपदं विभ्रमैः ॥

پسیم ترند ز من امر پتر پڑواہ زن
 گچھ سینہ کھپر سو درج لہر زن
 شہنس ہنوی صفا چون سو روپ بناو تھ
 لیس کردیان تنہ منہ لولہ کنی
 تس چہ دور گڑھان دو گھ آر تررتہ آید
 سہمیداسہ پڑاوان ز نمہ ز من
 «آئے شرن» (۸)

पुनिम चन्द्रमुज्जन अमरुत्तु प्रवाह जन,
 गक पिण्डु ह्रीरु सोदरुच लेहर जन ।
 शनस ह्यन सफा चोन सोरुप बनाविध,
 युस करि द्यान तनु मनु लोलु किन्त्य ॥
 तस छिदूर गङ्गान दोख आरुचरतु आपदा,
 सम्पदा सु प्रावान जन्मु जन्मन ॥४॥

ये तं भरन्ति तरलां सहस्रो बहन्तीं,
 त्वां प्रान्धि पञ्चकभिदं तरुणार्क शोणाम् ।
 रागाग्निं बहुलरागिणि मञ्जयन्ति,
 कुरुतं जगदुपति चेतसि तान्मृगाक्षयः ॥६॥

یس سادک کر دیان چون باسه وں
 زنی نزل تر کاشنه سوس بجلی میان
 پانتره دل تر دلی تھے بال ستری یہ سندی پاکو
 ووزله رنگ سوسنے زن تر چمکان
 رنگ سوسدرس منتر کھوکت سورے
 رنگتہ زن رنگتہ کنی سوسرخی سان
 یس یہ دیان کر تیس یو گنتی ترہ تیس منتر
 تہندے گر کر دیان چھہ داران - (۹)
 (آئے شرن)

یس سادک کر دیان چون باسہ وں،
 جھلک اکاشی سوس بیجلی میان !
 پاؤں دلت چٹھہ دھو بآل سیدھی سندھ پاٹھ،
 بوجھتی رنگ سوس تھو جنن چمکان ॥
 رنگ سوسدرس منتر کھوکت سورے،
 رنگتہ زن رنگتہ کنی سوسرخی سان !
 یس یہ دیان کر تیس یو گنتی ترہ تیس منتر،
 تہندے گر کر دیان چھہ داران ॥ ۹ ॥
 — ۰ — (آئے شرن)

लाक्षासस्नापित पङ्कजतन्ततन्वी,
मऽन्तःस्मृत्यऽनदिनं भवतीं भवानी ।
यस्तं स्मर प्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा,
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥ १० ॥

لاچھ سستی رنگی متہ پیموشہ تارہ ہو
پرختہ دتہ ہے یس داری جوئے دتیاں
تس کا دل یوزر اہنتہ کہہ یو گنتی
نیشتر رو پیہ یوشو چہ یوزا کران - (۱)
(آئے شران)

लाक्षि सत्य रंग्यमुति पम्पोशि तारि ह्युव,
प्रथ दोह युस दारि चोनुय द्यान ।
तस कामुदीव जांनिथ कम युगिनी,
नेत्रुरुपु पोशव दि पूजा करान ॥ १० ॥

—०—

(आय शरण)

स्तुमस्त्वां वाच्यमऽव्यक्तां,
हिमकुन्देन्दुरोचिषम ।
कदम्ब माला विभ्राणा—
साऽऽपादतललम्बिनीम् ॥ ११ ॥

تو تا کران بھی اسی تھے وا کھدیوی
 تڑندہ رمنس کوئی پویششیں پویشہ چھے
 شو بہ وونی کد مپہ مال تاج چکھ تڑدار پونی
 نالی چھے تڑے شیر سیٹھ یادن تانخی
 (آئے سترن)

تو تا کران بھی اسی تھے وا کھدیوی،
 کد رمنس کوئی پویششیں پویشہ چھے
 شو بہ وونی کد مپہ مال تاج چکھ تڑدار پونی
 نالی چھے تڑے شیر سیٹھ یادن تانخی
 —o— (آج شرن)

مू॥ नी॥ नंदोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डु-
 वर्षन्तीमऽमृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपिरिन्द्रेऽपि च।
 अचिक्कनाच मनोहरा चललिता चाऽपि प्रसन्नाऽपि-
 त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वावसर्वतो वल्लगतिः॥
 (१२२)

گلے سیٹھ شو بہ وونی تڑندہ رمنس تڑے درامت
 پمپوششیں سیٹھ تڑ رفتی سوتس

ہر جگہ تہ شوبہ و فی شرمہ رندس منتر
 امرتھ ترعتان بد شوبایہ سوس
 یس یہ دیان کر چون ہی دیوی تس
 سرسوتی نیرمکھ بد ویکاسہ سوس (۱۲)
 (آئے شرن)

कलस प्यठ चन्द्रमु शूबुवन चै द्रामुत,
 पन्पोशस प्यठ च दियती सौस ।
 बिहिथ दरु च शूबुवन्यब्रह्म रोन्दरस मंज
 अमर्यथ छटान बडि शूबायि सौस ॥
 वुस वि द्यान करि चोने ही दीवी तस,
 सररवती नेरि मोखु बडि व्यकासु सौस
 — (आय शरण) ॥ १२ ॥

ददातीष्टानभोगान्द्वयति रिपून्हन्ति विपद
 दहत्वाधीन व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते
 हटादऽन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीरुविरहं
 सकृदध्याता देवी किमिव निरवद्यं न करुते ॥ १३ ॥
 مطلب جگہ دیوان دشمنین تر گالان
 آیتانین جگہ تر تاش کران

آدین زالان ویا دین شو مراوان
 سو که تہ ستمدا چھکھ تہ ولسناران ۶
 اندر می دھکھ تہ وادی پریہ ویرہ تہ گالان
 یم اکہ لٹہ مآج دینان چون کران
 تم ادکمه نیاپہ کشره چھی موکلان
 یم اکہ لٹہ مآج دینان چون کران - ۳
 (آء شرن)

मतलब छख दिवान दुश्मनन च्चु गालान,
 आपदायन छख च्चु नाश करान ।
 आदियन जालान व्यादियन शोमुरावान,
 सोख तु सम्पदा छख च्चु व्यस्तारान ।
 अन्दरिम्ह दोख तु दांघ प्रेयि विरु च्चु गालान,
 यिम अकिलटि माज द्यान चीन करान ।
 तिम अदु कमि नु पापु निशि छी मोक्कलान,
 दिम अकिलटि माज द्यान चीन करान ॥
 —०— (आवशरण) ॥३॥

यस्त्वां ध्यायति वेति विन्दति जपत्यलोकोत्ते
 त्येत्वेति अतिपद्यते कलयति स्तौत्या प्रयत्यवेति ।

यश्च व्यस्कवल्लभेः तव गणानाऽकपीयत्यादाग-
तरस्य श्रीमं गृहादपैति विजयस्तथाग्रतो-
धावति ॥३४॥

لیس چون کر سمن بوز سستی لیس زانہ
ویدیا یہ کنی ماچ لیس ترے پیراوی
شہ و منہ کنی زبہ ناو چون گر گر
لولہ نہترو سستی کسر دشتی
فتر مینہ کنی منہ کنی لیس و پزارہ
ہر وقتہ تو تاپہ کر چائی تپہ لوزا *
گون گیو چائی لولہ سان دین تہ راختہ
نیمہ رو سستی لیس نہ روزہ اکھ ساختہ
نیمہ چھ نہ تشدہ گر لیشہ نیران
نہے تنس پڑختہ وقتہ برفہ نہہ دوران
[[آئے نثران]] (۱۱۹)

युस चोन करि समरन बौज सत्य युस जानि,
विद्यापि किन्थ माज युस चै प्रावी ।
शोदि मन किन्थ जपि नाव चोन गरि गरि,
लोल नेत्रव सत्य करि दर्शुन ।
श्रवण किन्थ मननु किन्थ युस व्यचारि ,

हर वक्तु तोतायि चान्य बैयि पूजा ।
 गोण गैवि चानी लीलु सान द्यन तु राथ ।
 तसि रोस्तुय दुस न रोजि अख साध ।
 लक्ष्मी कुनु तसुन्दि गरि निशिनेरान,
 जय तस प्रथ वक्तु ब्रौन्ह कु दोरान ॥५॥
 ————— (अध्याशरण)

किं किं देखं दनजबलिनि! क्षीयते न स्मृतायां,
 का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्यायते न स्मृता-
 का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यति न चित्तायां याम् ।
 कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ॥६॥

کَم سَنا دوکھ چھتم ہی دوکھن گاہہ وئی
 کَم گلیہ نے نہ چاہیہ سمر نہ سستی
 کو سہ چھ نیک نامی ہی کو لُس کھار وئی
 یو سہ نہ بنہ جانے تو تابیہ سستی
 کو سہ کو سہ چھ سیدی ہی سیدی وتری
 یو سہ نہ پرفت سید جانے یو زایہ سستی
 کَم کَم چھتم یوگ ہی نہ گت امبا !!!
 کَم نہ سید بن جانے نہ سستی سستی (۵۵)
 (آئے سحران)

कम सना दोख द्वि तिम ही दोखन गालुवनि,
 यिम गलुनय नु चानि सुमरनि सत्य ।
 कोसु द्वि नेक नामी ही कोलस खारुवनि,
 योसु नु बनि चाने तोतायि सत्य ।
 कोसु कोसु द्वि सेंदी ही सेंदी दात्री,
 योसु नु प्राप्त सपदि चानि पूजायि सत्य ।
 कम कम द्वि तिम योग ही जगत अम्बा,
 यिम नु स्यद बनन चानि वयनतनु सत्य ॥
 —०— (आव शरण) ॥ १६ ॥

ये देवि! दुर्धर कृतान्त मुखान्तरस्थाः,
 ये कालि! कालखन पाश नितान्त बद्धाः ।
 ये चण्डि! चण्ड गुरु कलमष सिन्धु मग्ना
 स्तान्पासि मोचयसि तारयसि हंसतैव ॥ १६ ॥

ہی دہوی یم مہا کالہ سند سے کھٹس
 موکھس مندر باگ کہمتی
 ہی کالی یم مہا کالہ سند سے کھٹس
 زور زور یا مھ چھ گھٹنہ آمتی
 ہی چٹدی یم باریک تہ کھٹس
 پا پھ کس سمندر سن مندر چھ چھٹمتی

سئلہ گرن دیان چون تیلہ حکمہ رحمان
 تہن موکلاوان بیسہ تاران ترسے - (۱۶)
 (آتش)

ہی دہی ییم महाकाल सुन्दिसयकठिनिस,
 मोखस मन्ज बाग गामुत्य ।
 ही काली यिम महाकाल सुन्जि मोचि,
 रजि चरि पाठ्य द्वि गन्डनु आमुत्य ।
 ही चण्डी यिम बांरीक तु कठिनिस,
 पापुकिस समन्दरस मन्ज द्वि फण्डमुत्य ।
 येलि करन द्यान चीन तेलि खर रक्षान,
 लिमन मोकलावान बेयि तारान चुय ।
 —०— (आव शरण) ॥ १६ ॥

लक्ष्मी वशी करणचर्ण सहोदयानी,
 तत्पाद पङ्कजजांसि चिरं जयन्ति ।
 यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे,
 लुम्पन्ति देव लिखितानि दुरक्षराणि ॥
 ॥ १७ ॥
 مات بو آئی لختی و ش کر لیس پیٹ

پاؤچ گرد حانی چھ طاقتہ سوس
 چانہ پڑنامہ وزیر لکھ کھن لکھ
 پاؤچ گرد حانی بڈن شانہ سوس
 سوس پاؤچ گرد گالہ دور اکھیر لکھ
 زکشت مشنر نہ سہ جے کا پڑ سوس (۱۷)
 (آنے شرن)

मांज बवान्य लहमी वश करनस प्यठ,
 पादुच गर्द चान्य ताकुतु सोस ।
 चानि प्रणामु विजिलगि यिमनलला
 पादुच गर्द चान्य बडि निशानु सोस ।
 सोय पादुच गर्द गालि दौरा लहर तस
 जगतस मंज बनि सु जयकार सोस ॥

—०—

(अर्थ प्रणाम)

रे मूढा!! किमडयं वृथैव तपसा काचः

परिविलश्यते

यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रियते

गृहाः ।

भक्तिश्चेदविनिशिमी भगवती पादद्वयं
 संन्यत

मुनिद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मीः
पुरोधावते ॥१८॥

ही मुण्ड कथाजि दुख बे फायदु तपु किन्य,
पनुनिय शरीरस तकलीफ दिवान ।
यस किन्य, दानु किन्य, बजि दखिनायि किन्य,
कथाजि दुख गरु पनुन खाली करान ।
गढ़ शरण वु माजि शारिकायि प्राव बखती,
हैं करुन तसुन्दुय पादि सेवन ।
अदु फौलिमुति पम्पोशि नेत्रब सोस,

(आये शरन)
ही मुण्ड कथाजि दुख बे फायदु तपु किन्य,
पनुनिय शरीरस तकलीफ दिवान ।
यस किन्य, दानु किन्य, बजि दखिनायि किन्य,
कथाजि दुख गरु पनुन खाली करान ।
गढ़ शरण वु माजि शारिकायि प्राव बखती,
हैं करुन तसुन्दुय पादि सेवन ।
अदु फौलिमुति पम्पोशि नेत्रब सोस,

लक्ष्मी ब्रोठ ब्रोठ हैय दीरुण ॥ १८ ॥

—०— —(आय शरण०)

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि,
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः ।
श्लक्ष्णं वसे मधुरमादि भजे वरस्त्री-
देवि ! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ॥ १९ ॥

कान्हे मंगे नै म्भे कान्हे तारु नै बाजु
एतत्तु त्राव करु नै कान्हे सिया
तु आली वस्त्र दार कपडे मुदरी चिज
अथ रत्न ने स्या करु कपडा
यिले मज बोवती मरुदिस मन्त्र मते रोज
तिले म्भाने कामना ये स्या स्या (१९)
(आय शरण)

कांसि मंगु नै यि कांसि तारु नै बाजु,
आरु चर त्राव करु नै कांसि सेवा ।
जावित्य वस्तु र दारु रुयमु मोदुय चीज ,
अवु रवु नुय सूत्य करु खेला ।

येति मांज चवान्य हृदयस मंजं मे रोजख ,
 तैलि म्यानि कामुनायि स्यद सपदन ॥ १९ ॥
 —०— (आय शरण)

शब्द ब्रह्ममयि ! स्वेच्छे ! देवि ! त्रिपुर सुन्दरि,
 यथा शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरी ॥ २० ॥

ہی شہد روپی نہرئل سورؤپی
 ہی دیوی ہی تیر لویر سوئدی
 کر نیفا شکستی مئے چانی لویا
 کر شوکار ہی پریشوری - (۲۰)
 (آئے شرن)

ही शब्द रूपी न्धरमल स्वरूपी ,
 ही दीवी ही त्रिपुर सुन्दरी ।
 कर यथा शक्ति मे चान्य पूजा,
 कर स्वीकार ही परमेश्वरी ॥ २० ॥
 —०— (आय शरण)

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः ,
 अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु मुनिः
 सदा ॥ २१ ॥
 سادک ساری سادک ساری

ہم دوشٹ آسن تم گلشن ۴۴۴
 نشور وپا اوستھا مئے تہ مارچ بیتی
 گوہر و لوتھرا مئے سپٹہ پیر سن روز عین (۱۲۱)

(آئے شرین)
 رنجیتن سوسہی ساج سا دھ ساری،
 دین دوہٹ آسن تینم گلتھ تین۔
 شبر رنپ अवस्था में ति साज बेन्यतन,
 गोरुदीव सदा में प्यठ प्रसन्न रज्यतन ॥२१॥
 (आयशरण)

दर्शनात्पापशमनी जपामृत्यु विनाशनी ।
 पूजिता दुःखदुर्भाग्य हरा त्रिपूर सुन्दरी ॥२२॥

چانہ درشنہ پاپ ساری چھ گلشن ۴
 چانہ ترپہ مریتو چھ ناست سیدان
 یوزایہ کنی جون مہما گہونہ کنی
 زپوس دھک تہ دور باگیہ دور شیدان (۱۲۲)
 (آئے شرین)

चानि दर्शानु पाप सारी छि गलान,
 चानि जपु मृत्यु दु नाश सपदान ।

पूजायि — किन्च्य चोन महिमा मय्यनु
जीवस दोख त् दोर बाग्य दूर सपदत्त ॥२२॥
—०— (आय शरणः)

नमामे यामनी नाथलेखालङ्कृत कुन्तलाम्
भवसन्ताप निर्वीपन सुधा-नवीम् ॥
نمىكار چمىس گران سيمىس كيشىس منترى
ترندرمه پرنزلان راسترو دين
سماسپ دو كفن چمكه نهواران ترى
امرسته ندى سپند پرواىه ستى زين
(آئے شرن)

नमस्कार कुस करान येमिस केशस मञ्ज
चन्द्ररमु प्रजलान रात्रो द्यम ॥
सम्सारु दोखन कुस न्यवारान चय
अमर्यतु नदी हन्दि प्रवाह सूर्य ॥२३॥
—०— (आय शरणः)

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं विधि हीनं च यतुतम् ॥
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कुषसा परमेष्ठिनि ॥
॥२४॥

منترهين آستخه كز ياهين آستخه
و دوى هين آستخه به كيشترىفا پړووم

تھ سارے ہی رسمشوری پر
 ترے کرپا یہ کنی عاتق سے تاج بخشم
 (آئے شری)

मन्त्रहीन आसिध, क्रियाहीन आसिध ।
 विदिहीन आसिध, यि केंछा प्रोवुम ॥
 तथ सारिसय ही परमीश्वरी ।
 चय कृपायि किन्य आरतिस मे माज
 आय शरण ये पादन विनयि ^{बखशम}
 याके सुतायि मंजु असि रक्षतु चय ॥ (24)

ॐ

अथ अम्बास्तव

(चौथा स्तव)

ॐ नमो जगदम्बिकायै ।
 ॐ यामाऽमनन्ति मुनेयः प्रकृति पराणी,
 विद्येयानि यांश्चुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
 तामाऽर्च्य पल्लवितशंकर रूप सुद्रां,
 देवीनऽनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥ २॥

یس منیشراو برکرتی مانان لا
 یس ونان و دنیا ویدر سیه زانہ ونی
 تس شوم تاتھ ستتر ارداشکی یوسیه
 شو پایہ سوُس زگتس چھ زچھ ونی
 تس آمت بہ ایکاکر تریتھ منتھ
 چھس پیوان تس پا دن سپھ پرن - (۱)

यस मुनीश्वर आदि प्रकृती मानान,
 यस वनान विद्या वेद रहस्य जानुवुन।
 तस शिवनाथ सज्ज अर्धाङ्गी योसु,
 शूबायि सौस जगंतसद्धि रद्धिवुन्य ॥
 तस आमुत ब एकागर व्यथ बनिध,
 दुस प्यवान तस पादन प्यठ वरन ॥ १०

—०—

अम्ब ! स्त्वेषु तव तावद्ऽकर्तृकाणि -
 कुराठी भवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि ।
 डिम्बस्य मे स्तुतिरऽसावऽसमञ्जसाऽपि-
 वात्सल्य निध्न हृदयां भवती धिनोति ॥
 - (२)

ہی ماما جانی توہ تا کر تس سہٹ
 برہما وائی تہ جہ سناہنی
 عے شری سٹریہ توہ تا یو دجہ ٹوٹ مھٹے۔
 باوہ نایہ کئی ہر دیس تہ سوکھ دوائی۔ (۲)

ही माता चान्य तोता करनस प्यठ ,
 ब्रह्मा वांनी ति जड बनानी ।
 मै श्रुयसुन्न यि तोता यौद द्विदौट फुट्य,
 बावुनायि किन्य हृदयस च् सोख दिवानी ॥
 (2)

० योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुरेखा,
 रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकीति ।
 निगण्यन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा,
 विद्योतसे मनसि भाग्यक्ता जनानाम ॥३॥

چداکاشہ رؤیہ کنی ناد بیدر رؤیہ کنی
 تہ ندرمہ کلاہش جھکھ تہ پیر زلان
 وائی مہندشید رؤیہ چون جہ آپہون
 سوکھ تہ گئیان امریتہ تہ یے لیش نیران
 جیمکان جھکھ لیش مہنر مہنر تہ میلے
 تہ گتہش مہنر مہنر یسر باکیہ وان۔ (۳)

विदाकाश रूप किन्ध नाद विन्दरूप किन्ध,
 चन्द्ररम् कला हिश क्ख च प्रजलान ।
 वाणी हुन्द शब्द रूप चोन तु आसुवुन,
 सोख तु ज्ञान अमस्थतु चैय निश नेराना॥
 चमकान क्ख तस मज्ज मनस च पानय,
 जगतस मज्ज आसि युस बाग्यवान ॥३॥

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरै-
 निष्यन्दमान सलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
 वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपास्ते ये,
 पादौ तवाम्ब ! भुवनेषु त एव धन्याः॥४॥

आसन यस रुम वोधुदनि शरीरस,
 ओश आस्यस नेत्रव नेरान ।

वांणी किन्च पद परि गित्य गच्छ्य गच्छ्य,
पादन त्रै आसि युस पूजा करान ।
तस ह्युव कुस सना कु त्रैयलूकी मन्ज,
त्रन बवुनन मन्ज सुय कु वाग्यवान ॥४॥

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदऽपि देवि शिरः करोति ।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमऽम्ब ! तानि
कस्याऽपि कैरऽपि भवन्ति तपोविशेषैः ॥५॥

مواکھ لیں آسہ و دلو گے سوس
ہی آج جانی تہہ تا کر لیں پہٹ
شیر لیسندے آسہ گبر گبر ہی آج !
ترے لیے کن نمسکار کر لیں پہٹ
من لیں لو گمت آسہ آج ترے لیے کن
سمن کر چین راترو دین
آسہ کا ہنہ شہہ باگہ وان کمتا تو خاص تپہ
پونہ کنی روز گبر گبر ترے شرن (۵)

मोख यस आसिय बुधूग सौस ही मांज,
 चान्य तोता करनस प्यठ ।
 शेर यखुदुय आसि गरि गरि ही मांज,
 चैय कुन नमस्कार करनस प्यठ ॥
 मन यस लोगमुत आसि मांज चैय कुन,
 सुमरन करि चीन रात्रो धन ।
 आसि कांह सु बाग्यवान कमि तान्य खास तपुके,
 पीणि किन्थ रोजि गरि गरि चैय करान ॥
 (5)

मूलालबाल कुहरादुदिता भवानि !
 निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिलतेव ।
 भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
 निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा ॥६॥

مؤلا دارلشہ درامیر شہ پیموشش زہد
 بجلی ہندی یا سٹی میور کن کھسان
 شہر ڈولہ ہے منتر اثر تھ تو رہ نیران
 امریتہ دانی رؤیہ لبون چھ واتان
 (4) —

मूलादारु निशि द्रामुच्च धर शै पम्पोश चटिथ,
 बिजली हुन्ध पाठ्य ह्योर कुन खसान।
 सहस्र डलसुय मंज अचिथ तोरु नेरान,
 अमरगतु वान्य रूप बीन बैयि कि वसान ॥
 —०— (6)

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते ,
 मुग्धः कटाक्ष विधिरऽङ्कुरयां चकार ।
 धत्ते तदा प्रभृति देवि ! ललाट नेत्रं,
 सत्यं हियेव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः ॥७॥

بیلہ زول کا دیو اکہ شیو ناخن
 اکہ کٹا اکہ تتھی کتی وہ پیرا وقت
 تنہ سہمہ مسا دیو منہ لالہ شہر
 شرمہ کنز او دے تیہ حقہ چہ شہر را وقت - (6)

बेलि जौल काम दीव अख शीव नाथन
 कि कटाक्ष तिथ्य कृत्य वोपदां विधे ।
 र प्यठ महा दीव मंज ललाटुक नेथुर
 मि नि न्य ओडुय नेथुर व मुचुरा विधे
 —०— (7)

अज्ञात संभवमऽनाकलिताऽन्ववायं,
 भिक्षुं कपालिनमऽवास समर्द्धितीयम् ।
 पूर्वं करग्रहणमङ्गलतो भवत्याः
 शम्भुं कएव बुबुधे गिरिराजकन्ये ॥ ८ ॥

نہ زانی ہوئے نہ نیم لیس کو لہ سو س بیکھو
 ننگے پہ دو نیمہ رو س نہ صنتہ کلہ مال
 چاہئے ولو اسے برو ٹھو ہی ہمالہ پتری

کس اوس زمان شیبہ سندانہ (۸)

नजान्यमृतिजन्मयुस कोलुसौस बिहू,
 नङ्गय तु दोयमि रोस कुनिध कलुमाला
 चानि व्यवहृ ब्रौठ ही हिमालु पुत्री,
 कुस औस जानान शीबु सुन्दहाल ॥

—०— (8)

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च,
 भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ ।
 वेनात्त संहति परिग्रहता च शम्भोः,
 शोभां विभर्ति गिरिजे ! तव सह चर्यात् ॥

(९)

جرم لو شاک شمشان لبسا ملته
 نثران شمشانن بینه بیکه منگه وکن
 بؤت کچله پر وار آسه وکن نس شوش
 شوبان تیلہ تیلہ تر یستی چک وکن (۹)

चरुम पोशाक शुभशान बस्मा मलिथ,
 नचान शुभशानन सु वीरव मन्गुवुन ।
 बूत खिल परिवार आसुवुन तस शिवस,
 शूबान तेलि वेलि त्रैय सत्य कुपकुवुन ॥
 —ॐ— (९)

कल्पोप संहरष केलिषु पण्डितानि,
 चण्डानि खण्डपरिशौरऽपि ताण्डवानि ।
 आलोकनेन तव कोमलितानि मातः,
 लक्ष्म्यात्मना परिणमन्ति जगद्धिभूवै ॥१०॥

گلیانک ناش نثرناه تہ گشت تاه
 نس مہادلو ستتر مجہ بڑ کتر پٹا
 دے بدلان سمبدا این ستر
 بیلہ تراوان تر تنہ شوب نظر (۱۰)

कल्पान्तुक नाश ननुनाह तु गिन्दुनाह,
 तस महादीव संज कि बंड क्रीडा
 सोरुय सु बटुलान सम्पदायन मंज,
 येलि त्रावान तथ च शोब नजराह ॥
 —————
 ————— (19)

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये,
 निःशेष पाश पटलच्छिदुरा निमेषात्।
 कल्याणि ! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण,
 कारुण्यतो भवासि शाम्भव वेद दीक्षा ॥११॥

زیوس کرمین سیدتہ شہودی
 آگہ ہمیشہ چھالستہ سموہ تن تر گالان
 ترے چھیکہ و یا یہ کنی گور روپہ شہودی
 شہو شکستی دیکھتیا وو پیدلش کران
 (॥) जीवस कर्मन सपदिथ शोदी ,
 अकि निमीशि फांसि समूह तस च गालान,
 त्रय द्रव दयायि किन्व गोरु रूपु वनिथ तस,
 शिवशक्ती दीक्षा वोपदीश करान ॥१॥
 —————

मुक्ता विभूषणवती नवविद्रुमाभा,
 याच्येतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
 एकः स एव भुवन त्रय सन्दरीणां,
 कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥११॥

मुखते माले नरोर माले तरे वृष्टि
 असुते चिकहे तरे माज शो बासमान
 लिस पोरे श आसे सन्ध्या तारे लो सुस
 चोन सुरुप ते ह्यो तस बासान
 तस पोरे शस तरे लो नचि लो गने
 पान्त्र काने रोस्ती कामलो शमरान- (१२)
 मोरुतु माल जेवर रोद्र माल कुन्य कुन्य,
 आसुवुन्य कख च माज शबायिमान।
 युस पोरुष आसि सन्ध्या तार कव सोस,
 चोन सोरुष युध ह्यव तस बासान,
 तस पोरुषास त्रिबवनेचि युगिनीयि,
 पांत्ति कानि रोस्ती कामदेव सुमरान॥
 — (12) —

ये भावयन्त्यऽमृतवाहिभि रंशुजालै-
 राप्यायमान भुवनामऽमृतेश्वरी त्वाम् ।
 ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घनीयां ,
 ब्रह्मादिभिः सुर वरैरऽपि कालकक्षाम् ॥३३॥

ہی ماما یم ترے سوہونی آسن ۛ
 امرتہ روپہ سو کہ دیوان ترن بون
 تم کران کالہ مری ما دایہ الیہ
 یتھ ترن کٹھین برہما دکن یتھ دیون (۱۳)

ही माता यिम त्रै सोरुवुन्य आसन ,
 अमरुत रूपु सोख दिवान त्रन नवनन ।
 तिम करान कालु मर्यादाद्यि अपोर ,
 यथ तरुन कठ्युन ब्रह्मादिकन तु दीवन ॥
 (१३)

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाद्यां ,
 व्याख्या समुद्यत करा शरदिन्दु शुभ्राम् ।
 पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते ,
 मातः ! स विश्वकबितार्किक चक्रवर्ति ॥
 - (३४)

सुकच नरियान अके अत्ते दारिधे थ
 पोस्तक कमंडल बैयि दोन अथन
 वियाहियान सिये सियाह अत्ते थ लोमट
 थुन्दर मसिये थिये थिये थिये आसन
 लिये थिये थिये थिये थिये थिये
 कोय थिये थिये थिये थिये थिये

सटकुच जपुमाल अकि अधु दारिध च्चु,
 पोस्तक कमंडल बैयि दोन अथन ।
 व्याख्यानस प्यठ व्याख अधु कुलौंगमुत,
 चन्दरमस ह्युव म्पोशाजन च्चु आसन ।
 वुस वुथ दान करि चीन साज मज्जनस,
 कव्यवन हुन्द च्चु व्रत बनान सुजगतस॥
 (14)

बहीवतं स युत बंबर केश पाशां,
 गुजावली कुतगनस्तनहरि शोभाम् ।
 श्यामां प्रवाल वदनां सकमार हस्तां,
 तामेव नीमि शबरी शबरस्थे जायाम्॥२३॥

मोरकच क्लृप्ते सौसं त्रिं चक्रोने केशि सौसं ॥
 रचु फलि हारुसौसं त्रिं शूबाधिमान ॥
 चमकुवुनि मोखु सौसं त्रिं कोमल अथव सोय
 तंथय शिकार बाधि रूपस व प्रणाम करान ॥
 (१५)

मोर पखि सुकटु सौस च वमकुवुनि केशि
 रचु फलि हारुसौस च शूबाधिमान । सौस,
 चमकुवुनि मोखु सौस त्रिं कोमल अथव सोय
 तंथय शिकार बाधि रूपस व प्रणाम करान ॥
 —०— (15)

अर्धेन किं नवलता ललितेन सुगधे,
 क्रीतं विभोः परुषमऽर्धमिदं त्वयेति ।
 आलीजनस्य परिहास्य वचांसि मन्ये,
 मन्दस्मितेन तव देवि ! जडी भवन्ति ॥
 (१६)

है हासो नंदी चक्रोने केशि सौसं
 मनोवरे ते सौसं त्रिं शूबाधिमान
 क्रीतं विभोः परुषमऽर्धमिदं त्वयेति

لیس سخت بیہ کھڑو شو چھ آسہ ون
 ولسن ہندانتھ ہاسہ لور وک ورن
 چاہن کم آسہ ستی عورت چیم تم بن - (14)

ही महासोन्दरी वरु चय आसुवुन्य,
 मनोहर तु सोन्दर नव धर जन।
 कथाजि ह्योतथन मोल युध ह्यन सांमी,
 युस सरुत बौयि कठोर शीवु तु आसुवुन।
 व्यसन हुन्दि अधु हासि पूर्वक वचन,
 चानि कम असन् सूय मूड दित्तितवन।
 -०- (16)

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं,
 मायोदधिर्विविध दारु तरङ्ग मालः।
 आश्चर्यमऽम्ब भटिति प्रलयं प्रयांति,
 त्वद् दधान सन्तति महावह्वा मुखाम्नी॥
 (१७)

برہما لکھن کھلہ شریعت یہ بابا سوڈر
 دو کہ لکھن وستی شریعت آسہ ون

آستری می آج ناشس حه واناں
چون دیاں آخه کیتا حه واڈ واکاں (۱۷)

ब्रह्माण्ड बुबर खिल बरिध वि माया सोदुर,
बोखु लहरव सत्य बरिध आसुबुन।
आश्वर कुही माज नाशाय कु वातान ,
चोन द्यान अथ क्युत कु वाडवा अंगुन।
(17)

दाक्षावणीति कुटिलेति गुहारणीति,
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि,
संदश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥ १८ ॥

دکھ ستری ترے مولا دار واستنی
متره تنگو پیاہ مشنر حکمہ تر روزانی
کائنیا نی ترے لکھی ترے بیہ
حکمہ کلاوٹی نہ ترے حکوٹی
حکمہ کنے آستہ ہی آج ہو آئی
لبنہ حکمہ یوان بہو روپ نتر آئی (۱۸)

दहि पुत्री त्रय मूलादार वासिनी,
 हथ गोपायि मंज कख च, रोजांनी।
 कान्त्यायेनी त्रय लहमी त्रय बैयि,
 कख कलावती त्रय तु त्रय भगवती॥
 कख कुनी आसिथ ही साज भवानी,
 लबनु कख चिवान बहु रूप नजानी॥
 —०— (18)

आनन्द लक्षणमनाहत नास्ति देशे,
 नादात्मना परिणतं तव रूपमीदृशे।
 प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं,
 शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्याः॥
 (१६)

آتش روی پرست ترکس منته
 ناد روی نه لیس چوئے دیان
 آتش سه کنی آتش موکھ منته کنی
 آتش سوئس کردیان سے چھ باکیوان (۱۹)

आनन्द रूपी हथ त्रकरस मंज,
 नाद रूप बनि यस चोनुय ध्यान।

अभ्यासु किन्त्य अन्तर मोखु मनु किन्त्य,
अशि सोस करि दान सुय हु बाग्दयन ।

—०—

(२९)

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं,
त्वं चैतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।

त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनी त्वमुष्मा,
निःसारमेव निखिलं स्वदृते यदि स्वताम् ॥

—(२०)—

ترے چمکے مآج بوانی ژندرس روشنی
ترے پشیمانی دفتی آستان
ترے چمکے چیتنی لور شس آسودنی
ترے پشیمانی منبر بل باسان
ترے شادمانی آگش شکستی
ترے دوس زگت نشه سارچم روزان (۲۰)

च्यु छख माज बवान्य चन्द्रमस रोशनी,
च्यु सिरियस दिप्ती आदान ।

च्यु छख चैतन्य पुरुषस भासुवन्य,
च्यु पवनस मन्ज बल बासान ॥

द पानिस
स जगत निना

ज्योतीषि यद्विवि चरन्ति वदन्तरिक्षं,
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च द्यते ।
यद्वाति वायुरऽनलो यदुर्चिराऽस्ते,
तत्सर्वमम्ब ! तव केवलमाज्ञयेव ॥ २१ ॥

ہی ماما سیری بیر ژند زمرہ تارکھ
آکاشش پٹھیم پرکاش دیوان
شیش ریش کل پڑھوی دارات
میگ ریم رود ز گشت تراوان
وایو پیران اگن چھ زوتان
تم ساری چاہن حکم پہ سستی خلان - (۲۱)

ही माता सिर्ययि चन्द्रसु तारख ,
आकाशस प्यठ यिम प्रकाश दिवान ।
शीशनाग युस कुल पृथ्वी दारान ।
मेघ यिम रुद जगतस जगन् ॥

वायू फेरान अंगुन कु जोतान,
तिम सारी चानि हुकमु सत्य चलान ॥
(२१)

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं,
वाक् तर्कयो स्त्वमऽसि भूमिरनाम रूपा ॥
यदाविकासमुपयाति यदा तदानीं,
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति ॥२२॥

نشکوثر پیر صائیلہ چھے ژئے سپان
تیلہ ژئے مآج من تہ لب و نیر و کار بیان
تیلہ و لکائن یوان چھکھ ژ بی گرجے
(۲۲) تیلہ چانی نام روپ تہی چھ نسیان
संकुच यदा येलि छय त्रै सपदान,
तैलि त्रै माज मन तु वोढ न्यर व्यकार
येलि व्यकासस यिवान छख नु ही गिरिजी,
तैलि चान्य नाम रूप नैन्य छि नेरान ॥
(२२)

भोगाय देवि भवती कृतिनः प्रणम्य,
भ्रुकिङ्करी कृत सरोज गृहाः सहस्राः ॥

चिन्तामणि प्रचय कल्पित-केलि शैले,
कल्पद्रुमो पवन एव चिरं रमन्ते ॥ २३ ॥

हीदपुई सोव्हें बायेंत बाळीशे वान
यिले तरे पछी तिम पेत्राम करान
तिले चाने भोवें हरकत रमन लखी नये
सासे नरेश्वरी हरे रोज आनी
चिन्तामणि रत्नक समूह नवादी मत्स्य
कविले भंडस पैमा ठस संपूर्ण कमिलानी
कलिये वरकलिये सुस्तु भूरी मत्स्य बागन
मंत्र तिम रत्नकाल चिन्तामणि पिरानी (२३)

ही दीवी सोखु बापथ बाग्यवान,
यैलि चै छी तिम प्रणाम करान ।

तैलि चानि बुम्बि हरक च तिमनलक्ष्मी
साहु बज्र ऐश्वर्य विजेजानी । तु

चिन्तामणी रत्नक समूह बनाव्यमुतिस्य
खलि हुन्दिस्य पहाडस्य प्यठ तिम खेलानी ।
कल्प वृक्ष सोस्त्यव बर्धमुत्यन बागन,
मजंतिम यंचकाल छी फेरानी ॥ २४ ॥

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे,
 संसार तापमऽखिलं दयया पशुनाम् ।
 वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्तया,
 धर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्टया ॥२४॥

ہی مانج زلوس سمسار دہ کہ ساری
 چھپس ترے ناش کران دیایہ کنی
 دہ کہ نہد ناش ترے ماتحت چھ آسہ ون
 دہ کہ نیورتی چھی ترے آدین
 یقہ یاٹھو ستری بہ چھ پیہ تی گرمی
 شو مراوان پیہ ورشہ کنی

(२४)

ही माज जीवस संसार दोख सारी ;
 छिहस न्य नाश करान दयायि किन्य ।
 दोखन हुन्द नाश जेय मातहत हु आसुन,
 दोख न्यवृत्ति छी जेय आदीन ।
 बिधु पाठ्य सिधयि छुय पनुनी गमी,
 शोमरावान पनुनि वर्षनु किन्य ॥२४॥

शक्तिः शरीरमऽधिदैवतमन्तरात्मा,
 ज्ञान क्रिया करामानस जालमिच्छा ।

ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं,
किं तन्नयद्ववसि देवि ! शशाङ्कमौलः ॥२५॥

نثر پر تھے آسوں نے شکھتی تھے آسوں نے
وہراٹھ سواروں پر جھکے آسوں نے تھے
زیلو آتما دیاں شکھتی، کر یا شکھتی
تیسند تیسند شکھتی آسوں نے شکھتی تھے
پترھا شکھتی (لشوری پر وار تھے
گر پترھا شکھتی آسوں نے
کیا نہ جھکے تھے آسوں نے سواروں پر
سے سواروں پر جھکے پتر لو تھے (۲۵)

शरीर चय आसुवुन्य शक्ती चय आसुवुन्य,
व्यराट्, स्वरूप कर आसुवुन्य चय ।
जीव आत्मा द्यान, शक्ती, क्रिया शक्ती,
येन्द्रिय शक्ती आसनु शक्ती चय ॥
यका शक्ती ऐश्वरी परिवार चय,
ग्रेह घन हुज जाय आसुवुन्य चय ॥

क्या नु देख नु आसुवुन्य युस स्वरूपशिव
सुय स्वरूप देख परिपूर्ण नुय ॥२०॥ सुन्द

—०—

भूमौ निवृत्ति रुदिता पचसि प्रतिष्ठा,
विद्यानले मरुति शान्तिरतीतशान्ति ।
व्योम्नीति यः किलकलाः कलयन्ति विश्वं,
तासां विद्वरतरमऽम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥

پر حقوی منتر نیویتی کلا روپ ترے - (۲۶)

لکس منتر پر تشٹا کلا روپ ترے
الکس منتر یقین کلا تر آسہ وقت
لوکس منتر شائقی کلا ترے

آکاششس یکہ کلا یہ زگتہ داران
تمو لیشہ دور چون سور روپ آسہ ون

تمو کلا یہ دور چون سور روپ (۲۷)
تمو لیشہ مانہ دور روزان ترے

पृथ्वी मन्त्र न्यवृत्ती कला रूप नुय,

जलस मन्त्र प्रतिष्ठा कला रूप नुय।

अग्नस में विद्या कला नु आसुवुन्य,

पवनस मजं शान्ती कला चय।
 आकाशस यिम कलायि जगध दारान,
 तिमव निशि दूर चीन स्वरूप आसु बुन।
 तिमव कलायव निशि दूर चीन स्वरूप
 तिमि निशि माज दूर रोजान चय ॥ 25 ॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं,
 नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
 तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
 स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति ॥
 (१७)
 یوت تام نہ پاؤ جوری چائی رتن ہر دس
 ہم بخت کرمی و لٹ و آدی
 ہی زگتہ رحیم و نہ تو تانی ہم شکری
 موڈ باو تہرہ ناش کتہ سیدی (۱۷)
 यावत्ताम नु पादु जूर्य चान्य रटन हृदयस,
 यिम बहस करु कुन्य बुन्द बादी।
 ही जगध रक्खि बुनि तात तान्य तिम
 श क बर्य थय,

मूडु बावु तिहुद नाश कति सपदी॥२१॥

—o—

यद्देवयान पितृयान विहारमेके,
कृत्वा मनः करण मण्डलसर्व भौमम ।
याने निवेश्य तवकारणं पञ्चकस्य,
पर्वणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम्॥

ایم یوگی یو پرش پرانہ ابیاس یوگ (۲۷)

ابیاس کری کری بیله پراون

بیشدریسه کھله ته من آسکھ زکونمت

تم سوآری کری کران چھی پائثرن کارن (۲۸)

यिम यूगी पोरुष प्राणअम्यासु यूग ,
अम्यास कर्य कर्य वेलि प्रावन ।

वेन्द्रेय खिल तु मन आस्यख ज्यूनत,
तिम खवाई करान छी पांचन कारुणन॥
—o— (28)

स्थूलसु मूर्तिषु मही प्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब ! यस्याः॥

पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं ,
सासि स्तुता किल मयेति तितिहितव्यम्॥

(۲۴)
 پیر تھوی توٹ پیٹھ مایا توٹس تمام ۱۱
 یم ستھول مور تیر مآج چھ آسان
 کہہ مور تی شہ ہی مآج بو آنی
 چانی شہور و ناتی چھنہ باسان
 نہ ہادکن نہ چھنہ شہور سائرہ
 گون چانی گیو تھ چھنہ تم تہ کینہہ ہکان
 تھے ولوئی ہندو گون کڑی مہگان
 مانی دیم مے چھیس بے آشاوان (۲۹)

पृथ्वी तोत ज्वल माया ती तुख ताम ,
 यिम स्थूल मूर्ति यि माज हि आखान ।
 कुनि मूर्ती मज्ज ही माज बवांनी ,
 चान्य हिश विबूती हे नु बाखान ॥
 ब्रह्मादिकन ति कुनु त्युथ ह्युव सामरथ ,
 गोण चान्य गेविथिंनु तिम ति केह ह्यकान ॥

तिम्रय विब्रूती हुन्ध्य गोण कर्थ में गायन,
मांफी दितम में हुस ब आशावान ॥ २९ ॥

कालाग्नि को टिरुचिमम्ब षडऽवशुद्धा,
वाप्लावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम् ।
श्यामां चनस्तनतटां सकली कृतौ च,
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ॥ ३० ॥

کلیائتہ آگنہ یا علی گہہ سو س ی ما ج
شمسار ناشس پیچہ تر چمکان
سورے بیہ قائم کر لیس پیچہ ۳۱
ہکیم تر تیلہ امرتک و رشق کران
یم شامہ روپ سو ندر چون دیان چھی دلا
یم ما ج ز گیشو گور و چھو سیدان
(۳۰)

कलपांत, अग्न, पाठ्य गहं सोस ही मांज,
समसार नाशस प्वठ च्च चमकान ।
सोरुय बेयि कायिम करनस प्वठ,
दुख च्च तेलि अमृतुक वर्षुन करान ॥

यिम शामुरत्पु सोन्दर चीन द्यान कि दार
 तिम माज जगतुक्थ गौरुकि सपदान ॥
 → ० ← (30)

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब ! केचि,
 दानन्मेव कतिचित्कतिचिच्चायाम् ।
 त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम,
 साक्षादऽपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥ ३१ ॥

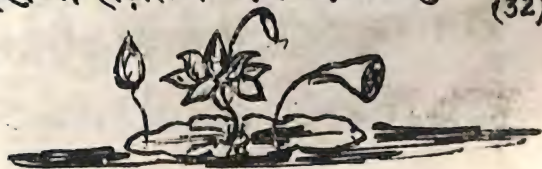
کیٹہ پی تھنر ویدیا کیٹہ جی آئند
 کیٹہ جی مایا روپ تھے مانان
 کیٹہ ز گتھ ماما ساکھیات حدروس
 دیا سوروپ گو روپ اسور تھے زانان
 (31)

कैह द्वी थंज विद्या कैह द्वि आनन्द,
 कैह द्वी माया रूप त्रै मानान ।
 कैह जगथ माता साक्षात हृदयैस,
 दया स्वरूप गोरु रूप अस्थये जानान ॥
 (31)
 कुवलयदलनीलं बर्बर-स्निग्ध केशं,
 पृथुतरकुच भाराक्रान्त कान्तावलग्नम् ।

किमिह बहुभिरैकैस्त्वत्स्वरूपपरं नः,
सकल भुवन मातः सन्तत सन्निधात्तम्॥

﴿३२﴾
 کوئے دلگہ پاٹھی حکیمہ ماج تر چکوئی
 دلا رمت ترے تھے ماج سو ندر کیش
 سو ندر کمر سوس سینہ لون تر آو تھ
 ہی ماج آسہ و فی تر ز گتچ الیش
 زیاد و فی تھے کتاء نیر حاصل ماج
 سنو کہ مے روز تم نہتہ دتم پیشہ سندیش
 (۳۳)

कुवलय वर्ग पाठ्य छत्र मांज च चमकुकुच,
दोरमुत त्रै ह्रिय मांज सोन्दर केश ।
सोन्दर कमरु सौस सीनु बोन त्राविध,
ही मांज आसुकुच च जगतुच ईश ।
ज्यादु वन्यधुय क्याह नेरि हांसिल मांज,
सनमोख में रोजतम न्यध दितम त्युध सन्देश॥
(32)



सकलजननीस्तवः ।

(पांचवां स्तव)

अजानन्तो यान्ति क्षयभवश्यमन्योन्यकलैह,
रमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः॥
जगन्मातर्जन्म ज्वरभय तमाकौमुदि ! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्॥
(१)

نہ زانے وہی موزکھ پانے وہی لڑی لڑی
اوسن پاٹھی ناستہ باوس چھ واتان ۶
سیم منہ وادی مایا یہ ہستہ نے
گنڈ نے پھستہ سیم ڈولہ ڈولہ گڑھان
ہی زگنڈہ ماا اسہ تر نمکی جودہ
بہ کہ تمہ کے تر ٹڈہ مہ تر باہان
آمتی شرن چھی سنو کہ ہی آج
گنڈہ اسی ترے کر پر نام چھی کران

न जानुबुन्य मूर्ख पानुवान्यलंड्यलंड्य,
अवश्य पाठ्य नाशि बावस द्विवातान ।
विम मतुवादी मायायि हुन्दिनुय,

गन्धुन्य फेरिथ यिम डुलुडुलु गङ्गान ।
 ही जगध माता असि जन्मुक्य ज्वर ,
 लवकि तमुकुय चन्द्ररमु च बासान ।
 आमुत्य शरण की सन्मोख ही साज ,
 गुल्य गन्डिथ अस्य वै कुन प्रणाम की
 —०— करान ॥ १ ॥

वचस्तर्का गम्य रवरस परमानन्द विभव-
 प्रबोधाकाराय ह्युति तुलित नीलोत्पलरुचे ।
 शिवस्याराध्याय स्तनभर विनिम्राय सत्तं,
 नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुरधाय महसि ॥
 (२)

وَأَنی کَو وِثَرِ اِکْی حَکْه تَر مَاج نَ مِراوَنی
 حَکْه تَر حَیْتَن مِوَرُوب بَرِیْمَ اَنَمَد
 نِیْلَه اُتِیْلَه لُوشَه دَقْتَن شِوَسْ شِ
 شِوَبَا یِمَان بَیْیَه گِشَان نَ اَنَمَد
 شِوَسْ حَکْه اَرَادَنی زَخْمَتَسْ بَدِاَوَان
 گِشَانَه کَرِیَا نَو بَرِکَم تَنَه بَارِ کَنی
 نَمَسْکَا رَ اَسْمِی نَ تَقْه کَتْمَه تَانی تِیْرَس
 سَارِی نَ مَهِسْ اَنَدَر اَنَان تَر یَلِیْمَه کَنی (۲)

वांणी किन्ध व्यचारु किन्ध छख त्तु माजन
 छख त्तु चेतन स्वरूप परमु आनन्द, प्रावनी,
 नीलि उत्पल पोशि दिपती सोस चय,
 शूबाधिमान बैयि ज्ञान त्तु आनन्द।
 शिवस छख आरादिनी जगतस बड़ावान,
 ज्ञान क्रिया रूप तनु बारि किन्ध ॥
 नमस्कार आसिनय तथ कथ तान्य तीजस,
 सानिनय मुहस अन्दर अनान त्तु वैमि किन्ध,
 (2)

लुठत गुञ्जहार स्तनभर नमन्मध्यलसिका,
 मुदध्रदधर्माभमः करुण गुरितनीलोत्पलरुचम्,
 शिवं पार्थत्राणप्रवणमृगयाकारगुरितं,
 शिवामन्वगयान्तीं शवरमऽहमन्वेमिशवरीम्॥
 (3)

رزقلى بارثرے نالى تنہ بار شمسیتھے
 زاول کمر ریس ثرے آج شہوان
 چھٹمتہ گمہ ستی گمہ پھیری ثرے شہوانی
 نیلہ آتیلہ پوشہ رنگہ چیکان۔

اَزْزَلْسَ رَحْمَةً لِّسْ شَيْوَسْ بَيْتَ بَيْتَ ۛ
 دَوْرَمِتْ شِكَّارِي رُوبْ لِيْسْ تَرِيْ اَمْسُوْن
 تَهْجَهْ شِكَّارِي يَابِهْ رُوبْ لِيْسْ يَ مَاجْ لَوَا فِي
 گَلِيْ كَمُطْ تَهْجَهْ تَرِيْ كَمُطْ اَمِتْ حَمْسَهْ شَرْنِ (س)

रचु फल्य हार चै नाल्य तनु बारि नेम्यथुय,
 नाव्युल कमर युस चै माज शुबान।
 फटिमुति गुमु सत्य गुमु फेर्य चै शूबवुन्य,
 नीलि उत्पल पोशि रंगु चमकान।
 अजनस रक्षिने तस शोवस पतु पतु ॥
 दोरमुत शिकोर्थ रूप युस चै आसुवुन।
 तथ शिकोर्थ बायि खसस हीमाज भवानी,
 गुल्य गन्डिथ चैय कुन आमुत कुसय
 शेरम ॥ ३ ॥

मिथः केशा केशि प्रधाननिधनास्तर्क घटना,
 बहु श्रद्धा भक्ति प्रणाय विषयाश्चाप्तविधयः।
 प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते! देहि शरणं,
 निरालम्बं चेतः परिलुठति पारिलवमिदम् ॥
 (४१)

بُجُت کَر وِی چھی مَس کُڈان اَکھ اَکس
 لُٹری لُٹری تَمَن بِنِہ چھِ نَاش سیدان
 سَہیٹا پوہ رَش مَکھتی کَہی تہ پُرنیمہ کَہی
 شَہزادِیہ کَہی چافی لُوزا کُڈان
 ہی مَاج پُرنکٹ بِن اَسہ پُہ پُرسن بِن
 سَنسٹ بِن اَسہ روز بچاوان
 اَسہ چھِ تہ تَہر ل مَنہ سوس تہہ روستہ
 تہہ چھِ کَر اَسہ مَاج نِہ چھِ ڈولہ گُڑخان - (۴)

बहस करवुन्य छी मस कड़ान अख अंकिस,
 लंडथ लंडथ तिमन पतु कु नाश सपदान,
 स्यडा पोरुष बंसी किन्य तु प्रयमु किन्य,
 अदायि किन्य चान्य पजा करान ।
 ही माज प्रकट बन असि प्यठ प्रसन्न बन,
 सन्तोष्ट बन असि रोज बचावान ।
 असि छि वन्यचल मनु सोस थपु रोस्तुय,
 थफ कर असि माज नतु छि डुल गड़ान ॥
 —c—
 (4)

शुनां वा बह्वैर्वा स्वगपरिषदो वा यदशानं,
 कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कल-
 अमुष्मिन्निश्वासं विजहिहिमनाह्वय वपुषि,
 प्रपद्ये शास्त्रेणः सकल जननीमेव शरणम् ॥
 (५)

ہی منہ بہتہ شریرس سٹ نہ ایثار
 چھے خوراک بیر انگ یا تشکی کھوان
 کہ وقتہ کہتہ جایہ کہتہ یا تشکی طبرقہ
 پیہ بہتہ شریر کہ کاشہ نہ زبان
 میانہ منہ گزشتہ شریر ز کتہ ماجہ کن
 شریر چ متا کو نہ پڑ تلبد تراوان - (۵)

ही मनु यथ शरीरस प्यठ न एतिवार,
 बुय खोराक वि अंगनुक या पंधी ख्यवाना
 कमि वल्लु कथ जायि, किथु पाठ्य कमि
 पैयि पथर शरीर कर कोह न जानान ॥ तौक,
 मथानि मनु गव् शरण जगंतुचि माजिकुन,
 शरीरच ममता कोनु नु जल्द त्रावान ॥ ५ ॥

अनाद्यन्ता भेद प्रणयसिक्कापि प्रणयिनी,

शिवस्यासीर्यत्त्वं परिणयविधौ देवि! गृहिणी।
सवित्री भूतानामपि यदुदभूः शैलतनया,
तदेतत्संसार प्रणयनमहानाटकं सुखम् ॥६॥

آدِ اَنْتِ رُوسِ بِيَمِ سِيَدِ رُوسِ پَرِ سَوْرُوپِ
اَسْتَه تَه جِهَكِه شِيُو سَنَرِ پَرِ يَمِ رُوپِ
دِلُو اَنَه وِلْدِي كَنِي هِي دِلُو عَه حَكِه
تَس مِهَادِلُو سَنَرِ گَرِ اَمِنِي رُوپِ
هِي مِهالِه پَتِري جِيُونِ كَرانِ تَرِ پَادِ
سَمسارِ لِيلا چِه چُونِ عَشْتِه رُوپِ (۶)

आदि अन्तु रोस बैयि बेदु रोस प्रेयि स्वरूप ,
आसिथ ति क्ख शेवु सन्ज प्रयमु स्वरूप ।
व्यवाह वेदी किन्थ ही दीवी क्ख ;
तस महादेवु सन्ज गृहणी रूप ।
ही हिमाल पुत्री जीवन करान च्चु पांदु ,
सन्सार लीला वि चीन जशनु रूप ॥ ६ ॥

—ॐ—

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति! सदन्त्ये विदुरस-
त्परं मातः। प्राहुस्तव सदसदन्त्ये सुकवयः॥

परे नैतत्सर्वं समभिपद्यते देवि ! सुधिय-
स्तु देतत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे ॥
(४७७)

ہی دلو کی کینہ جی وناں ترے تئو روپ
کینہ جی وناں سہ کینہ استہ روپ
کینہ جی وناں تہ کھوتہ تھو سو روپ
کینہ وانا وناں سہ استہ روپ
کینہ جی وناں اتر واجہ تر آسہ وناں
کینہ وناں یہ سو رے چچہ چون بھولہ روپ

ही दीवी केह की बनान चैं तत्त्व रूप,
 केह की बनान सथ केह असथ रूप ।
 केह की बनान थदि खोतु धौद स्वरूप मान,
 केह दाना बनान सथ असथ रूप ।
 केह की बनान अनिर्वान्य जू आसबुन,
 केह बनान थि सोरुय कुचीन फोलन रूप ॥
 (7)

तद्विस्फोटिज्योतिर्द्युति दलित षष्ठग्रन्थि गहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टि वपुषा॥

किमप्यष्टात्रिंशक्तिरप्यसकली भूतजननिं,
भजेधाम श्यामम्कुचभरनतं बर्जरकचन ॥
«ट»

करोरु वुजमलि समान चान्च दिफती ,
कठिन्यन शन गन्डन चटिथ दख अचान ।
स्वादार् चकरस बेयि तीर नेरान ,
अमरुथतु वर्षरा स्वरूप किन्य वसान ।
३४ कलारूप जगथ बेकसाविथ ,
तनु बारि नमिथुय केशा चै चमकान ।
तथ श्यामरूपस ही माज बवानी ,
गरि गरि रोजुहा ब सीवा करान ॥ ४ ॥

चतुष्पत्रान्तः षड् दलभाग पुटान्त स्त्रिवलय,
स्फुरद्विद्युद्वह्निद्युमणि नियुतामद्युतिभुते।
षडश्रं च भित्त्वादौ दशदलमऽथ द्वादशदलं,
कलाश्रं च द्वयश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते॥

((६))

चित्तं दले कमलं नैर्निर्भरं शिखरं
त्रिकूलं मन्त्रसागरं त्रिवारं सरयाकारं
वृज्जमलं चमकं जनसायु बंधसिंघयिजनं
शक्तीकुण्डलिनी तंली नु चमकान् ॥
नैर्निर्भरं दले कमलं नैर्निर्भरं शिखरं
त्रिकूलं मन्त्रसागरं त्रिवारं सरयाकारं
वृज्जमलं चमकं जनसायु बंधसिंघयिजनं
शक्तीकुण्डलिनी तंली नु चमकान् ॥
नैर्निर्भरं दले कमलं नैर्निर्भरं शिखरं
त्रिकूलं मन्त्रसागरं त्रिवारं सरयाकारं
वृज्जमलं चमकं जनसायु बंधसिंघयिजनं
शक्तीकुण्डलिनी तंली नु चमकान् ॥
नैर्निर्भरं दले कमलं नैर्निर्भरं शिखरं
त्रिकूलं मन्त्रसागरं त्रिवारं सरयाकारं
वृज्जमलं चमकं जनसायु बंधसिंघयिजनं
शक्तीकुण्डलिनी तंली नु चमकान् ॥

चतुशदल कमलं मंजु नीरिथ षठ् दलस,
त्रिकूलस मंजु साडुत्रिवार सरयाकार।
वृज्जमल चमक जन सायु बंध सिंघयिजन,
शक्ती कुण्डलिनी तंली नु चमकान् ॥

षठदलु षट्ठि दशदलु पत् द्वादशदल,
 पत् षोडशदलु प्यठ द्वि नैरान ।
 द्वादलु मन्जु द्रामुचि तस कुण्डलिनी,
 ही गिरजी कुस तथ स्वरूपस नमस्कार
 करान ॥१॥

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः,
 परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमऽपरे ।
 चतुराणामप्येषामुपरि किमऽपि प्राहुरपरे,
 महामाये । तत्त्वं तव कथमऽमी निश्चिनुमहे ॥

॥२०॥

کیئہ گمانی و نان ترے ۳۴ تتو روپ
 کیئہ گمانی و نان ترے یرمہ شیو روپ
 کیئہ و نان چھی مارج شیو کھتی روپ
 کیئہ و نان امہ کھوتہ تھو چھ چون روپ
 کیئہ و نان تھو کھوتہ تھو کستانی سور روپ
 ہی مہا مایا کھتہ پاتھی بنہ استہ لشیہ
 کس سنا ا لوک کچھ چون مارج سور روپ
 ॥۱۰॥

कैहं ज्ञानी वनान त्रै ३६ तत्त्वरूप,
 कैहं ज्ञानी वनान त्रै ब्रह्म शैव रूप।
 कैहं वनान द्वी त्रै मांज शिव शक्ति रूप,
 कैहं वनान अमि खोतु थोद कु चोन स्वरूप।
 कैहं वनान धादि खोतु कुस्तान्य रूप,
 ही महामाया किथु पाठ्य बनि असि निश्चय।
 कुससना अलौकिक कु चोन मांज स्वरूप॥
 —ॐ— (१०)

षडध्वारण्यानी प्रलयरविकोटि प्रतिरुचा,
 रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम्।
 वितन्वानः शैवं किमपि वपुर्हिन्दीवररुचिः,
 कुचभयामानम् शिवपुरुषकारो विजयते ॥
 «११»

شہ دتہ سوُس حَبَنُگل پِر لے کالس پیٹھ
 کرور دفتی سوُس تہ پِر ز لائے
 پیٹھن بگھتہن یم چائین تہ رتن
 پیٹھ حقوان مستک چھیکھ تہن رجھان
 شہو سنہر کوستانی سوروپ تہ دفتی سوُس

گیان کربا تہ بار شہتہ ترے شوبان ۶
 شیو ستیر پور شہ کار حکمہ آج تر آسود
 تھتہ شکستہ روپس جس بے پیر نام کران ॥

शिवति सोस जंगल प्रलय कालस प्यठ,
 करोर दिफती सोस च प्रजलान ।

पनुन्यन बरवत्यन विम चान्यन चरणन,
 प्यठ थवान मस्तक क्ख तिमन रक्खान ।
 शिवु सन्ज कोस्तान्य स्वरूप चे दीपती
 ज्ञानु क्रिया तनुवरि नमिद्य चे शूबान, सोस,
 शिवु सन्ज पोरुषकार क्ख माज च आसुक्क्य,
 तथ्य शक्ती रूपस कुस वं प्रणाम करान ॥

(11)

प्रियङ्गु श्यामाङ्गीमऽरुण तरक्यः किसलवां
 समुन्मीलन्मुक्ताफल बहुलनेपथ्य कुसुमाम् ।
 स्तनद्वन्द्वस्फार स्तवकनमितां करूपलतिकां,
 सकृदध्यायन्तस्त्वां दधति शिवचिन्तामणि-

पदम् ॥१२॥
 پیکہ پوشہ پامٹی شامہ سہ ندر شیر سو

سوہرخ و ستتر چمکہ ڈدار آئی ۴ ۴ ۴ ۴
 مچھوڑ مینہ مونختہ بیسہ پوشہ لباسہ سوس
 تنہ بارہ نمکی تھے تہ شوشانی
 ہی دیوی چمکہ ڈدار آئی ۴ ۴ ۴ ۴
 لیس اگر لٹہ چون دیان دار آئی ۴
 مے شیو روپی چنستا من سرتین ۴
 چاہہ دیاسہ کنی چھہ پراوانی - (۱۲)

پिंगु पोशि पाठ्य श्याम, सेन्दर शरीर सोस,
 सोरख वस्त्र छख त्रु दारांनी ।
 फौल्मुलि मोखतु बेधि पोशि लिबासु सोस,
 तन बारि नेमिधुव त्रु शबांनी ।
 ही दीवी छख त्रु कल्प धीर आसुवन्य,
 युस अकि लटि चीन द्यान दारांनी ।
 सुय शरीरु रूपी चिन्ता मन रत्न,
 चानि दयावि किन्य कु प्रावांनी ॥ 12 ॥

प्रकाशानन्दाम्यामविदितचरीं मध्य पदवीं,

प्रवीशी तद्दुद्धं रवि शशि समाऽख्यं कवलयन्।
 प्रविश्योर्ध्वं नादं लय दहन भस्मीकृतकुलम्,
 प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमऽम्ब प्रविशति॥
 (१३)

گیانہ کنی کریا پی کنی بھیپر تھ سشمنا
 اندر اڑتھ دوشونی گراس کران
 ارد نادس اڑتھ ژبھ و بمرشہ اگنہ کنی
 سارنے چکران بسیم چھ کران
 تمہ پتہ چیانہ انوگرہیہہ کنی سادک
 اوناٹہ شوپیدس سپٹ چھ واتان
 (۱۳)

ज्ञानं किन्त्य क्रियायि किन्त्य फीरिथ सुशमन
 अन्दर अचिथ दोशवुनी ग्रास करान ।
 उर्दनादस अचिथ च्यथ व्यमर्श अग्न किन्त्य,
 सारिनुय चकरन बसुम छि करान ।
 तमि पतु चानि अनुग्रह किन्त्य सादक,
 अविनाशि शिव पदस प्यठ छि वातान ॥ १३ ॥

षडाधारावर्तैरपरिमित मन्त्रोर्मिपटलै-

श्चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद् दैवतभूषैः ।
क्रमस्तोत्रोभिस्त्वं वहसि वरनादाऽमृत नदीं,
भवानि ! प्रत्यग्रा शिवचिद्ऽमृताब्धि प्रणयिनी ॥
॥२४॥

५ چکر آولہ نشہ منتر ملکوتیہ
نڈرای کفہ نشہ میلہ تر نیران
کرم روپہ گاڈو نشہ کر مکہ ڈری پاؤ نشہ
پر ناد امرتہ روپہ میلہ چھکھ وسان
ہی ماسج واتان چھکھ ٹوس ڈری پاؤس
شور روپہ تر پتہ سودرس منتر تر روزان
(۱۳)

6 चक्र आवलुनि निशि मन्त्र सुलकव निशि,
मुद्राई कफि निशि येलि च्चु नेरान ।
कर्म रूपु गाढव निशि कूमकि दर्धयावु निशि,
परुनाद अमृत रूपु येलि छख वसान ।
ही मांज वातान छख नविस दर्धयावस,
शिव रूपु च्यतु सोदरस मंज च्चु रोजान ॥
(14)

महीपाथो वहिश्चसनवियदात्मेन्दु रविभि,

वपुभिर्ग्रस्तांशैरऽपि तव कियानऽम्ब।

महिमा।

अमून्यालोकयन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतः।

मऽवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योम

वपुषि ॥३॥

پڑھو، جل، اکن، والو، تہ آکاش
 سریہ، ژندرمہ بیہ زیلو آتما
 امشو کئی ندآ و مئی چھی ژئے یانے
 کوتاہ چھ ماج بو آ فی چون مہسا
 چانیس پر مہ آکا شکس سور و لیس
 منتر چھینیم تہ کئے وو جودس یوان (۱۵)

पृथ्वी, जल, अंश, वायु तु आकाश,
 सिययि, चन्द्रम्, वेद्यि जीव आत्मा,
 अमशव किन्य बनाव्यमुत्य द्वी चै पानय।
 कोताह कु माज बवान्य चीन महिमा,
 चानिस परम्, आकाशकिस स्वरूपस,
 मंज दिनु यिम ति कुनि वोजूदस यिवान॥

(15)

मनुष्यास्तिर्यन्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
 भवासम्भोद्यो मानं त्रिगुण लहरी कोटिलुखिमं
 कटाक्षश्वेदत्रक्वचन तव मातः करुणया
 शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्॥

(२६)

मनश्, चारवाये ते दिलो त्रिलोकी
 समसार सौंदरस मंज छि फट्ठमुत्थ
 करोर बज्ज सधरज तम् लहरन मन्ज
 त्रिगुण मुत्कन मंज डुलु कि गामुत्थ
 प्रेमोपद दियाये चाने कनी च्छे प्प्रावान् - (५)

मनुष्य, चारवाय, तु देव त्रियलूकी
 समसार सौंदरस मंज छि फट्ठमुत्थ ।
 करोर बज्ज सधरज तम् लहरन मन्ज,
 त्रिगुण मुत्कन मंज डुलु कि गामुत्थ ।

बौदवय चिमन मंज बनि कांसि चोन कटाह,
ही माता सु जीव अदु हु वातान ।

परमानन्दु किस स्वरूपस्य हु जलदुय,
परमपद दयायि चानि किन्त्य हु प्रावान् ॥
(16)

कलां प्रज्ञामऽद्यां समयमनुभूति समरसां,
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम् ।
प्रमाणं निर्वीणं परममतिभूतं परगुह्यं,
विधिं विद्यामाहुः सकलजनीमेव मुनयः ॥
॥२७॥

ہی زگت ماما منیشور چہ ترے وتان
کبریا، بود، آد انوبو شمتا
گو بر پریم پرا وینے وہ پدیش شوکتا
پرمان، نیرمان، پرتیکشش تہ آتومان
رسنہ، گیان، مری یادا بیہ ویدا شکو
زگت ماما چانی سوروپ ایم زمان (۱۷)

ही जगत माता मुनीश्वर वि ज्ञेय वनान्,

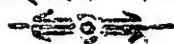
कथा, बौद, आदि अनुभव समताः

गोरु परमपरा विनय वोपदीश शिवकथा,
 प्रमान, व्यर्मान प्रत्यक्ष तु अनुमान ।
 रहस्य, ज्ञान, मर्यादा, व्यैयि विद्याशक्ति,
 जगत माता चानी स्वरूप विम वनान् (११)

प्रलीने शब्दोद्ये तदनुविरते बिन्दु विभवे,
 ततस्तत्त्वे चाष्टद्वनिभिरनुपाधिन्युपरेते ।
 श्रिते शाब्दे पर्वण्यनुकलित चित्मात्र गहनां,
 स्वसंविर्त्ति योगी रसयति शिवाख्यां परतनम् ॥ (१२)

شید سوره رکاوتہ بیتہ بید و بیو گالہ
 یث طغیان ترہہ اکاشش منزین کرہ
 تنووس بیٹہ آتمہ سورولیس دوہ یاد رولیس
 ناد رؤیہ پیر امرتس منز رکاوتہ
 شکستہ مارگل آشریہ چہ ہم رطان
 شریتن ماترک رہشیہ ہم و سہش کران
 سا باوک شو سورولیس تم پڑادان
 تھدس شو سورولیس تم سواد کران (۱۸)

शब्दसमूह रुकाविथ पतु ब्यन्द ब्यबू गांलिथ,
 येष्टु ज्ञान च्यथ उभाकाशस मज्जं लीन करिथ।
 तत्वस प्यठ आत्म स्वरूपस दोपादि रस्यतिस,
 नाद रूप पर अमर्यतस मज्जं रुकाविथ।
 शक्ति मार्गिक आश्रय द्वि यिम रटान,
 चेतन मात्रक रहस्य तिम व्यमर्श करान।
 स्वाभाविक शिव स्वरूपस तिम द्रावान,
 थंदिस शिव स्वरूपस तिम स्वाद करान॥



(18)

परानन्दाकारां निरऽवधि शिवैश्वर्यं वपुषं-
 निराकार ज्ञान प्रकृतिमऽनवच्छिन्न करुणाम्।
 सवित्री लोकानां निरतिशय धामास्पदपदां,
 भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम्॥

(१९)

خَدِ رُوسِ يَرِمِ آئِنْدِ رُؤِپِ چُونِ دِيَانِ
 شَيُو اَلِشَوْرِي رُؤِپِ لَيْسِ مَانِ
 نِهرو پکارِ گِيَانِ سَوَسِ خَدِ رُوسِ يَرِمِ
 زِلُو اَدِکَرُونِ لَيْسِ تَرِ مَانِ

تس برابرے چھے ٹوکھئے یا سمسار
 لیس کئے روپہ چانی سپا کران - (19)

हृदयैस परमानन्द रूप चीन ध्यान,
 शैव ऐश्वरी रूप यस मानान ।
 न्यरविकार ज्ञानु सौस हृदयैस दवा रूप,
 जीव पादु करवुन युस च मानान ।
 तस बराबरुय क्य मोक्ष या समसार ,
 युस कुनि रूप चान्य सीवा करान ॥ 19 ॥

~~~~~

जगत्कायेकृत्वा तमऽपि हृदये तच्च पुरुषे,  
 पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्य गहने ।  
 तदेतज्ज्ञानाख्ये तदऽपि परमानन्द विभवे,  
 महा व्योमाकारे ! त्वदऽनु भवशीलो विजयते ॥  
 (20)

ترگت کایایه مندر چکھ ترزے تر آسہ و  
 پرولیس مندر چکھ آتمہ دیور وپ  
 آتمہ شمس مندر بند و تر چکھ  
 بندش مندر چکھ پردہ ناپ وپ



نادر من گشتان رُوب چون آسُون  
 گشت من گشت رُوب و پُور رُوب  
 ہی ز گشت ماما جی کار — تیمنے  
 یم کران چون آلو بو مہا کاشہ رُوب (۲۰)

जगत कायायि मज्ज ह्रस्व हृदय च आसुवुन  
 हृदयस म ह्रस्व आत्म दे रूप ।  
 आत्म पोरषस मज्ज बिन्दु च ठीकिथ ,  
 बिन्दुस मज्ज ज्ञान रूप चोन आसुवुन ।  
 नादस मज्ज ज्ञान रूप चोन आसुवुन,  
 ज्ञानस मज्ज परमानन्द वेंबू रूप ।  
 ही जगत माता जयकार तिमनुय,  
 यिम करन चोन अनुभव महा काशि रूप॥  
 (२०)

विद्ये विद्येवेद्ये विविध समये वेद जननि,  
 विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके ।  
 शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनिधे,  
 शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरूपयाम॥  
 (२१)

ہی کریا شکتی، گیان شکتی قسم قسم  
 سداست آزار روپی ہی ویدیا  
 ہی وحیتر روپی چکر ترز گیت آری  
 و ہنیر کئی تر پیرا آئی ویدیا  
 شیو آگنیا یہ ہنیر ترے سو باو روپی  
 شیو پد دیوان ترے ہی مکاتا  
 سو کھ کے خزانہ چکر آسوی تر ہی مانج  
 بے حد شکتی دتہ مئے ہی مکاتا! (۲۱)

ہی کریا شکتی، ج्ञान शक्ति कस्म कस्म;  
 सिद्धान्त आचार रूप ही बौद्ध माता ।  
 ही विचित्र रूपी छव च जगत्तुच आद्य,  
 व्यनयि किन्च च प्रावर्णी बीदुच सार ॥  
 शीव आगिन्यायि हुज्ज चय सोबाव रूपी,  
 शीव पद दिवान चय ही माता ।  
 सोख कुय खजानु छव असुन्य च ही मान,  
 वे हद करती दित में ही माता ॥ (21)

विधेर्मण्डं हत्वा यदकुरुत पात्रं करतले,  
हरि शूल प्रोतं यदऽगमयदंसाऽऽभरणताम्।  
अलंबक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब। गिरिशि,  
शिवस्थायाः शक्ते स्तदिदमऽखिलं ते -  
विलसितम्॥१२॥

بَرَمَا سُنْدَ كُلِّ الْكَرْمَةِ تَهْتَهُ كُلْسُ  
پِنِهْ نِهْ اَتْكُكْ پَاتِرْ بِنَاؤُتْ تَهْ  
پِنِهْ نِهْ پِچِيكِي كِهْ بِنُوُونْ زِيُوَر  
نَارَايَن تِرِ شُولَسْ پِٹْ وَ پِٹْ تَهْ  
سَنَجِنْتِ كھوتِ تِهْ سَنَجِنْتِ زِيُوَر تِهْ  
ہوٹ لیس پِنِهْ نِهْ شُولِ پِٹْ رُوُونْ  
شُولِ پِٹْ پِٹْ پِٹْ پِٹْ پِٹْ پِٹْ  
یہ سورے چولے و پلاس چھ آمہ وُن (۲۲)

ब्रह्मा सुन्द कलु अलग करिथ तध कलस,  
पनुने अधुक पात्र बनाविथ ।  
पनुने फेकि कुय बनोवुन जेवर ,  
नारायण नृशूलस प्यठ वुरिथ ।



सखत् खोत् सखत्तु जहर्किन्ध्या तन्म्यशिवन्,  
 होट युस पनुनुय शूबरोवुन ।  
 शिवस प्यठ ठेकिमुचि अमिशक्ती हुन्द,  
 यि सोख्य चोनुय व्यत्तास हु आसुवुन ॥  
 (22)



विरिञ्चयारुव्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वम-  
 त्रिलोकीं रुद्रारुव्या हरसिविदधासि श्वरदशाम् ।  
 भवन्ती सादारुव्या शिवयसि च पाशौघदलिनी,  
 त्वमेवैकाङ्गेकामऽवसि कृतभेदैर्गिरिसुते ॥ २३ ॥

برہماناو کنی کران یاد تر یلوی  
 نارائیمہ ناو کنی چھکھ تر تھہ زجھان  
 رو دہ ناو کنی چھکھ ترے کران شہماہ  
 ایشور دشا چھکھ ترے واوان  
 سید ایشو ناو کنی زگٹس دواڑا سوکھ  
 پاشن مہندو شموود ترے گھا  
 ہی ہمالہ پتہری ترے گھٹی آستہ  
 بیون بیون کامپو کنی انیکھ ترے بہمان - (۲۳)



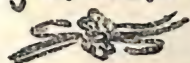
ब्रह्मा नावुकिन्य करान नु पादु त्रैयलूकी,  
 नारायण नावुकिन्य छेख नु तथ रत्नान।  
 रुद्र नावुकिन्य नुय छेख करान समुहार,  
 ईशार दशा छेख नुय दावान।  
 सदा शिव नावुकिन्य जगतस दिवान सोख,  
 पाशान हुन्ध समूह नुय गालान।  
 ही हिमालु पुत्री नुय कुनी ओसिध,  
 ब्योन ब्योन काम्यव किन्य अनीख नु  
 वासान (२३)

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायै रवि मनाक,  
 अशक्ये संस्पृष्टुं चकित चोकेतैरऽम्ब सततम्।  
 श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे,  
 कथं ते विन्दन्ति पदकिसलये पार्वतिं पदम्॥  
 (२४)

ہی ماما یم منیشور جی منہ کہو  
 گلہ بہتو دوشو سوسو آسہ وئی  
 تم تہ گفتوڑی کھوڑی باج چاہن یادن  
 سیرش کر لیس سوسو جی نہ بہک وئی  
 وہ پہ لیس سوسو باو کہی تھن پانھی پوئے  
 چاہن تر نہ مکلی تل جاے پراؤن (۲۴)

ही माता यिम मुनीश्वर द्विय मनु वयो ,  
 गत्यमुत्यन दूषत सौख्य आसुवुन्य।  
 तिम ति खूव्य खूव्य मांज चान्यन पादन,  
 सपश करुनल न्यठ द्विय नु ह्यकुवुन्य।  
 वीपनिशद सोबारु किन्य कठिन्य पोव्य  
 पकिथुय तिम ,

चान्यन चरनु कमलन तल जाय प्रावुन्य॥  
 ((24))



तडिद्वल्लीं नित्यामऽमृत सरितं पार रहितां,  
 मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमऽगुण ग्रन्थि-  
 गहनाम् ।

गिरां दूरां विद्यामऽवनत कुचां विश्वजनी-  
 म पर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो-  
 भगवतीम् ॥२५॥

وَرَمَلَهُ رُؤْيَ اَيَار اَمْرِي شَم رُؤْيَ  
 نَيْرَمَلَهُ رُؤْيَ رَمِي تَرِكُونَا تَمَك رُؤْيَ  
 دَأَنِي لَشَم دُور تَرِي هَز وَ يَرِيَا سَوْرُؤْيَ  
 غِيَان كَرِيَا تَنُو نَسِيْت نَزَكْت مَاتَا رُؤْيَ

بھی وہاں ستھ زن ہی دیوی چائی  
 ہم روپ تو بیہ انتہی لکھی روپ (۲۵)

वृजमलि रूप अपार अमर्युत नदी रूप,  
 न्यर्मल चंद्रमणि त्रुगोणात्मक रूप ।  
 वाणी निशि दूर ज्ञेय धाजि विद्या स्वरूप,  
 ज्ञान क्रिया तनव निमित्त जगत माता रूप ।  
 वही बनान सद्यजन ही दीवी चान्य,  
 यिम रूप तु बैदि अन्नतु लक्ष्मी रूप ॥  
 (२५)

शरीरं क्षित्यम्यः प्रकृते रचितं केवलमिदं,  
 सुखं दुखं चायंकलयति पुमांश्चेतन इति ।  
 स्फुटं जानानेपि प्रभवति न देही रहयितुं  
 शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते ॥  
 (२६)

پرتھوی، زل، آگن، والیو تہ آکاش  
 جے یمن یا نثر بو تن شیر بیان  
 سو کہ دو کہ امیک زانان پوریش جتن  
 نو مو د پا کھو زلو امیک آلو بو کران



ہی ہمالہ ستیری شریک اشکار  
چھینے زلہ چاہے آلو گز بیہ رؤس تراوان۔ (۲۶)

پृथوی، जल, अंगुन, वायु तु आकाश,  
कुच यिमन पांचू बूतन शरीर बनान।  
सौख दोख अम्युक जानान पोरुष चैतन,  
नौमुद पाठ्य जीव अम्युक अनुचव करान।  
ही हिमालु पुत्री शरीरुक अहंकार,  
कुनु जीव चानि अनुग्रेह रोस त्रावान॥  
(२६)

पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सदा गृहिणी  
वपुः पुत्री मित्रं धनमऽपि यदा मां विजहति।  
तदा मे भिन्दाना सपदि भव मोहान्धतमसः  
महाज्योत्स्ने मातृभव करुणया सन्निधिकरी॥  
(२७)

مول ماچ باے بند کسمیہ گز ہنی  
شیر پیر نیر منیر گز بیہ دنیہ  
بیہ وقتہ ترا دیم تہ وقتہ بے مہ  
اندکار سس جل جل تر بیوفی بن



ہاں پر گاشہ رو بہ کف غنیمت دیا یہ کنو جاچ  
نزدیک ٹھہرے ستموں کو مے پت - ((۲۷))

मौल मांज बाय बन्द नोकरतु ग्रहेणी,  
शरीर पुत्र मैत्र गरु बैधि दनु ।  
यैमि वक्तु जावनम तमि वक्तु वय मुह,  
अन्दुकारस जलुद जलुद वटुबुन्य बन ।  
महा प्रकाशि रूपु बनिथ दयायि किन्थ मांज,  
नजदीक ठहरिथ सन्मोख मै बन ॥२७॥

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदयः  
संदीप्य तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया।  
अनाद्यन्ता शम्भोरऽपृथग्ऽपि शक्तिर्भगवती,  
विवाहाज्जयासीत्यहहचरितं वेत्ति तवकः॥  
(२८)

ہی زگت مانا گوڑ سیلہ آسکھ  
دکھ پیرزا پتہنی تہے کو ماری  
دو شہ کی تر مہن مہن تہے تر او مہ  
پتہ ہنیکہ تہے ہمالہ ہستری

آدمی آنتہ رستوئی شمس شمس لہجہ چھکھک  
 زائہ تہ بیٹوں ہی شکھتی مگوئی  
 ولوایہ روس ور دور حقن ترغیہ شکر  
 تم چاہی فی حیرت رستوئی زانی - (۲۸)

ही जगत माता गोडु वेलि आसुख,  
 दहि प्रजापतु संज नुय कोमारी ।  
 दूषि किन्य कुनधन सुय चैय त्राविथ,  
 पतु बनेयख च हिमालय पुत्री ॥  
 आद्य अन्तु रसितिस तस शिवस निशुखनु,  
 जांह ति व्योन ही शक्ती भगवती:  
 व्यवाह रैस वर दोरथन जैय शंकर,  
 तिम चान्य चरित्र कुस जानी ॥ २४ ॥

—ॐ—

कणास्त्वद्वीपानां रवि शशि कृष्णानु प्रभृतयः  
 परम्ब्रह्म बुद्धं तव नियतमाऽनन्द कणिका ।  
 शिवादि हित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमुदे,  
 तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भावती ॥ २५ ॥

ہی دایو سیریہ ژند زمرہ بیہ اگن  
 چانہ دفتی ہنر چہ اکھ شہبہ  
 پیرم برہم چہ چانہ نیتر آنتہ ہنر  
 آسون چہ اکھ لوکٹ ہیشہ لیشہ  
 بشو ناخہ شند چہ ہنر برہموی شتوس تانی  
 سارنہ ژند لانی روت روزان  
 آفتر ژند چہ چون تاج لکھتین چکھ تہ  
 ہر دیر ہنر پیر کھو یا تھو چیکان - (۲۹)

ही दीवी सिंघयि चन्द्रसु बैयि अंगन,  
 चानि दीपती हुन्जि कि अख त्यम्बुरा ।  
 परं ब्रह्म कुब चानि नैत्यआनन्दु मंजु,  
 आसुवुन कुव अख लोकुट हिशलिश ।  
 शिवनाथ सुप्ति प्यठ पृथ्वी तत्वस तान्य,  
 सारित्व च कुण्डलिनी रूप रोजान ।  
 आश्वर कुचोन मांज बरुत्तेन कुख चय,  
 हृदयस मन्ज प्रखदय चमकान् ।  
 - ( 29 )



त्वया यो जानीति स्वयति भवत्यैव सततं,  
 त्वयैवेच्छत्यम्ब ! त्वमसि निखिला वस्व  
 गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम <sup>तनुः</sup> भवती,  
 तथाप्येवं हित्वा विहरति विशवस्येति  
 किमिदम ॥ ३० ॥

چائی کو زانان چائی کو ترهان سے  
 چائی کو سے شتو زرگت تھے بناوان  
 ترے چفکھ تس سوروپ چائی کو تھے سے  
 سامی باؤس پیٹھ و اتان  
 چانے یترضا یبر تیلہ سے چائیس  
 پر مہ آکاشس منتر لپن سپدان (۳۰)

चान्य किन्य जानान चान्य किन्य वद्वान  
 चान्य किन्य सु शेव जगत कुय बनावान। सुय  
 ज्ञय द्रख तस स्वरूप चान्य किन्य कुयसुय,  
 सामी बावस प्यठ वातान।  
 चाने यद्वायि तेलि सुय चानिस,  
 परमु आकाशस मंज लीन सपदान ॥  
 (३०)



पुरुः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं,  
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यम्-  
गुह्यम्।

दवीयो नदीयः सदसदिति विश्वम्  
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनहोम <sup>भगवती</sup> <sup>जननीम्</sup>  
॥३१॥

بُروْنَه بِيْتِهْ اَنْدَرِ شِيَرِ لُوكِ لُودِ مَوْتَ سَوَكِهْم  
شَو رُوْبِ شَكْمَتِي رُوْبِ كَفْتِهْ لُومُوْدِ رُوْبِ  
دُوْرِ نَزْدِيكِ سَمْتِهْ اَسْمَتِهْ رُوْبِ اَلِيْسِ زَكْتِ  
تَمْتِهْ سَرِ لَيْتِي سَمِيْقِي سَمِهَارِ تَرِكِرُوْدِي  
زَكْتِهْ اَكْنِيَا كَارِ تَرِ زَانِيَهْ يَوَانِ  
॥३१॥

ब्रोंठ पत अन्दर नेबर लूक बोड मोट सूक्ष्म,  
शिव रूप शक्ती रूप गुरु नैमट रूप ।  
पुरुः नदीयः सद्य असद्य रूपस्य सदागत,  
तद्य खेष्टीस्थिती समुहार च्च करवुन्ध,  
जगद्य आनन्द्याकार च्च जानुनु धिजानु॥  
॥३१॥

मयखाः पूरणीन ज्वलन इव तद्दीप्तिकशिका,  
 पयोधौ कुल्लोलप्रतिहितमहिम्नीव पृषतः।  
 उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तारिबककुलै-  
 र्भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशममऽनुकल्पं परवशाः॥

(३२)

سیر یسین کرین زن، انچه تهمین زن  
 سمندن لکن بهمنز پائے چکه زن  
 تیغ پاکی شو پیچید بر قوی شش و س تانی  
 بر قه کله پائش و حق و حق لے سیدان - (۳۳)

सिययि सुन्ज, किरण जन, अंगुचि त्वम्बरिजन,  
 समन्दरन मलुकन हन्जु पानय द्विकु जन।  
 तिथय पाठ्य शिवु प्यवु पृथ्वीतत्त्वस तान्य,  
 प्रथ कल्पान्तस वेश्य वेश्य लय सपदानः॥

(३६)

विद्युर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिस्सुरात्मादिनकरः॥  
 स्वभावोजेनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमऽनिलः॥  
 शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां,  
 विकल्पैरेभि स्त्वामऽभिदधाति सन्तो भगवतीम्॥

(३६)

ژندرمه، ویشنو، برهما بیہ سرورہ  
 مایا، سوباد، مت، زیو تہ آتما  
 آکاش، والو، شکتی، یم ناو  
 بید کن ویرس یم واتان  
 سخط زن یکو ناو کنی بیون بیون  
 ہی مانج بو آئی ژئیے جھی سمران — (۳۳)

चन्द्रम्, वैष्णो, ब्रह्मा, वैयि सिर्ययि,  
 माया, स्वबाव, मत, जीव तु आत्मा ।  
 आकाश, वायु, शिव, शक्ती, यिम नाव,  
 बीदु किन्य बीदस यिम वातान ॥  
 सय ज़न यिमव नाव किन्य व्योनव्योन,  
 ही मांज बवानी ज़ैय वी सुमुरान ॥ ३३ ॥

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदययादेशिकदृशा,  
 षडध्वहवान्तौघच्छिदुर गणनातीत करुणाम्।  
 परानन्दाकारां सषडिशिवयन्तीमपितनं,  
 स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवन्तीम्॥  
 (३४)



قہر رتی دیا یہ کہ گویا سب نظر کفر  
 ہم شکستہ ہا کہیں مگر شورش کران  
 تیغے شمشیر سے سوس سوساں اترکار  
 زیاہ کہی ہی مہاج چمکے گالات  
 پر مائید کے سونے کو دیوان پر تھمنے  
 تھے با اہوان مہاج چھی گئے پڑاوان

(۳۹)

کی دہرنتی دھاریہ کینہ گور سنجی نجر کینہ  
 یمن شاکتیاگس منج پرवेश کران  
 تیننوی شوبتی سولہ سمسار اندکار  
 دھاریہ کینہ ہی مہاج بھو جالان  
 پرمانندکوی سولہ دیوان جی تیننوی  
 تیننوی بامیہ مہاج دی نہ پڑاوان ॥ ۳۹ ॥



शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं सम-  
 त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिगुणगुणाः  
 अविद्या त्वम् विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमुपरं,  
 धृक्कृतस्त्व त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे ॥  
 (३५)



تھے جھکے شہوت تھے تھے چھکے شکھتی ۴  
 تھے شہوت تھے تھے زانیہ فی جھکے تھے  
 تھے آتما جھکے وہ لپیش جھکے تھے  
 تھے انیما دھکے آتما سیدی تھے  
 تھے اوڈیا ویڈیا رنگک پیدار مہ  
 تھے شہر کاہہ شہر چھہ اسی بیون زانان (۳۵)

चय कख शिव तय चय कख शक्ती,  
 चय समय तु तथ कख जानुनय चय।  
 चय आत्मा कख वोपदीश कख चय,  
 चय अनीमादिख अष्ट सैदी चय ॥  
 चय अविद्या विद्या जगतुक पदारथ,  
 चय निशि कांह तरच दिनु अस्य व्यौन जाना ॥३५॥

असंख्यैः प्राचीनैर्जननी जननैः कर्मविलया-  
 द्भूते जन्मन्यन्तं गुरुबपुषमासाद्य गिरिशम्।  
 आवाप्याज्ञां शैवीं क्रमत्तानुरङ्गपि त्वां विदितवान्  
 नयेयं त्वत् पूजास्तुति विरचनेनैव दिवसान् ॥  
 (३६)

ہی ماما استنکھید پرائیں زمین ہستی  
 کرم گلینہ کئی وہ فی زمین پرائیں ہستی  
 گورو سٹو سورویہ لہجہ شکھی سورویہ پرائیں ہستی  
 وارہ پاٹھو مانج چون سورویہ پرائیں ہستی  
 چانی تو تاتہ پوزا گروں بڑروں ہستی  
 تھقی سٹو ترہینہ بڑوین دین کٹاوتھ (۳۶)

ही माता असंख्य प्राणान् जन्ममन हृद्य,  
 कर्म गलनु किन्त्य बोन्त्य जन्म प्राविथ ।  
 गौरु शिव स्वरूप लब्धि शक्ती स्वरूप प्राविथ,  
 वारु पाठ्य मान्ज चीन स्वरूप जानिथ ॥  
 चानी तोता तु पूजा करवुन बं रोजहय,  
 तैथ्य सूर्य धनु बं धन दान कटाविथ ॥ (36)

यत् षट् पत्रं कमलं उदितं तस्य याकर्णिका-  
 योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम् ।  
 तस्मिन्नऽन्तः कुचमनतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां,  
 श्यामाकारां सकलजनैः सन्ततं भावयामि ॥ (३७)

سوادِ شتران تر کُرس منہ شٹہ دل  
 نیمپوش لیس مجھے مائج آسہ وُن  
 تہہ عشر آسہ وُن لیس چھ بہرک کوش  
 بہر کوشس پہٹہ او مسکار چ جائے  
 او مسکار چہ حایہ پہٹہ واس کہو نہ  
 یوسہ کٹہ لینی چاکہ تہی تہ روزان  
 تہی شامہ سو ندر مورتی دارو نہ  
 زگت مایہ تر یے نہتہ بہ سمران (۳۷)

स्वादिष्टान चकरस मज्ज षष्ठदल,  
 पम्पोश युस हुय मोज आसुवुन।  
 तथ सन्ज आसुवुन युस हु बीजुक कोश,  
 बीजु कोशस प्यठ ओंकारुच जाय,  
 ओंकारुचि जायि प्यठ वास करुवुन्य;  
 योस कुण्डलिनी ह्रस्व तंत्य च रोजान।  
 तस्य शाम् सोन्दर मूरती दारुवुन्य,  
 जगत मातायि त्रैय न्यथ व सुमरान ॥





भुवि पयसि कुशानौ मारुते खे शशाङ्के,  
संवितरि वज्रमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका ।  
वहति कुचभराम्यां या विनिम्रायि विश्वं  
सकलजननि सा त्वं पाहिमानित्यवश्यम्॥

(३८)

پُر تقوی، زل، اُگن، والو، آکاش  
میری پر زل زل زل زل زل زل زل زل زل زل  
حکیم کئی شکستی گیان کر یا روپ  
تنہ بار نمو ہے زگت تہ داروہ  
سوے حکیم ساری زگت تہ مانتا  
اوش پاٹو زچہ تہ کر سون پالن - (۳۸)

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश,  
सिंघयि चन्द्रम्, यजमान विमन आह्वः  
द्वय कुनी शक्तीज्ञान क्रिया रूप,  
तन् तारि नमिद्युय जगत च दारुवन्ध,  
सोय द्वय सारी जगत च माता,  
अवश पाठ्य रह च कर सोन पालन॥

(३९)

॥३३॥





काल ओवरुद्ध पाठ्य शाम रूप सौस्तुय  
 कटाक्ष किन्त्य दुश्मननकुलन बध दिवान्  
 उग्रकस्य प्यठ चन्दरम दौरसुत शंख चक्र  
 तलवार त्रिशूल अथन मंज योसुदारान्  
 त्रै नेधुर दारुवुन्य सहस्र खसिध सार्धसुय  
 त्रिबवनस्य पननि तीज्ज पूरनावान्  
 द्यान करिब तस जय नाव् सौस दुर्गायि हुन्द  
 देव नमान सेदी यक्षुन सेवादासकरान्  
 येषाञ्चपि बोले :- जब देवी के हाथों महिषासुर  
 सेना सहित मारा गया तो इन्द्र और सब  
 देवता प्रसन्न होकर साष्टांग उन्डवत करके  
 इस प्रकार भगवती देवी की स्तुती करने  
 लगे ।

ऋषिरुवाच:-

ॐ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्यं  
 तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिवले च देव्या ।  
 तां तुष्टुवः प्रराति नम्रशिरो धरांसा ।  
 वाग्भिः प्रहृष्य पुलकोद् गमचारुदेहा ॥

ہی دہوی میلہ مارے تھکے تھے تم دوست  
 راکھیں سینا یوں سے بلوان  
 وانی کنی پڑمن کرکھ تھیں ران تہ  
 دیو و کلمہ تو مراد تھ کرکھ تھے پر نام  
 پرستہ کنی تھن رُم رُم خود و تلیس  
 سو ندر شریر سو سی آ سی تم پرزلان (۱)  
 ही दीवी येति मांयथक चैतिम दोष्ट-  
 राक्षस सैना योस बलवान ।  
 वाणी किन्य प्रसन्न करेख च नन्द्राजन तु  
 दीवव कलु नो मरा विथ कोरुख  
 चैथ प्रणाम ।  
 हरषि किन्य तिमन रुम रुम थोद वोस्सेयि  
 सोन्दर शरीर सोस्य आस्य तिम  
 प्रजलान ॥

देव्या यथा तत्तमदं जगदात्म शक्त्या,  
 निःशेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्या ।  
 तामऽम्बिकामखिलदेवं महर्षिपूज्यां,  
 भवत्यानतास्म विदधातु शुभानि नानः॥  
 (२)



ہی دلوںی ترے رگت چھے ویاہیت  
 سورے جانہ شکھتی سستی چھے شوہان  
 سارنے دلون ہنسر شکھتی مہنہ سنوہ  
 چھے آج چھے مسرور ویاہیت  
 یس کران چھ پوڑا ساری دلوتانہ  
 بیہ رون تم ریشی آہیت  
 گلی گنڈھ چھ کران پر نام تھیوے  
 سورے آج کری تنم کلپان میون (۲)

ہی دیوی ترے جगत کھنکھنات  
 سورے چانی شکتی سوتھ کھنکھنات  
 سارینہ دیون ہننن شکتی کھنکھنات  
 کھنکھنات چھنکھنات سوتھ کھنکھنات  
 یس کران کھنکھنات پوڑا ساری دیوتانہ  
 بیہ رون تم ریشی آہیت  
 گلی گنڈھ کھنکھنات کران پر نام تھیوے  
 سورے آج کری تنم کلپان میون (۲)

यस्याः प्रभावमस्तुलं भगवाननन्तो,



ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमऽलंबलं च ।  
 सा चण्डिकाऽखिल जगत्परिपालनाय,  
 नाशाय चाशुमभयस्वमर्तिकरोऽस्तु ॥ ३ ॥

सुखी सुन्दर भाव हृदय हृदय स आशुन,  
 हृदयान ते शक्तिशाली हृदय हृदय  
 ब्रह्मा ते शंकर हृदय ते शक्तिशाली  
 तावत् सौख्य महिमा चीन जानान ।  
 सोय चण्डी दीवी रेख तनम मे,  
 योसु सारिसुय जगतस्य हे पालना

ब्रह्मा सुन्द प्रभाव हृदय हृदय आशुन,  
 जगवान ते शक्तिशाली हृदय हृदय  
 ब्रह्मा ते शंकर हृदय ते शक्तिशाली  
 तावत् सौख्य महिमा चीन जानान ।  
 सोय चण्डी दीवी रेख तनम मे,  
 योसु सारिसुय जगतस्य हे पालना

दीतनम तिक शोब बोद सोय दीनी।  
 येमि सत्य अशोब बय नाश सपदान ॥  
 (३)



या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेषु लहमीः  
 पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।  
 श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्व लज्जा-  
 तां त्वां न तास्म परिपालय देवि विश्वम्।  
 (४)

باگيه وان گرن مندر لويه لکھي رواب  
 يا اي گرن مندر لويه لکھي رواب  
 سته پورشن شردا کو لويه رشن لزا  
 تشو د لويه رشن بود رواب رولاني  
 پالیا کرتہ ساری ہے زکتنس مانج  
 ژيے چھيے گل گندرتہ پر نام گرائی - (۵)

बाग्यवान गरन मन्ज वोसु लहमी रूप  
 पापी गरन मन्ज वोसु अलहमी।  
 सद्य पोरशन श्रद्धा कोल पोरशन लज्जा  
 शोद पोरशन बोदिरूप रोजानी।

पालना करतु सांरिसुय जगतस मांज !  
 त्रैय दुसय गुल्य गंभिडथ प्रणाम करानी ॥  
 (4)

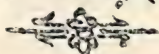
किं वरायाम तव रूपमऽचिन्त्यमेतत् ,  
 किंचाति वीर्यमऽसुर ह्यकारि भूरि-  
 किंचाहवेषु चरितानि तवाद्भूतानि ,  
 सर्वेषु देव्यसुरदेव गणादिकेषु ॥ ५ ॥

کیاہ کر ورن چوں سوروپ ہی مآج  
 لیس روپ چوں آسہون نہ سوراہی  
 کیاہ کر ورن چوں بل تہ سامرثہ  
 لیس راگھسن جہ ناش کرانی  
 کتبہ انہ بوزمشرہ آئی تہی حیرتہ  
 راگھسن تہ دلپوشترس مگر طانی (۵)

क्याह कर वर्णन चोन स्वरूप ही मांज  
 युस रूप चोन आसुबुन न सोरानी ।  
 क्याह कर वर्णन चोन बल तु सामरथ,  
 युस रागस्यन छु नाश करानी ॥



कति अनु बोज मज चान्य बड्य चरित्र,  
राक्षस तु दीव आश्वरस गह्वानी ॥५॥



हेतु समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैः  
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरपि पारा ।  
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतम्,  
व्याकृताहि परमाप्रकृतिस्त्वसाध्या ॥६॥

सारी जगत् हीतो बस न ही मोज,  
त्रिगुणात्मक जगत् बस न आसुन ।  
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरपि पारा ।  
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतम्,  
व्याकृताहि परमाप्रकृतिस्त्वसाध्या ॥६॥

सारी जगत् हीतो बस न ही मोज,  
त्रिगुणात्मक जगत् बस न आसुन ।



नारायणस शिवस कुजानुन यिवान,  
 माता चोन स्वरूप चुस अपार आसवुन।  
 चानि अंशि निशि चुस जगत कुबोपधोमुत,  
 चोनुय आसर तथ ह् आसवुन ॥  
 आद्य प्रकृती न करव ही माता न्यरविकार  
 थदि खोतु थोद चोन स्वरूप आसवुन ॥

—०१३—❧—०१०—

॥६॥

यस्या समस्त सुरता सममुदीरणेन  
 तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवी  
 स्वाहासिवै पितृं गणायि तृप्तिहेतुर  
 उच्चार्यसे त्वं अतेव जनैः स्वधा च ॥७॥

یہی سندی ساری منت پرینہ سیتی  
 یگیا دکن تر فستی چے واسات  
 سواہا شبد کنی ہی دیوی پارس  
 دیون تر فستی ہر شبد کارن بیان  
 سو دیہ شبد کنی ہی دیوی سارینے  
 پینتر لوکن تر فستی چے سیدان

यैम्यसुन्द्य सारी मन्त्र परन्तु सूत्र्य,  
 यैहादिकन तृप्ती छि वातान ।  
 स्नाहा शब्दु किन्त्य ही दीवी नुय,  
 दीवन तृप्ती हुन्द कारण बनान ।  
 स्वधुः शब्दु किन्त्य ही दीवी सारिवुय,  
 प्यत्र लूकन तृप्ती ह्य सपदान ॥१॥



वा मुक्ति हेतुर अविचिन्त्य महावृत्तत्वं,  
 अम्यस्यस्ये स्वनियतेन्द्रिय तत्त्व सारै,  
 मोहार्थिभिर्मणि भिरस्त ह्यमस्त दोशैः  
 विद्यासि सा भगवती परमाहिदेवी ॥  
 (८)

ترے چھکے موکیتی سید کارن مانج  
 ترے تیرے تیرے سارے سوس نہ سوری  
 تیرے تیرے تیرے آسن بیله ور تیرے  
 تیرے تیرے تیرے سنا چھ سیدانی  
 تیرے تیرے تیرے تیرے تیرے تیرے  
 تیرے تیرے تیرے تیرے تیرے تیرے  
 تیرے تیرے تیرے تیرے تیرے تیرے  
 (۸)

चय वख मोरुती हुन्द कारण माज,  
 चय वडि तत्व सार सौख नं स्वरनी ।  
 ये देयि रीटि आसन बेलि वृत्त सौख्य,  
 तेलि वापासना के सपदांनी ।  
 मूख यक्षवन्धु मुनीश्वर विन दुषि रंख,  
 वख निमन च विद्या रूप भगवती ॥४॥



शब्दात्मिका सु विमल अख यजुषाम निधान-  
 मुद्राथ रम्य पद पाठवतां च साम्नाम् ।  
 देवेत्रयी भगवती भवभावनाय,  
 वार्ता च सर्व जगतां परमार्तिहन्त्री ॥६॥

شید رویہ ریکہ، یحیو، سامہ ویدک خزانہ  
 ترے ید، ترے پاٹھ، ترے پرتو روپ  
 ستمسار پالنہ بانیخہ ہی دلوی !  
 ترے آسہ و فی حیکہ ترنوں وید روپ  
 تر گشت آرتہ گالینہ بانیخہ، ۴ ۴ ۴ ۴  
 ترے حیکہ آسہ و فی وارتا روپ

शब्द, रूप, स्वर, यजु, साम, वीदुक्त खजानु,  
 त्रुय पद, त्रुय पाठ, त्रुय प्रभव रूप ।  
 सम्सार, पालनायि बापथ ही दीवी,  
 त्रुय आसुवन्य कृख त्रनवय वीदु रूप ।  
 जगतुक औरचर गालनु बापथ ;  
 त्रुय कृख आसुवन्य वारता रूप ॥



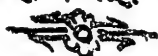
मेघासिदेवि विदताखिलशास्त्रसारा  
 दुर्गासि दुर्गं भवसागर नौरडङ्गाः ।  
 श्रीः कैटभारि हृदयैक कृताश्रि वासा,  
 गौरी त्वमेव शशि मौलिकृत प्रतिष्ठाः ॥  
 (२०)

ہی دلیوی یو شاسترن مہندسار زون  
 چھکھ آتمن بھو روپا تر آسانی  
 دُرگا روپہ کنی مٹکھس تر نی  
 ستسار ساگرس تر ناو بنانی  
 لکھمی روپہ کنی نارائیتھس چھکھ  
 ہر پیتھس مہندسارے واس کرانی



گوری رویہ کنی ژند ریمہ لیش گلش  
تس شونا تھس لیشہ ژ روزانی - (۱۰)

ہی دیوی ییمہ شاस्त्रन हुन्द सार ज्ञान,  
बख तिमन बोद्धि रूप च आसानी ।  
दुर्गा रूप किन्त्य मुशकिलस तरनी,  
सन्सार सागरस च नाव बनानी ।  
लक्ष्मी रूप किन्त्य नारायणस कुरव,  
हृदयस मज्ज ज्ञेय वास करानी ।  
गौरी रूप किन्त्य चन्द्रस यस कलस,  
तस शिवनाथस निश च रोजानी ॥१०॥



ईषतः शारागमलं परिपूर्णं चन्द्र,  
बिम्बानुकारिकन्कोत्तम कान्ति कान्तम् ।  
अतियुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि,  
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥११॥

پریپورن ژند ریمہ نیرمل ژند ریمہ بیهوش  
چون موکھ سونکی پاستھی اوست چمکہ وین

آسہ وُن سوئدر ووتہم موکھ جون

شوباہیہ سوُس آشتر کر وون ۴۴

عس ڈنی شہ موکھ وُجھتہ ہشتا سوہ

کیس اوس راکھیس کر وڈ کر وون۔ (۱۱)

परिनिर्वाणं सुखं न भवति ।  
 नैन मोख सोनका प ॥ अस चमकुवोन,  
 असुवुन सोन्दर वीत्तम मोख चीन,  
 शूबायि सोस आश्वर करवोन ।  
 ह्यस डेल्य सु मोख बुद्धि महिषासुरस्य,  
 युस ओस राक्षस क्रूद करवोन ॥ ११ ॥

दृष्टापि देवि कुपितं भकुटीकरालमु-  
 द्युच्छशशाङ्कं सदृशं च विद्यन् सद्यः ।  
 प्राणान्मुमीच महिषस्तदतीवचित्रं,  
 कैजीव्यतेहि कुपितान्तक दंशनेन ॥ १२ ॥

وُجھتہ تر دیوی کر وڈ سیتی بڑی تھ

ووتہم سوُس آشتر کر وون ۴۴

پڑان تڑاوی تمی وقتہ ہیشا سورنے  
 کاہنہ آشر ز چھینہ توتہ شیدان ۶  
 کس روز زئدہ ماج یقہ ز گتس منتر  
 بیلہ وچھہ سہ ہا کال کرودی بنان (۱۲)

बुद्धिधुय च दीवी क्रूदु स्रूत्य बरिधुय,  
 बौदयि सौस चन्द्रमु जन च प्रजलान।  
 प्राण त्राग्य तमी वक्तु महिषासुरनुय,  
 कांह आश्रर कुनु तोति सपदान।  
 कुस रोजि जिन्दु माज यथ जगतस मंज,  
 यैलि बुद्धि सु महाकाल क्रूदी बनान ॥ १२

—ॐ—

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय ,  
 सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलाणि ।  
 विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-  
 न्नीतं बल सुविपलं महिषासुरस्य ॥ १३

ہی دیوی وہی اسیہ پیٹ پرستی وں ۶  
 چیکہ تڑ ماج آسہ ہن سونے کلہان

یہ تڑپل سپیان کرؤ دی ہی مآج !  
 تیلہ چٹکھ نیکدم کلن ناش کران۔  
 مہیشا سورن فوج ناشس واتنوو کھن  
 نیس فوج تس اوس سٹھا بلوان۔

ہی دیوی بونھ اسی پٹ پرست بن،  
 کھن چو مآج آس بونھ سونھ کلتیاں،  
 تیلہ کھن سہدان کھدی ہی مآج،  
 تیلہ کھن یکدم کھلن ناش کران۔  
 مہیشا سورن فوج ناشس واتنوو کھن،  
 یس فوج تس اوس سٹھا بلوان ॥ (13)



ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,  
 तेषां यशांसि न च सौदति धर्मवर्गः॥  
 धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदाराः,  
 तेषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्नाः॥१४॥

شہرین مہیشا سورن فوج ناشس واتنوو کھن  
 دینہ سمپدا اہ سوس تم چہ آسان



تہنہ لیش بڑان دھرم نہ کم گڑھان  
 تہنہ دینہ واد ساری دوان ۶۶  
 وینہ سوس تہنہ تہنہ سنان، نوکر  
 زگتس مشد ماج تم باکیہ وان ۶۶  
 تہنہ ہمیشہ چکھ وودہ سوس روزان  
 یمن پیٹھ چکھ تہ ماج پوسن سیدان (۱۱۷)

शहरन मज्ज मांज तमिसुय छि मानान,  
 धनु सम्पदावि सोस तिम छि आखान।  
 तिमनुय यश बडान धर्म नु कम गढ़ान,  
 तिमनुय धन्यवाद सारी दिवान।  
 विनयि सोस तिमनुय त्रय, सन्तान, नोकर,  
 जगतस मज्ज मांज तिम भाग्यवान।  
 तिमनुय हमेशि करव बोद्धि सोस रेजान।  
 बिमन प्यठ करव नु मांज प्रसन्न सपदान।  
 धर्म्यारिा देवि तिम सदैव कर्मिन् (१४)  
 आया हुतः प्रातदिनं सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयांति दत्ततोभयौ प्रयादात,  
लोक त्रयोपि फलदाननु देवि तेन ॥१५॥

ही दीवी विम प्रथ दोह छी करान,  
धर्मचि कामि बडि आदरु सान।  
स्वर्गस खसान तिम चानि अनुग्रहसूय,  
जगतस मन्ज छी तिम भाग्यवान।  
निश्चय करिथ माज त्रन बवन्नन मज,  
त्रय छर बवानी यथ फल दिवान ॥  
(१५)

दुर्गे समृता हरसि भीतिमऽशेष जन्तो,  
स्वस्थैः स्मृता मतिमऽतीव शुभाददास्या

दारिद्र्य दुःख भयहारिणिकाः त्वदन्यः  
सर्वोपकार करणाय सदाद्रिचित्ता । २६॥

ہی دلیوی چاہے سمہرنہ زلوٹس  
ساری بے چھپس ناش سپدان  
وار پامٹھی بیلیہ سہ کر جوئے سمہرن  
تیلہ چھیکہ کلپا پنج بود تہ تس دیوان  
داریدر باو بے بیہ کھٹو دو کھتہ غم  
کس سنا تہیے روس مآج دور تمن کران  
وہیکار چھیکہ کران ہی مآج ساریہ  
ہر ہمیشہ کہل تہ تہ سوس تہ روزان (۶)

ही दीवी चानि समुरनि जीवस ,  
सारी भय द्विस नाश सपदान ।  
वारु पाठ्य वैलि सुकरि चोनय सुमरन ,  
तैलि हरख कल्याणच बौद च तस दिवान ।  
दारिद्र्य बाबु भय बैयि कठिन्य दोख तु गम ,  
कुस सना त्रै रोस माज दूर तिमेन करान ।

बोणुकार छख करान ही मांज सारिनुय,  
हर हमेशि कोमल दयध सोस चुरोजान॥

(16)

एभिर्हतैजगदुपैति सुखं तथैते,  
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।  
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु,  
मन्येति नूनमांहतान्विनिर्हसि देवी ॥ १७ ॥

تیر نام نر کس منتر روز نہ پانچ  
 ہم زبوں سچا پانچ مَاج چھی کران  
 تہندی مارنہ ستر ہی مَاج بوانی  
 سورے تر بون سوکھ چھ پراوان  
 ہم چھک لڑایہ منتر ماران تر ہی مَاج  
 ہم چھک سورس تر وائناوان  
 ہی مانتہ یوہے نیچے کرختہ چھک

ہی دلیوی شتران پڑ گالان - (۱۷)

चेर ताम नरकस मज्ज रोजनु बापथ,  
यिम जीव स्थठा पाप माज छी करान।



तिहुन्दी मारन सत्य ही मांज बवांनी,  
 सोरुय त्रिबवन सोख हु प्रावान ।  
 यिम छख लडायि मंज मारन च्चु ही मांज,  
 तिम छिहख स्वर्गस च्चु वातनावान ।  
 यी मानिथ युह निश्चय करिथ कर,   
 ही दीवी शत्रन च्चु गालान ॥



दृष्ट्वैव किं न भवतीं प्रकरोति भस्म,  
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहीणोषि शस्त्रम् ।  
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र पूता,  
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेष्व साध्वी ॥ १८ ॥

چاند در شتی سستی کیا ز سید نه لبسم  
سارے راکھیں تہ بیہ و شمن  
مگر چمکے تہ تراوان شستہ ہی مانج  
میتھیم امہ سستی شود سیدان  
تہ شود عینہ و اتنیم تہ سوہ رگہ لوکس  
یوہے ہیکار چمکے تہمن پیٹھ کران  
(۱۸)۔

चानि दृष्टि सत्य क्याजि सपदिनु बसुम,  
 सारिनुय रासुसन तु ब्यायि दुश्मनन ।  
 मगर बख च त्रावान शस्त्रही मांज,  
 सुथ यिम अमि सत्य शोद सपदन ।  
 शोद, बनिध वातन यिम ति स्वर्गलूकस,  
 योहय ह्यतुकार बख तिमन प्यठ करान ॥  
 (18)

खड्ग प्रभानिकरविस्फुरणेस्तथौगैः ,  
 शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।  
 यत्रागता विलयमंशमदिन्दु खण्ड -  
 योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥

«१६»  
 کہڈا کہ دفتی سموہ، کھٹنہ حکمہ ہند سموہ  
 تر شول دفتی سموہ لیس ترے حکمان  
 پڑ لان چھے چون موکہ شیتھے ہی ماج  
 راہسن تھہ سپہ نظر چھنہ دران  
 تر ندر مہ ستہنری پوزن دفتی سموہ  
 آج! شیتھے چھے چون موکہ دوچہان - «۱۹»

खडग दिपती समूह, कठिनि चमकि हुन्द समूह,  
 त्रिशूल दिपती समूह, युस चैं चमकान ॥  
 प्रजलान हुय चीन मोख त्युधुय ही मांज,  
 राक्षसन तथ प्यठ नजर छन दरान ।  
 चन्द्रमु लुन्गी पूनदिपती सौंस ,  
 ही मांज त्युधुय कु चीन मोख बुक्कान ॥



(५६)

दुर्वृत वृत शमनं तव देवि शीलं ,  
 रूपं तथैतदविचिन्त्यम तुल्यमन्यैः ।  
 वीर्यं च हन्तृहतदेव पराक्रमाणां ,  
 वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्यम् ॥ २७ ॥

خراب چلن ہی آج حکم بناوان شایست  
 آسہ وُن یوہ ہے مجھے چوٹے سوباب  
 روپ چون آسہ وُن ہی آج نہ سوچا  
 چاہے روٹیک خد چہنہ کیہنہ لبان  
 دیون ناش گوشت یس سارکھ  
 حکم تمہن پور شاکرکھ بڈاوان ۲ ۲

شہرین سپٹ چمکے ہی مآج بوائے  
 زیارہ سوس تمن دیا پڑکٹ چمک کران  
 (۲۰)

खराब चलन ही मांज कुरख बनावान शांत,  
 आसवुन योहय कुय चीनुय स्वभाव ।  
 रूप चीन आसवुन ही मांज न हवरवुन  
 चानि रूपुक हद छिनु केँह लवान ॥  
 दीवन नाशगोनुत युस सामरथ,  
 कुरख तिमन पीर पारथ बडावान ।  
 शंथरन प्यठ कुरख ही मांज बवांनी,  
 दयायि सोस तिमन दया प्रकट कुरख



करान ॥ २० ॥

कैनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,  
 रूप च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र ।  
 चित्तं कृपा समर निष्ठुरता च दृष्ट्वा,  
 त्यययेव देवि वरदे भवेन त्रियोऽपि ॥

کس کبر بربائی مآج چاہے ویرتایہ  
 چون روپ شہرین بے دوائے



گنہ جہا یہ چون روپ منوہر آسمہ دُن ۛ ۛ ۛ  
 دیا یہ سوس ہر دے گنہ جہا یہ چھکھ ٹھوآنی ۛ  
 لڑا یہ منہ روپ چون کھٹور مہج آسمہ دُن  
 ترن لوکن چھکھ ور دوا آنی ۛ ۛ ۛ (۲۱)

کوس کریر چرا باری ماںج چانی ویرتا چ،  
 چوین رُپ ۛ ۛ ۛ رن نای دیوانی ۛ

کونی جانی چوین رُپ منوہر آسمہ دُن،  
 دیا یہ سوس ہر دے کونی جانی کھٹور ۛ ۛ ۛ  
 لڑا یہ منہ رُپ چوین کٹور ماںج آسمہ دُن  
 ترن لوکن کھٹور ور دیوانی ॥ ۲۱ ॥



त्रैलोक्यमेतदखितं रिपुनाशनेन ,  
 ज्ञातं त्वया समरमूर्द्धनितेऽपि हत्वा ।  
 नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपायतम,  
 ऽस्माकमुन्मद सुरारि भवं नमस्ते ॥ २२ ॥

سارنے دشمن لڑا یہ منہ روپ منوہر آسمہ دُن  
 بچا ویشن شے ہی مہج تر لوکی ۛ

गारी त्हाकह राकस लुआये म्भन्नी माज  
 क्हायी त्हाकह ठरै सो गस ही बोआनी  
 नाश कोरुथ दुश्मन असै लै दुर्कुरे  
 असी ठरै माता गली कुरे पुर नाम करानी - (१५)

सारिनुय दुश्मनन लडावि मज्ज नश करिथ,  
 बचावधन चै ही माज त्रैलुकी ।  
 मायिथक राहस्य लडावि मज्ज ही माज,  
 सारिथक चै स्वरगस ही बवानी ।  
 नाश कुरुथ दुश्मनन असि बय दूर कोरुथ॥  
 अस्य चै माता गुल्य गन्डिथ प्रनाम करानी॥  
 (२२)

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन  
 घण्टास्वने नः पहि, चापज्यानिः <sup>चापके</sup> स्वनेन च॥  
 (२३)

नै त्रिशूल पुरै रज्जि असे ही माज  
 क्हाये रज्जि असे ही माता  
 गन्धारी शिब रज्जि असे ही माज  
 कमाने शिब रज्जि असे ही माता - (१५)

पनुने त्रिशूल सत्य रक्षतु असि ही मांज,  
 खड्ग सत्य रक्षतु असि ही माता ॥  
 गन्टायि शब्द सत्य रक्षतु असि ही मांज,  
 कमानि शब्द सत्य रक्षतु असि माता ॥  
 —————  
 (२३)

प्राच्यां रक्ष प्रतिय्यां च, चण्डिके रक्ष दक्षिणे।  
 भ्रामणेनात्म शूलस्य, उतरस्यां तथे श्वरी ॥  
 (२४)

पुत्री कन्या रक्षिते असे चिमि कन्या रक्षिते असे  
 ही चण्डी रक्षिते असे दक्षिणे कन्या  
 भ्रामणा नाव त्रिशूल पनुन अस्या चोपाय  
 ही माता रक्षिते असे उतरा कन्या - (२५)

पूर्य किन्त्य रक्षतु असि पक्ष्म किन्त्य -  
 रक्षतु असि।  
 ही चण्डी रक्ष असि दक्षिण किन्त्य।  
 फिरनाव त्रिशूल पनुन अस्या चोपाय  
 ही मांज,  
 ही माता रक्ष अयि वीतरु किन्त्य ॥२५॥

सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति  
यानि चात्यन घौराणि, तै रक्षास्मांतथाभुवैम् ॥

सुन्दर रूप जानी मातायिम ठे आसुवुनी ॥ २५ ॥  
त्रैलोक्य की मंज फेरानी ॥  
गौर रूप, कठिन रूप यिम चान्य आस-  
तिमव सत्य असि त पृथ्वी रक्ष होपासी ॥ २५ ॥  
(१८) तमोसुती आसुते प्रकृति रज्जु थोपासी

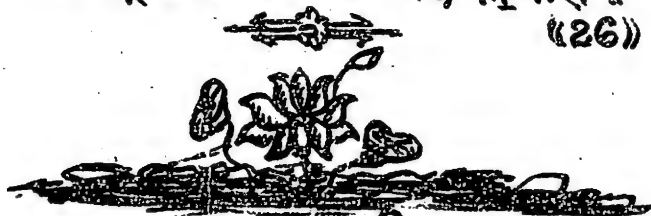
सुन्दर रूप चान्य साता यिम तै आसुवुन्य,  
त्रैलोक्य की मंज फेरानी ।  
गूर रूप, कठिन रूप यिम चान्य आस-  
तिमव सत्य असि त पृथ्वी रक्ष होपासी ॥ २५ ॥

खड्ग शूल गदादीनि, यानि चास्त्राणि  
तेऽम्बिके,  
करपल्लव संगीनि, तैरस्मान रक्ष सर्वतः ॥  
॥ २६ ॥

कहूँ त्रिशूल शिवादिक यिम ठे आसुवुनी ॥  
अस्त्र यिम ठे माँज चक्रे वाराणी ॥  
सिंघोश आसुन मंज रज्जु चक्रे थोपासी ॥  
तमोसुती आसुते रज्जु थोपासी ॥



खड्ग त्रिशूल येत्याद्यक यिम च आसुबुन्ध,  
 अस्तुर यिम च मांज छख दारांनी ।  
 पम्पोशि अथन मन्त्र रटिथ छखचुही मांज,  
 तिमव सत्य असि माता रक्क चोपारी ॥  
 (26)



### क्षमास्तुति

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जानेस्तुतिमहो,  
 न चाह्वानं ध्यानं तदापि च न जानेस्तुतिकथा॥  
 न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं,  
 परं जाने माता तदनुसरीं कलेश हरनम् ॥१॥

منتر ته پينتر چيسنه کيشنه زانان  
 زانان چيس نه مآج چون مہا  
 آواہن ته ديان چيس نه کيشنه ته زانان  
 زانان چيس نه مآج حانی تو  
 حد رایہ چاہ مآج چيسنه کيشنه زانان  
 زانان چيسنه مآج چون واپين  
 بڈ ہش یو کھتی مآج چيسنه زانان

ترئیے پتہ پتہ پیکرہ دھکھن ناش سپدان (۱)

मन्त्र तु यन्त्र कुस नु केंह जानान,  
 जानान कुसनु माता चीन महिमा ।  
 आवाहन तु दान कुसनु केंह ति जानान,  
 जानान कुसनु माता चान्य तोता ।  
 मुदरायि चीनि मांज कुसनु केंह ति जानान,  
 जानान कुसनु माता चीन विलीपन,  
 बंड हिश योरुती मांज कुसनु जानान,  
 त्रैय पतु पतु पकिथ दोखन नाश सपद

(११)

विधेरऽज्ञानेन द्रव्येन विरहीनालस्तथा  
 विधी अशक्यत्वात्तव चर्णयो या चतुर्थभूत ।  
 तत्तेतद क्षिन्तव्यं जननि सकलो धारिणि शिवे  
 कुपुत्रो जायेत कुचिदर्शप कुमाता न भवत ।

(१२)

چھس ویدی نہ زانہ وُن دہ روُس تہ آلتری  
 تر نہ سپوا چالی چھس نہ کیتہ کران  
 فیروز آلتری سوُس چھس نہ کر تم کھپا  
 ہی ماما سار نے چھکھ دودار کران

کو پتر چیر ز گتس مندر یاد سپیدان  
 ماما کو ماما زائنه تہ چہ بنان. (۱۷)

دوس وی دی ن جانو، دن ریس ت، آلوچھ،  
 چرن، سبنا چانن دوس ن، کھ کران ।  
 ییہ آلوچھ سوس دوس بکرت مہما !  
 ہی ما تا ! سا بنی دھ بیدار کران ॥  
 کو پتر دھ جگاتس ننج پا د س پدان ،  
 ماما کو ماما جاہ تی دھ بنان ॥  
 ————— ( 2 )

प्रथिव्या पुत्रास्ते, जननि बहवैसन्ती सरलाः,  
 परम तेषां मध्य-विलत रलोहं तव स्वतः ।  
 मध्य योयं त्यागः समुचितं इदं नो तव शिवे,  
 कुपुत्रो जायीते, कुचिदपि कुमाता न भवते ॥३॥

ماما پتر چیری سہ سہما ترے شنتان  
 تمہن مندر بے پوت چھسے نابہ کار  
 چھکھ مے تراوان ماما چھے نہ ترے یہ جائنہ  
 ہی پار ڈتی کہ نہ چھکھ و پتر اران  
 کو پتر چیر ز گتس مندر یاد سپیدان

ماتا کو ماما زائنه تہ مجھنے بیان۔

माता पृथ्वी प्यठ स्वठा चै सन्तान,  
तिमन मज्ज बय द्योत दुसय नाबुकार,  
दुख मै त्रावान माता दुय नु चै विजायिज,  
ही पारवती कोनु दुख व्यचारान ।  
को पुत्र छि जगतस मज्ज पादु सपदान,  
माता को माता जाह ति छनु बनान ॥३॥

—३—

जगतमातर्माताः तव चरण सेवा न रचिता,  
न वादतं देवे द्रव्यनपि भोगस्तव मया ।  
तथापि एवं स्नेहं, मयि निरुपममयत प्रकरीषि,  
कुपुत्रो जायते कुचिदपि कुमाता न भवते ॥  
॥४॥

ہی زگت ماما چانی ژرنہ سپوا  
نہ کرم پتھ کن نہ وئی کین کران  
چانہ بایتھ خہرچ کتہ کورم نہ از تانی  
وئی کین تہ دہ نہ ژرنہ پتھ چھپتہ خہرچان  
تو تہ چکھ ژسوما، لیس چھ میون حدروس



موجودہ تہ لوسہ حم سے لگے رحمان  
کو پتر چہ زکاتیں عشر یا و ستیان  
ماتا کرے ماما زائے تہ چھنے بنان۔ (۱)

ही जगत माता चाम्य जरगु सीवा,  
न करुम पथकुन न नुन्यकथन करान।  
चानि बापथ खंच कुनि कोरुम नु अजताम,  
बुन्यकथनति दनु चै पथ दुसन खंचान।  
तोति वख च्चु सो माता, यस दुम्योन हदुरोस  
मोहबध तु योसु, कुम में गरि गरि रद्धान।  
को पुत्रर हि जगतस मज पदु सपदान,  
माता कोमाता जांह ति व्खु बनान॥  
—३६— (४)

परित्यक्ता देवान विविदविद सेवाकुलतया,  
मया पञ्चाशीतेऽर्थिकमपनीते तु वयसि।  
इदानींचिदमाता तव यदि कृपानापि भक्ता  
निरालंबो लंबो धर जननि कं यामि शर्णम्॥  
(५)

سارے دیوان ہنر سے پوائے تراؤ  
سہیت چھیں تہا ج سے پٹا ویا کل

۸۵۵۔ دُری گزراؤں سے دُھیر سنہری  
 سیدمت چھپس نہ اچھ سٹھا نیریاں  
 دُنی یو دُنی سے نہ پتہ نہ چائی کرپائی مانج  
 تھیرے رُوس چھپے نہ مانج کس گنہگار (۸۵۵)

سارینوہ دیون ہوج سوا میں براہ،  
 سہودسوت کوس بے مانج سوا بھاکول۔  
 85 وری گجراوی میں دھمبیر ہونہ،  
 سہودسوت کوس بے مانج سوا بھاکول۔  
 وونہ یو دہوہ میں بنی نہ چانہ کپا ہی  
 تھپ ریس کوس بے مانج کس گنہگار <sup>سوج</sup> <sub>شیر</sub>



« 5 »

چیتا بھمالپو دھرم شانت کپٹ دُری  
 جتا دھاری کٹھ بھجگپتی ہر پشوپتی۔  
 کپالے ہوتے پھ - بھجتی جگت دھرم کپدویں،  
 بھانے تھت پانے گھڑن پریپاکھ کلم

« 6 »

چیتا بھمالپو دھرم شانت کپٹ دُری

ننگے ہتھ کلمہ مالہ نالی تراوان -  
 واسک ہتھ لیس لیس چٹاچ داران - موت لیس سالی چھ مانان

سے شوقِ تکیس ساعی باوس  
ہی ماما چاہانہ آکھوا سپہ مجھے وائان - «6»

चितتا बस्मा मल्लिथ यस जहर कुय खोराक,  
नंगय तु कलु मालु नाल्य त्रावान ।  
वासुक हट्टि यस युस जटा हुदारान,  
मोत यस सोमी पनुन हु मानान ।  
सुय शिष जगतुकिस सोमी बावस,  
ही माता चानि अथवासु हु वातान ॥ 6 ॥

न मोक्षस्याकान्क्षा न च विभवः वाश्चापि च न  
न विज्ञानानऽपीक्षा, शशिमुख सुखेचापि न पुनः  
अतस्तम समयाचे, जनि जननं यातु मुमर्षः  
मृडानी रुद्राणी, शिवशिव भवानीति जपतः ॥ ७ ॥

چھینہ ماچ موکھ کاتھیا آسون = بیٹہ چھینہ و سبوتہ ماچ کاتھیرھا  
کشیانہ اپیاکھا چھینہ ماچ کاتھیرھا = سوکھ کاتھیرھا بیٹہ چھینہ ماچ کاتھیرھا  
چھس بیٹہ ماما ترے متگان زندگی گزارا = شوشو لو آئی زب کرانی  
कुमनु मांज मूखिच कांक्षा आसुवुन्य,  
बैयि कुमनु व्यववुच ति मांज कांह यद्धा ।  
ज्ञानुच अपीक्षा कुमनु मांज मे आसुवुन्य,  
सोख वद्धाति कुसनु माता कांक्षान ।  
कुस व मांता चैय मंगान जिदंगी गुजारहा,  
शिवशिव बवानी जफ करानी ॥ ७ ॥







श्री श्री  
होस्त  
लाल कुंज

अमीराकदल, श्रीनगर।

शालीमार आर्ट प्रेस, रेडक्रास रोड,  
श्रीनगर।  
टेलीफोन नं० : 74972.